‘किन्नर समाज की लघुकथाएँ में किन्नर विमर्श’

(डॉ. रामकुमार घोटड़ एवं डॉ. लता अग्रवाल द्वारा (संपादित)

HIN-675 शोध प्रबंध

श्रेयांक: 16

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

शोधार्थी

रेशमा कासिम नदाफ़

अनुक्रमांक: 22P0140027

PR Number: 201809240

मार्गदर्शक

आदित्य दयानंद सिनाय भांगी

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

परीक्षक: **अप्रैल 2024.** **Seal of the School**

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Dissertation report entitled, “Kinnar Samaj ki Laghukathayein mein Kinnar Vimarsh Edited by Dr. Ramkumar Ghotad and Dr. Lata Agrawal" is based on the results of investigations carried out by me in the Discipline of Hindi at Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University under the Supervision of Mr. Aditya Dayanand Sinai Bhangui and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the dissertation. I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

रेशमा कासिम नदाफ़

22P0140027

Date: 19th April 2024
Place: Goa University

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation report "Kinnar Samaj ki Laghukathayein mein Kinnar Vimarsh Edited by Dr. Ramkumar Ghotad and Dr. Lata Agrawal" is a bonafide work carried out by Ms. Reshma Kasim Nadaf under my supervision in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Master of Arts in the Discipline of Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

Aditya Dayanand Sinai Bhangui

Professor Anuradha Wagle
Dean, SGSLL, Goa University

School Stamp

Date: 19th April 2024
Place: Goa University

अनुक्रम

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	Acknowledgements	II & III
	अनुक्रम	IV
	अध्याय विभाजन, कृतज्ञता & भूमिका	V & VII
1	किन्नर समाज: एक परिचय 1.1 किन्नर समाज:एक परिचय 1.2 किन्नर: अर्थ एवं परिभाषाएँ 1.3 किन्नर: भारतीय परिदृश्य	Page No: 01 to Page No: 32
2	किन्नर समाज की समस्याएँ 2.1 पारिवारिक समस्याएँ 2.2 आर्थिक समस्याएँ 2.3 सामाजिक समस्याएँ 2.4 वैवाहिक समस्याएँ	Page No: 33 to Page No: 104
3	किन्नर समाज: सांस्कृतिक अध्ययन: किन्नर विमर्श 3.1 स्व अस्तित्व की पहचान 3.2 विद्रोही चेतना 3.3 अधिकारों के प्रति सामाजिक विरोध	Page No: 105 to Page No: 142
4	भाषा-शैली 4.1 फ़ारसी शब्द 4.2 अरबी शब्द 4.3 अंग्रेज़ी शब्द 4.4 रावड़ी भाषा 4.5 भोजपुरी भाषा उपसंहार	Page No: 143 to Page No: 161
5	संदर्भ	Page No: 162 to Page No: 168

अध्याय विभाजन

प्रथम अध्याय- किन्नर समाज: एक परिचय

इसमें किन्नर समाज का परिचय, अर्थ एवं परिभाषाएँ का विस्तार से अध्ययन किया गया है। इसमें किन्नर के संदर्भ में भारतीय परिदृश्य का समावेश किया गया है।

द्वितीय अध्याय- किन्नर समाज की समस्याएँ

इसमें किन्नर समाज की समस्याएँ जैसे की पारिवारिक समस्याएँ, आर्थिक समस्याएँ, सामाजिक समस्याएँ और वैवाहिक समस्याएँ आदि समस्याओं को लघुकथाएँ के माध्यम से रेखांकित किया है।

तृतीय अध्याय- किन्नर समाज: सांस्कृतिक अध्ययन: किन्नर विमर्श

इसमें किन्नर समाज का सांस्कृतिक अध्ययन में किन्नर विमर्श स्पष्ट करना इस अध्याय का उद्देश्य रहा है। इसमें कुमार गौरव अजीतेंदु नेकी सबका अधिकार', कल्पना मिश्रा 'कर्जदार', गोविन्द शर्मा 'इंसान' आदि लघुकथाएँ के माध्यम से किन्नर विमर्श विस्तृत रूप से चर्चा की है।

चतुर्थ अध्याय- भाषा शैली

इसमें उपयुक्त लघुकथाएँ की भाषा-शैली का उल्लेख किया है।

कृतज्ञता

किन्नर समाज की लघुकथाएँ में किन्नर विमर्श (डॉ.रामकुमार घोटड़ एवं डॉ. लता अग्रवाल द्वारा संपादित) इस विषय पर संपन्न यह लघु शोध प्रबंध पूरा करना संभव नहीं था यदि मुझे किसी का उत्तम मार्गदर्शन नहीं मिला होता। यह लघु शोध पूरा करने में शोध निर्देशक सहायक प्राध्यापक आदित्य दयानंद सिनाय भांगी जी के सहयोग के लिए मैं उनकी आभारी हूँ। उन्होंने विषय चयन से लेकर टंकण करने तक मेरी सहायता की, मुझे जिन किताबों की आवश्यकता थी वह किताबें उपलब्ध करवा दी और समय-समय पर मार्गदर्शन किया।

शणै गोंयबाब भाषा एवं साहित्य महाशाला की उपअधिष्ठाता प्रो. वृषाली मांद्रेकर जी ने मेरा मार्गदर्शन किया। हिंदी अध्ययन शाखा के निदेशक डॉ. बिपिन तिवारीजी ने भी मेरा मार्गदर्शन किया। हिंदी विभाग के अन्य प्राध्यापक दीपक वरक, ममता वेर्लेकर, मनीषा गावडे तथा श्वेता गोवेकर जी ने भी मेरा पूरा सहयोग किया। उन सभी प्रति मैं मेरी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। मेरे परिवार वालों ने भी क़दम-क़दम पर मेरा पथ-प्रदर्शन किया, उनको सिर्फ़ धन्यवाद कहना काफ़ी नहीं होगा। मेरे शोध समूह सदस्य रचिता कांबळी, रेशमा सावंत, रेशमा नदाफ़, सुष्मिता वेळीप और मेरी सहेली शमा ख़ान ने भी मेरी बहुत मदद की।

इसके अतिरिक्त गोवा विश्वविद्यालय ग्रंथालय, कृष्णदास शामा ग्रंथालय, पणजी, डॉ. फ्रांसिस्को लुईस गोम्स ग्रंथालय, नावेली से मुझे पूरा सहयोग मिला, वहाँ के कर्मचारियों ने मेरे विषय से संबंधित किताबें ढूँढने में मेरी मदद की और मेरा काम आसान किया। मैं सदैव उनकी ऋणी रहूँगी। अपने प्रति की हुई श्रेष्ठ और उत्कृष्ट सहायता के लिए श्रद्धावान होकर मैं सभी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

भूमिका

प्रस्तुत शोध अध्ययन में किन्नर समुदाय की स्थिति आज विश्व चिंता का विषय है। यह शोध किन्नरों की स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव को समझाने में सहायक सिद्ध होगा। समाज में किन्नर समुदाय की स्थिति एवं भूमिका को गहनता से समझने में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करेगा प्रस्तुत शोध कार्य इस दिशा में एक लघु प्रयास है। किन्नर एक ऐसा शब्द है जिसमें स्त्री और पुरूष दोनों के ही गुण होते हैं जिसे उभय लिंग कहते है। इन लघुकथाओं को सदृढ़ एवं सशक्त बनाने के लिए उनमें रामायण, महाभारत की पौराणिक कथा का आश्रय लिया।

यह लघु शोध चार अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में किन्नर समाज इस विषय का संक्षिप्त में परिचय दिया गया है और जिसमें किन्नर शब्द के अर्थ और परिभाषाएँ का विस्तार से अध्ययन किया है। इसमें किन्नर के संदर्भ में भारतीय दृष्टिकोण का भी समावेश किया है तथा द्वितीय अध्याय में किन्नर समाज की समस्याओं को स्पष्ट किया है। जिसमें किन्नर समाज की लघुकथाएं में आए हुए पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक तथा वैवाहिक समयाओं का विस्तार से रेखांकित की है। तृतीय अध्याय में किन्नर समाज का सांस्कृतिक अध्ययन में किन्नर विमर्श स्पष्ट करना इस अध्याय का उद्देश्य रहा है।

इसमें डॉ० लता अग्रवाल एवं डॉ० रामकुमार घोटड़ की संपादित लघुकथाएँ का समावेश किया है जैसा की त्याग और मानवता', 'टीस', 'बधाइयों', 'बरगद आदि। चतुर्थ अध्याय में उपर्युक्त लघुकथाओं की भाषा-शैली का उल्लेख किया है। अंत में उपसंहार और संदर्भ सूची प्रस्तुत की गई है। समाज में किन्नर समुदाय का अध्ययन के माध्यम से इस समुदाय की समस्याओं को जानकर और उन्हें दूर करके ही किन्नर समुदाय का विकास सम्भव है। मेरा अध्ययन इस दिशा में एक मात्र कदम है

प्रथम अध्याय

किन्नर समाज: एक परिचय

प्रथम अध्याय: किन्नर समाज: एक परिचय

1.1 किन्नर समाज: एक परिचय

भारतीय समाज के लिए कहा जाता है कि यहाँ विविधता में भी एकता है। भाषा, संस्कृति, साहित्य, रीति –रिवाज, खानपान आदि में विविधताएँ देखने को मिलती हैं लेकिन इसके बावजूद देश एक सूत्र में बंधा हुआ है।

भारतीय समाज में प्रारंभ से ही पूँजीवाद जातिवाद, वर्णभेद आदि समस्याएँ हैं। एकीकृत समाज की परिकल्पना कभी पूर्ण नहीं हो सकी है। इसी कारण हमारे समाज में कभी जन्म, तो कभी वर्ण एवं जाति के आधार पर विभाजन होता है। जन्म के आधार पर हमने इसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र में बाँट दिया। इसी के आधार पर हमने इनका कर्म भी निर्धारित किया है।

इस सामाजिक व्यवस्था का सबसे बड़ा दुष्परिणाम यह हुआ कि कुछ जातियों एवं समुदायों को छोड़कर बाकी सभी को इतना हेय समझा गया कि उन्हें मनुष्य के रूप में मान्यता भी नहीं दी गई। वे सिर्फ़ जन्म से मनुष्य रहे। उनके साथ हमेशा पशु जैसा व्यवहार किया गया। इन समुदायों में जिन्हें हमेशा हाशिये पर रखकर अपमानित जीवन जीने को विवश किया गया, उनमें स्त्री, दलित, आदिवासी के साथ-साथ एक ऐसा समुदाय भी है जिसे कभी मनुष्य के रूप में स्वीकृति तक नहीं मिली और वह समुदाय किन्नर समुदाय है, जिन्हें हिजड़ा भी कहा जाता है।

बचपन में एक शब्द सुना था हिजड़ा, वह शब्द एक रहस्यमय जैसा लगता था, सोचती थी कि लोग ऐसे शब्द कहा से निर्माण करते हैं। हमने हमेशा उन्हें रेल्वे स्टेशन पर भीख मांगते देखा है या

फिर किसी घर में बेटा पैदा होता है वह लोग नाचते, अपनी झोली फैलाते यह सब कार्य करते देखा है। यह सब देखकर पता नही चल रहा था कि क्या हो रहा है। वे आम आदमी की तरह रहते हैं उन्हें उचित व्यवसाय न मिलने के कारण वे नाच – गाने को व्यवसाय बना लेते हैं। किन्नर में वैश्यावृत्ति की समस्या बढ़ती जा रही है। जब इन्हें कोई काम नहीं मिलता तो दुनिया का सबसे पुराना धंधा अपनाने को बाध्य हो जाते हैं ऐसे बहुत से लोग हैं जो अपनी सेक्स की हवस किन्नरों के साथ पुरा करने में अतिरिक्त आनंद उठाते हैं और कुछ किन्नर भी इस बात का लाभ उठाते हैं। आज 21वीं सदी में उन सभी पक्षों पर अब लिखने या बात करने की आवश्यकता महसूस हो रही है, जो हमेशा से ही उपेक्षित जीवन जीने को बाध्य रहे हैं। इन पक्षों में स्त्री, आदिवासी, प्रवासियों के साथ किन्नर समुदाय भी है। किन्नर समुदाय पर लिखने की आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि अन्य समुदायों को चाहे दबी आवाज में ही सही स्त्री, आदिवासी आदि को सामाजिक स्वीकृति प्रदान की गई है, परंतु किन्नर समुदाय के अस्तित्व को कभी भी स्वीकारा नहीं गया। अक्सर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हुए हम यातायात के साधनों का उपयोग करते हैं। यह साधन बस, रेल या स्वयं के निजी संसाधन भी हो सकते हैं। एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हुए हमने कई बार टोल टैक्स, ट्रैफिक सिग्नल एवं रेलवे स्टेशनों पर लोगों को डरा धमका कर पैसे वसूलते, पैसे ना देने पर सामान्य लोगों को जलील करते हुए किन्नर समुदाय के लोगों को देखा है। यह वही समुदाय है जिसे प्रारंभ से ही अपने मनुष्य होने के मूलभूत अधिकारों से वंचित रखा गया। परंपरागत रूप में अगर हम एक किन्नर को परिभाषित करें तो कह सकते हैं, कि पुरुष एवं स्त्री जननांगों की अनियमितता एवं अस्पष्टता को लेकर उत्पन्न हुई वह मानव आकृति जिसे हम न तो पूर्ण रूप से स्त्री कह सकते हैं, नहीं पूर्ण रूप से पुरुष, किन्नर कहलाते हैं।

1.2 किन्नर: अर्थ एवं परिभाषा

1.2.1 अर्थ

किन्नर शब्द मुख्यतः तृतीय लिंगीय प्रकृति के मनुष्य के लिए प्रयुक्त होता है। इसके अतिरिक्त सामान्य लोगों द्वारा इस समुदाय के लिए हिजड़ा शब्द का प्रयोग भी किया जाता है। हिजड़ा शब्द जहाँ इस समुदाय की नकारात्मक छवि को प्रस्तुत करता है वहीं किन्नर शब्द हिमाचल प्रदेश की एक जाति विशेष का शब्द है। अपने जाति सूचक शब्द का इस विशेष समुदाय के लिए प्रयोग किया जाना किन्नौर प्रदेश के लोग अपना अपमान समझते हैं तथा समय-समय पर इसका विरोध भी करते आए हैं।

तृतीय लिंगी प्रकृति के मनुष्यों के लिए प्रयुक्त शब्दों को अर्थ के आधार पर निम्न आधार पर विभक्त किया जा सकता हैं-

शब्दकोशगत अर्थ

वर्तमान समय में किसी भी शब्द का प्रामाणिक एवं सार्वभौमिक अर्थ देखने का सबसे उचित एवं सत्यापित माध्यम शब्दकोश है। विभिन्न विद्वानों ने अपने अथक प्रयासों से विश्वभर में प्रचलित विभिन्न भाषाओं के शब्दों को उनके अर्थ सहित उपलब्ध करवाने के लिए शब्दकोश का संकलन किया। इस समुदाय के लिए विभिन्न शब्दों का प्रयोग होता है जिनका मूल अर्थ भी शब्दकोशों में बताया गया है।

वृहद संस्कृत- हिंदी शब्दकोश में "किन्नर "शब्द का प्रयोग तीन अर्थों में हुआ है "बुरा या विकृत पुरुष, पुराणोक्त पुरुष जिसका सर घोड़े का हो तथा शेष शरीर मनुष्य का। कुबेर का विशेषण।"[1]

इस आधार पर किन्नर शब्द के तीन अर्थ परिलक्षित होते हैं जो व्यक्ति शारीरिक रूप से विकृत हो या बुरा हो। दूसरा पुराणों में उल्लिखित वह पुरुष किन्नर है, जिसके शरीर का ऊपरी आधा भाग घोड़े का हो तथा बाकी का आधा भाग मनुष्य का हो इस तरह किन्नर में मनुष्य व पशु दोनों की शारीरिक विशेषताएँ मौजूद हो। वहीं किन्नर शब्द का तृतीय अर्थ कुबेर नामक देवता के विशेषण के रूप में प्रयुक्त कर उसे देवता की एक श्रेणी बताया है।

संस्कृत-हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश में "किन्नर" शब्द का अर्थ देवताओं की एक प्रजाति के रूप में दिया है जो मुख से मनुष्य तथा अपने जननांगों से अश्व हो अर्थात उनके शरीर का ऊपरी भाग मनुष्य के शरीर से तथा शेष शरीर अश्व के शरीर से बना हो।

"कथाओं में प्रसिद्ध मनुष्य मुख वाले एवं अश्वांग देव जाति, कुबेर के गव; A fabulous being with the head of a man and a body of a horse, messenger of kubera. (एक आदमी और घोड़े के शरीर के सिर के साथ एक उच्च जाति, देवता कुबेर के संदेशवाहक)"[2]

उर्दू हिंदी शब्दकोश में किन्नर शब्द के लिए क्रमशः 2 शब्दों का प्रयोग उनके अर्थ सहित किया गया है।

ख्वाजःसरा शब्द तुर्की व फारसी भाषा का है जो पुल्लिंग के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। जिसका मुख्य अर्थ रानियों के महलों की रखवाली करने वाला पुरुष है। इसके अलावा ऐसा पुरुष जो स्त्रियोच्चित गुणों से युक्त हो तथा जिसमें पुरुष होने के बाद भी पुरुषत्व के गुण ना हो।

"तु. फा. पु. महल का रखवाला, जनाना, हीजड़ा, नरदाराः, शिखंडी"[3]

अंग्रेजी भाषा में भी किन्नर समुदाय के लिए अनेक शब्द प्रयुक्त हुए हैं। एडवांस लर्निंग डिक्शनरी में इसके लिए 'spado' (स्पैडो) शब्द दिया है जो संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होता है। इसमे 'spado' (स्पेडो) शब्द का अर्थ है- "civil Law. An important person one unable to procreate, (एक विशेष व्यक्तिः जो उत्पन्न करने में असमर्थ), नपुंसक व्यक्ति, प्रजननशक्तिहीन ।"[4]

इस अर्थ में किन्नर या हिजड़ा वह व्यक्ति है जो नपुंसक है अर्थात जिसमें अपने समान संतति उत्पन्न करने की क्षमता नहीं है तथा जो किसी शारीरिक कमी के कारण पुरुषत्व से हीन एवं नामर्द है।

अंग्रेजी भाषा में हिजड़ा शब्द हेतु एक अन्य शब्द Eunuch (यूनक) भी प्रयोग में लिया जाता है। यूनक शब्द को एडवांस लर्निंग डिक्शनरी में इस प्रकार परिभाषित किया है- "A Castrated man, (नपुंसक), (एक विशेष जाति का आदमी)"[5]

इस तरह Eunuch (यूनुक) वह विशेष व्यक्ति है जो नपुंसक है, शारीरिक रूप से अपने समान संतान उत्पन्न करने की क्षमता विहीन व्यक्ति।

The new International Webster's dictionary The sagus of the english language में Eunuch (यूनक) शब्द की व्याख्या निम्न शब्दों में की गई है-

(N.)- An Emasculated man, formerly employed as a harem attendant or an oriental palace official (एक उन्मादी व्यक्ति, पूर्व में एक हरम परिचर या एक प्राच्य महल अधिकारी के रूप में कार्यरत थे (The new international websters dictionary The saugus of the english language, . 376)

अर्थात वह व्यक्ति जो राजा महाराजाओं के हरम की रखवाली करते हैं साथ ही महलों में सुरक्षा कर्मचारी के रूप में कार्यरत रहते थे।

Oxford Advance Dictionary में भी क्रमशः से 4 शब्द बताएँ हैं जो हिजड़ा समुदाय के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं। पहला शब्द 'क्लीव' है, जिसका अर्थ कायर या स्वभाव से भीरु पुरुष के लिए लाया जाता है। जो शारीरिक संबंध स्थापित करने में असक्षम हो तथा सीमित मात्रा में हो। "adj. Impotent, cowardly, limit, (नपुंसक, कायर सीमित)"[6]

शब्दकोश में तथाकथित समुदाय के लिए दूसरा शब्द 'जनखा' दिया है। जिसका अर्थ बताया है- "Eunuch, a dancing boy, adj. Wamanish, impotent, हिजड़ा (किन्नर, एक नाचने वाला लड़का, स्त्रैण, नपुंसक)"[7]

ऐसा व्यक्ति या पुरुष जो किन्नर समाज में शामिल हो वह लड़का या पुरुष जो नृत्य कला में पारंगत हो और स्त्री स्वभाव का हो। जिसके हाव-भाव, बोल-चाल एवं व्यवहार स्त्रियों के समान हो उसे 'जनखा' कहा है।

तीसरा शब्द जो समुदाय विशेष के लिए दिया गया है, वह 'मंगलामुखी' है- "Female, harlot, prostitute, (महिला, रंडी, वेश्या या वेश्यावृत्ति करने वाली औरत)"[8]

इस अर्थ में वह औरत जो अपना शरीर बेचकर पैसे कमाती है या जो वेश्यावृत्ति करती है, वह मंगलामुखी है। पर शाब्दिक अर्थ में देखें तो मंगलामुखी वह स्त्री है जिसका मुख शुभ हो, जिसका मुख देखने से सभी शुभ कार्य संपन्न हो। वह मंगलामुखी कहलाती है।

शब्दकोश में समुदाय हेतु अन्य शब्द 'हिजड़ा' प्रयुक्त हुआ है 'जिसका प्रयुक्त अर्थ है-" Eunuch, impotent man, masculine, looking women, adj. Impotent, कर देना to emasculate, to castrate, नपुंसक (किन्नर, नपुंसक पुरुष, मर्दाना स्त्री, दिखने में स्त्री, विशेषण, नपुंसक, प्रभावहीन)।"[9]इस अर्थ में वह व्यक्ति जो नपुंसक है, जो मर्द होकर स्त्री है अर्थात जिसमें स्त्री एवं पुरुष दोनों के व्यक्तित्व के गुण मौजूद हैं। जो बाह्य रूप में वस्त्रों एवं पहनावे से स्त्री की तरह दिखे, जो प्रभाव एवं कांति हीन हो वह हिजड़ा है।

नालंदा विशाल शब्द सागर में भी तथाकथित समुदाय के लिए 2 शब्दों का प्रयोग हुआ है। इनमें पहला शब्द है "किंपुरुष" जिसका अर्थ दिया है-" किन्नर, दोगला, वर्णसंकर और नीच"[10] अर्थात वह मनुष्य जो नीच अथवा गिरा हुआ है, अपने दो अलग अलग वर्णों से मिलकर बना हो

वह किंपुरुष है। इसी शब्दकोश में इस समुदाय हेतु दूसरा शब्द "किन्नर" दिया है। जिसका अभिप्राय है- एक प्रकार के देवता जिसका मुख घोड़े के समान बताया गया है। गाने बजाने का पेशा करने वाली एक जाति।"[11]

"मानक शब्दकोश ज्ञानमंडल के वृहत हिंदी कोश में "किंपुरुष" शब्द का अर्थ "जम्बूद्वीप' का एक खंड दिया गया है। इस अभिप्राय में किंपुरुष जम्बूद्वीप के एक खंड विशेष पर निवास करने वाले पुरुष के रूप में वर्णित है।"[12] (मानक शब्दकोश 'ज्ञानमंडल' वृहत हिंदी कोश (सं) कालिका प्रसाद, राजबल्लभ सहाय और मुकुंदी लाल श्रीवास्तव

इनके अतिरिक्त पुराण संदर्भ कोश में आए 'जंबूद्वीप' एवं 'किंपुरुष' शब्दों के अर्थ भी संप्रदाय विशेष के संदर्भ में लिए जाते हैं। कोश में जम्बूद्वीप का अर्थ "सप्त द्वीपों (जंबूद्वीप, प्लक्षद्वीप, शालभक्ति द्वीप, इक्षु द्वीप, क्रॉच द्वीप, पुष्कर द्वीप, शाक द्वीप) इनमें से एक, लवण समुद्र से घिरा हुआ है। इसके नौ वर्ष अर्थात विभाग हैं- कुरु वर्ष, हिरण्यमय वर्ष, हरिवर्ष, किंपुरुष (किन्नर) वर्ष, रम्यक वर्ष, इलावृत वर्ष, केतुमाल वर्ष, भद्रश्व वर्ष और भारतवर्ष। किंपुरुष वर्ष के शासक महाराज प्रियव्रत के पुत्र अगनींध थे। इसके पीछे निषाद, हेमकुंट, हिमालय आदि पर्वत स्थित है।[13]

पुराण संदर्भ कोश में ही किंपुरुष का एक अन्य अर्थ भी दिया गया है- "कुछ-कुछ पुरुष के समान प्रतीत होने वाले देवता गण"[14] अर्थात देवताओं की वह जाति जो पुरुषों के समान लगती है, पूर्ण रूप से पुरुष नहीं है, वहीं किंपुरुष है।

किन्नर शब्द को सार्वभौमिक अर्थ में हम हिजड़ा शब्द से भी समझ सकते हैं 'हिजडा' शब्द मूलत उर्दू भाषा का शब्द माना जाता है। उर्दू भाषा में यह अरेबिक शब्द "हिजर" से ग्रहण किया

गया है। जिसका तात्पर्य वह जिसने इच्छापूर्वक या अनिच्छापूर्वक अपना लिंग या वर्ग त्याग दिया हो अर्थात एक ऐसा वर्ग जो स्त्री पुरुष से अलग व भिन्न रहकर समाज में ही स्वतंत्र रूप से अपना जीवन व्यतीत करें उसे हिजड़ा कहा जाता है।

अन्य अर्थ में हिजड़ा शब्द को "हिज" शब्द से बना माना जा सकता है- "हिज" मतलब आत्मा... पवित्र आत्मा। जिस शरीर में यह आत्मा रहती है, वह हिजड़ा। यहाँ व्यक्ति को महत्व नहीं है, महत्व है उस आत्मा का और उसे धारण करने वाले हिजड़ा समाज का।"[15]

हिजड़ा शब्द के सार्वभौमिक अर्थ को स्पष्ट करते हुए प्रसिद्ध लेखिका नीरजा माधव बताती है "हिजड़ा शब्द के बहुत करीब दो शब्दों ने मुझे और भी आश्वस्त किया। एक शब्द था "हिजरत" जिसका एक अर्थ होता है संकट के समय जन्मभूमि त्यागना, देश त्याग और दूसरा शब्द है "हिजर" जिसका अर्थ है जुदाई या वियोग। विवशता में अपनी जन्मभूमि, मातृभूमि या परिवार से वियोग इन हिजड़ों की नियति होती है, इसलिए हिजड़ा शब्द ही इस समाज की दुर्दशा और विचारणीय स्थिति का सटीक द्योतक है।"[16]

लैंगिक तथा यौनिक रूप से अल्पसंख्यक किन्नर समुदाय या हिजड़ा समुदाय को भारत में विभिन्न विद्वानों ने अपनी भाषा एवं समाज के अनुरूप परिभाषित किया है। ये परिभाषाएँ जन सामान्य को किन्नर समुदाय को जानने समझने में सहायक है।

1.2.2 परिभाषाएँ

प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता देवेंद्र कुमार राजाराम पाटिल ने अपनी पुस्तक में किन्नर शब्द को परिभाषित करते हुए बताया है कि किन्नर हेमकूट पर्वत पर निवास करने वाली आदिम जाति थी जो वर्तमान में भी वहीं निवास कर रही है। इनके शब्दों में- " किंपुरुष किन्नर भी आदिम जातियाँ थी जो हेमकूट में निवास करती थी। मत्स्य पुराण के अनुसार किन्नर हिमवान पर्वत के निवासी थे।"[17]

प्रसिद्ध हिंदी लेखक राहुल सांकृत्यायन ने अपनी बहुचर्चित पुस्तक किन्नर देश में के प्रारंभ में ही किन्नर शब्द की व्याख्या की है कि "किन्नर या किंपुरुष देवयोनी है। उनके देश की यात्रा का अर्थ है देव लोक में जाना। पाठकों को मेरी यात्रा पर संदेह हो सकता है किंतु साथ ही यह भी कहा जा सकता है कि जिस देश में कभी देवता रहते थे वहां पिछड़े मनुष्य रहने लगे, और जो पिछड़े मनुष्यों का देश हो, वह फिर देवलोक बन जाएगा।... किन्नर देश हिमालय का एक रमणीय भाग है जो तिब्बत की सीमा पर सतलुज नदी की उपत्यका में सा 12/53 मील लंबा और प्रायः उतना ही चौड़ा बसा हुआ है।... किन्नर शब्द ही बिगड़ कर आजकल किन्नौर बन गया है।[18] इस परिभाषा के अनुसार एवं सांकृत्यायन के मतानुसार भी किन्नर लैंगिक रूप से विकृत जाति ना होकर किन्नौर प्रदेश जो कि हिमालय का एक भाग है, में बसने वाले क्षेत्र विशेष के लोगों के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द है।

राजकुमार ने ट्रांसजेंडर शब्द को स्पष्ट करते हुए परिभाषा दी है कि "वैज्ञानिक एवं सामाजिक दोनों अर्थों में भावनात्मक व्यवस्था का ऐसा सहचरण एक ऐसी परिभाषा को महत्ता प्रदान की

जिसमें साफ-साफ शब्दों में बताया गया कि ट्रांसजेंडर जिसमें वैज्ञानिक तरीके से एक ट्रांस साधारण स्त्री-पुरुष की तरह ही जन्म लेता है, परंतु अपनी भावनात्मक महत्ता के आधार पर जब वह अपनी यौनिकता एवं शारीरिक दोनों रूपों में परिवर्तित कर लेता है तो वे ट्रांसजेंडर कहलाता है।"[19]

अर्थात् ट्रांसजेंडर वह व्यक्ति है जो पूर्व में एक निश्चित लिंग में जन्म लेता है परंतु स्वयं को भावनात्मक रूप में दूसरे या विपरीत लिंग में समझते हैं। इसी भावनात्मकता के विवश होकर वे स्वयं को शारीरिक रूप से भी, यौनिक रूप से भी उस लिंग में बदल देगा जिसे वह चाहते हैं। ऐसे ही व्यक्ति ट्रांसजेंडर कहलाते हैं।

लाइफ ऑफ ए यूनुक पुस्तक में हिजड़ा शब्द को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि-" Most often, man have male genitalia one X and one Y chromosome, while have have female genitalia and have X chromosome. Less then two in every thousand person don't have. This combination of chromosomes & SY for males and SS for females, i.e. They may have XXY for insatnce. And genitalia and hence fall out side the typical defination of 'men' or 'women"[20]

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने भी ट्रांसजेंडर शब्द को अपनी भाषा में परिभाषित किया है। उनके अनुसार "ट्रांसजेंडर एक अंब्रेला टर्म है जिसमें वे सभी लोग शामिल हैं जिनकी लिंग की अनुभूति जन्म के समय उन्हें नियत किए गए लिंग से मेल नहीं खाती।" [21]

अर्थात अपने परंपरागत जैविक लिंग में स्वयं को कैद समझने वाले तथा दूसरे लिंग में स्वच्छंद रूप से जीने हेतु प्रयासरत व्यक्ति चाहे वह स्त्री हो या पुरुष ट्रांसजेंडर कहलाता है।

परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते है कि किन्नर, हिजड़ा, ट्रांसजेंडर तीनों शब्दों के अर्थों को लेकर विभिन्न विद्वानों ने अलग-अलग परिभाषाएँ दी हैं। किन्नर को जहाँ अधिकांश ने हिमाचल प्रदेश की जाति विशेष माना है ना कि लैंगिक विकृत जाति। वहीं हिजड़ा एवं ट्रांसजेंडर शब्द स्त्री-पुरुषों के मध्य अपनी अस्मिता को लेकर उलझे हुए तृतीय समुदाय जिनका कोई निर्धारित लिंग नहीं है ऐसे लोगों को परिभाषित करने के लिए बनाए गए शब्द हैं।

संदर्भ – सूची

1– वृहद संस्कृत हिंदी शब्दकोश (सं.) वामन शिवराम आप्टे, पृ. 311

2– संस्कृत-हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश (सं.) उमा प्रसाद पाण्डे, पृ. 245

3– उर्दू हिंदी शब्दकोश (सं.) मोहम्मद मुस्तफा खा 'मददाह, पृ. 175

4– एडवांस लर्नर्स डिक्शनरी (स.) दिलबाग राय, पृ. 950

5– वही, पृ. 461

6– ऑक्सफोर्ड एडवांस डिक्शनरी पृ. 244

7– वही, पृ.396

8–वही, पृ. 882

9–ऑक्सफोर्ड एडवांस डिक्शनरी: पृ. 1278

10– नालंदा विशाल शब्द सागर (सं.) श्री नवल जी, पृ. 235

11–वही पृ. 235-236)

12– (मानक शब्दकोश 'ज्ञानमंडल' वृहत हिंदी कोश (सं) कालिका प्रसाद, राजबल्लभ सहाय और मुकुंदी लाल श्रीवास्तव, पृ. 246

13– पुराण संदर्भ कोश (सं) पद्मिनी मेनन, पृ. 58

14– वही, पृ. 235)

15– लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी मैं हिजड़ा... मैं लक्ष्मी। (शशिकला राय, सुरेखा बनकर), पृ. 49

16– नीरजा माधव: किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय (कुछ तथ्य कुछ सत्य), पृ. 10

17–(डी. आर. पाटील कल्चरल हिस्ट्री ऑफ द वायु पुराण, पृ. 812

18– राहुल सांकृत्यायन किन्नर देश में, पृ.1

19– राजकुमार थर्ड जेंडर भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पृ. 26

20– पीयूष सक्सेना लाइफ ऑफ ए यूनिक, पृ. 303

21– (https://www.prisindia.org)

1.3 किन्नर : भारतीय परिदृश्य

भारतीय परिदृश्य संपूर्ण विश्व में सबसे विस्तृत परिदृश्य है। भारतीय वाड्मय भारतीय परिदृश्य का ही एक भाग है जो विश्व का सबसे प्राचीन एवं विस्तृत वाड्मय है। भारतीय वाड्मय के ही दो रूप देखने को मिलते हैं पहला काव्य तथा दूसरा शास्त्र। किन्नर समाज का काव्य विस्तृत है। जिसका प्राचीन से लेकर वर्तमान तक लंबा इतिहास है। इसमें न सिर्फ धार्मिक साहित्य बल्कि इतर साहित्य में भी आलोच्य समुदाय का वर्णन है। एक और जहाँ हिंदू साहित्य (सनातन साहित्य) के धार्मिक साहित्य में यथा वैदिक कालीन, पौराणिक साहित्य, रामायण, महाभारत जैसे महाकाव्य, आदि ग्रंथों में किन्नरों का विस्तृत विवेचन है, वहीं बौद्ध एवं जैन धार्मिक ग्रंथों में भी किन्नर पात्रों की अनेक कथाएँ-अंतरकथाएँ मौजूद है जिससे किन्नरों का यह साहित्य समृद्ध है।

इतर साहित्य में धार्मिक साहित्य जो न सिर्फ हिंदी तथा उसकी जननी संस्कृत भाषा में लिखा गया बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं में भी लिखा गया है। इस साहित्य में व्याकरण ग्रंथ, ऐतिहासिक ग्रंथ, प्राचीन भारत की राजनीति व सामाजिक जीवन पर प्रकाश डालने वाले ग्रंथ सभी में इनका वर्णन मिलता है।

भारतीय धार्मिक साहित्य

भारतीय धार्मिक साहित्य में ना केवल हिंदू धर्म के सनातन साहित्य को शामिल किया गया है, परन्तु इसमें तमिल साहित्य, जैन तथा बौद्ध धर्म का साहित्य आदि में किन्नर समुदाय का भी वर्णन मिलता है।

वैदिक साहित्य

भारतीय वाड्मय का प्रारंभ वेदों से ही हुआ है तथा किन्नरता के प्रथम साक्ष्य भी वैदिक समय से ही मिलते रहे हैं। सर्वप्रथम साक्ष्य के रूप में हम शिव के अर्धनारीश्वर रूप को देख सकते हैं। शिव व शक्ति का सम्मिलित रूप अर्धनारीश्वर है। यहाँ शिव पुरुष तथा शक्ति स्त्री के साथ शिव पुरुष तथा शक्ति प्रकृति अथवा मन का प्रतिनिधित्व करते हैं। दोनों के ही सहयोग से सृष्टि का निर्माण एवं प्रारंभ होने की कथाएँ प्रचलित है। किन्नर समुदाय भी स्वयं को अर्धनारीश्वर के सृष्टि निर्माता के रूप में रखते हैं । भगवान शिव के पुरुष और स्त्री दोनों के संयुक्त रूप को लेकर तमिल संगम साहित्य में भी अनेक कथाएँ प्रचलन में है, जिनके अनुसार शिव ने ब्रह्मा द्वारा सृष्टि के निर्माण में सहायता माँगने पर अपने आधे शरीर को नारी का शरीर बनाया तथा उससे संतान उत्पन्न कर सृष्टि के क्रम को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दिया। दूसरी अन्य कथा के अनुसार जब शिव द्वारा गंगा को अपनी जटाओं में धारण किया गया तब पार्वती के नाराज होने पर शिव ने उन्हें अपने वाम अंग में धारण किया। "जब शिव की संगिनी पार्वती ने गंगा मैया को शिव के शीश पर देखा तो वे आग बबूला हो उठी... पार्वती को शांत करने के लिए शिव ने उन्हें अपने आलिंगन में ले लिया और तब तक नहीं छोड़ा जब तक कि वे उनमें विलीन होकर उनके शरीर का आधा हिस्सा नहीं बन गई।"[1]

इस तरह शिव को पुरुष तथा प्रकृति दोनों के सम्मिलित रूप में दर्शाना किन्नर समुदाय की महत्ता को स्पष्ट करता है की उस समय में किन्नरों को भी उतना ही सम्मान प्राप्त था जितना अन्य समुदाय को था।

पौराणिक साहित्य

"अनंत पुराणों में छिपा है सनातन सत्य,

इसे पूर्णतः किसने देखा है?

वरुण के है नयन हजार

इंद्र के सौ

आपके मेरे केवल दो।"[1]

पुराण विश्व का प्राचीनतम ज्ञानकोश है, जिनमें मनुष्य की उत्पत्ति से लगाकर वर्तमान तथा भविष्य तक के सत्य छुपे हुए हैं परंतु इसे पूर्णतया कोई ना तो देख पाया है ना समझ पाया। पुराणों के ज्ञान को अपने हजार नेत्रों के बावजूद वरुण तथा सौ नेत्रों के बावजूद इंद्र भी पूर्णतया न समझ पाए तो व्यक्ति अर्थात सामान्य मनुष्य के पास तो केवल दो नेत्र हैं, इसलिए पुराणों में निहित ज्ञान को पूरी तरह समझ पाना मानव के लिए संभव नहीं है। फिर भी मनुष्य हमेशा से प्रयत्नशील रहा है कि वह अपने उपयोगी ज्ञान को खोज निकाले। पौराणिक साहित्य तत्कालीन समाज में घटित होने वाली सच्ची घटनाओं पर आधारित कहानियाँ है जो व्यक्तियों के विश्वासों पर गहरा प्रभाव छोड़ती है।

इसी हिंदू पौराणिक साहित्य में भी लगातार किन्नरों के संदर्भ मिलते रहते हैं। इन कथाओं में ऐसे संदर्भ हैं जो पुरुषत्व एवं स्त्रीत्व की धारणा व विचारों पर तथा ऐसे प्राणियों की जानकारी देते हैं जिनमें न तो पूर्णतः स्त्री तत्व है न हीं पूर्ण पुरुष तत्व है। इनके अतिरिक्त ऐसे प्राणियों जिनमें दोनों

का अंश बराबर मात्रा में है की जानकारी मिलती है। इनके अतिरिक्त पुराणों में विभिन्न स्थानों पर अनेक ऐसी कहानियाँ देखने को मिलती हैं जिनमें महिलाएँ पुरुष बन गई तथा पुरुष महिलाओं के रूप में रूपांतरित हो गए थे।

भागवत पुराण के नारद प्रसंग, उर्वशी प्रसंग, स्कंद पुराण के सामवान प्रसंग, रत्नावली प्रसंग, विष्णु पुराण के भस्मासुर वध प्रसंग तथा समुद्र मंथन के समय का मोहिनी प्रसंग आदि ऐसे ही अंर्तकथाएँ हैं, जिनसे किन्नरों की भावना को बल मिला है। भागवत पुराण की रचना पाँचवीं से दसवीं सदी ईसवी के मध्य दक्षिण भारत में हुई मानी जाती है। इसी में वर्णित नारद प्रसंग में नारद द्वारा पहले स्त्री बन कर विवाह करने तथा अपने पति की मृत्यु हो जाने पर श्रीकृष्ण द्वारा उन्हें पुनः पुरुष बनाने की कथा वर्णित है। उर्वशी प्रसंग में उर्वशी जो स्वर्ग की अप्सरा है, उनके जन्म की कथा वर्णित है कि उर्वशी का जन्म किसी स्त्री के उदर से न होकर भगवान विष्णु की उरु अर्थात जंघा से हुआ है इसलिए इनका नाम उर्वशी हुआ। इन्होंने अपने जन्म के उद्देश्य असुरों तथा ऋषियों की तपस्या को भंग कर इंद्रलोक को बचाने में इंद्रदेव की सहायता की।

स्कंद पुराण में भी स्त्री से पुरुष तथा पुरुष से स्त्री बनने की अनेक कथाएँ मौजूद है। जिनमें सामवान के यौन परिवर्तन की कथा प्रमुख है। इस कथा के अनुसार सामवान तथा उसके मित्र सुमेध द्वारा छल से रानी सीमांतिनी से गहने तथा उपहार लेने के लिए छल किया जाता है। जिसमें सामवान स्त्री रूप धरकर सुमेध की पत्नी बन रानी के पास जाता है। रानी द्वारा सच का पता चलने पर सामवान अपना पुरुषत्व खो स्त्री रूप में बदल जाता है एवं उसे आजीवन सुमेध की पत्नी बनकर जीवन यापन करना पड़ता है। स्कंद पुराण का रचनाकाल आठवीं से बारहवीं शताब्दी

माना गया है परंतु देवदत्त पटनायक के अनुसार सामवान की कथा को सोलहवीं शताब्दी में वरतुंका नामक एक तमिल कवि द्वारा पुनः लिखा गया है।

विष्णु पुराण में भगवान विष्णु द्वारा दो बार स्त्री रूप धारण करने की कथा कही गई है। पहली बार वे समुद्र मंथन के समय देवता और दानवों में अमृत का विभाजन करते समय मोहिनी रूप धारण करते है तथा छल से अमृत देवताओं को पिलाते हैं एवं दानवों को उस से वंचित रखते हैं। दूसरी बार वह शिव के आग्रह पर मोहिनी रूप धरकर भस्मासुर नामक राक्षस का वध करते हैं। इस प्रकार वर्तमान किन्नरों की किन्नरता के साक्ष्य हमें पौराणिक साहित्य में मिलते हैं।

महाकाव्य

ऐसे हिंदुओं के प्रमुख महाकाव्य में रामायण तथा महाभारत माने जाते हैं। दोनों ही महाकाव्य में अनेक ऐसे स्थान हैं जिनमें हिजड़ा समुदाय का उल्लेख मिलता है। रामायण तथा महाभारत दोनों ग्रंथों की रचना लौकिक संस्कृत में हुई है। रामायण में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन चरित्र को महर्षि वाल्मीकि द्वारा आधार बनाकर रचना की गई तो वही महाभारत में श्रीकृष्ण के शास्त्रीय रूप को आधार बनाकर वेदव्यास ने पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक जीवन कुशलता का पाठ पढ़ाया।

रामायण- रामायण काल में किन्नरों की उपस्थिति के साक्ष्य आदि कवि वाल्मीकि कृत 'आदि रामायण' तथा गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' दोनों में मिलते हैं। वाल्मीकि कृत रामायण के उत्तरकांड में सर्ग 87 एवं 88 में राजा इल की कथा के रूप में किन्नरों की उपस्थिति दर्ज है। राजा इल प्रतापी राजा कर्दम के पुत्र थे। एक बार चैत्र मास में वह अपनी सेना को साथ

लेकर जंगल में शिकार करने गए। संयोगवश उसी जंगल में भगवान शिव माता पार्वती के साथ विहार करने आए। भगवान शिव द्वारा पत्नी पार्वती को रिझाने के लिए जब स्त्री वेश धारण किया तब उनके साथ-साथ जंगल के सभी प्राणी, पशु-पक्षी मनुष्य जो भी पुरुष थे, सभी स्त्री वेश में आ गए। राजा इल ने भी अपनी सेना के साथ स्त्री रूप धारण कर लिया। जब राजा ने यह जाना कि उनका रूप परिवर्तन भगवान शिव के प्रभाव से हुआ तब वह शिव के पास पहुँचे और उन से निवेदन किया कि उन्हें उनका पुरुष रूप पुनः लौटा दिया जाए। इसके लिए भगवान शिव ने इंकार कर दिया। तदुपरांत राजा इल ने देवी पार्वती को रिझाने के लिए जब स्त्री वेश धारण किया तब उनके साथ-साथ जंगल के सभी प्राणी, पशु-पक्षी मनुष्य जो भी पुरुष थे, सभी स्त्री वेश में आ गए। राजा इल ने भी अपनी सेना के साथ स्त्री रूप धारण कर लिया। जब राजा ने यह जाना कि उनका रूप परिवर्तन भगवान शिव के प्रभाव से हुआ तब वह शिव के पास पहुँचे और उन से निवेदन किया कि उन्हें उनका पुरुष रूप पुनः लौटा दिया जाए। इसके लिए भगवान शिव ने इंकार कर दिया। तदुपरांत राजा इल ने देवी पार्वती की उपासना की तथा वरदान स्वरुप अपना पुरुषत्व मांगा। देवी ने उन्हें एक माह पुरुष रूप तथा एक माह स्त्री रूप में रहने का वरदान दिया, जिसे राजा ने स्वीकार कर लिया।

"मासं स्त्रित्वमुपासित्वा मासं स्थां पुरुषः पुनः । ईप्सितं तस्य विज्ञाय देवी सुरुचिरनना ।।"[2]

इस प्रकार एक माह तक इल के रूप में तथा अगले माह इला के रूप में राजा इल रहने लगे। इला के रूप में एक दिन चंद्रमा के पुत्र बुध ने इला को देखा तथा उसके रूप पर मोहित होकर उन्होंने इला तथा उनके. सैनिकों जो स्त्री रूप में थे सभी को देवयानी में रहने का आशीर्वाद दिया-

अत्र किंपुरुषीभूत्वा शैलरोधसि वत्स्यथ।

आवसस्तु गिरवास्मिन् शीघ्रमेव विधीयतां ।।"[3]

वाल्मीकि रामायण के अतिरिक्त तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' में भी राम के शील एवं मर्यादित रूप का वर्णन हुआ है। इन्हीं में कुछ विशेष प्रसंगों में किन्नर समाज की उपस्थिति भी दर्ज है। उन्हीं प्रसंगों में एक प्रसंग भगवान राम को मिले वनवास से संबंधित है।

जब रानी कैकयी के वचनों का पालन करते हुए राजा दशरथ ने अपने प्रिय पुत्र राम को राज सिंहासन के स्थान पर चौदह वर्ष का वनवास दिया, तब पिता की आज्ञा को शिरोधार्य मानकर भगवान राम ने वनवास को सहर्ष स्वीकार कर लिया। जब भगवान राम अपनी भार्या सीता तथा भाई लक्ष्मण के साथ वन हेतु निकले तब समस्त अयोध्यावासी भी उनके साथ-साथ वन हेतु निकल पड़े। श्रीराम के आदेश पर सभी नर नारी वन से वापस अयोध्या लौट गए परंतु तृतीयपंथी अर्थात किन्नर स्वयं को नर एवं नारी दोनों में न मानकर वापस जाने के बजाए वही रहे। चौदह वर्ष बाद अपना वनवास पूर्ण करके लौटने पर श्रीराम ने उनसे वहाँ रुकने का कारण पूछा तब किन्नरों ने कारण स्पष्ट करते हुए बताया की हे प्रभु ! आपने समस्त नर-नारियों को वापस जाने का आदेश दिया था परंतु हम न तो नर हैं न हीं नारी इसीलिए हमने आपकी आज्ञा का उल्लंघन न करते हुए आपके अगले आदेश तक यही रुकने का निश्चय किया।

"जथा जोगु करि विनय प्रनामा, विदा किए सब सानुज रामा।

नारि पुरुष लघु मध्य बडेरे, सब सनमानि कृपानिधि फेरे।।"[4]

महेंद्र भीष्म ने अपने उपन्यास किन्नर कथा में इस प्रसंग की पुष्टि करते हुए बताया है कि – " भगवान राम हिजड़ो के कथन से बहुत प्रभावित हुए और प्रसन्न होकर हिजड़ों को वरदान दिया कि जब पृथ्वी पर कलयुग आएगा तब तुम लोग राज करोगे। "[5]

इसी के साथ रामचरितमानस के उत्तरकांड में भक्ति के प्रसंग में भी तृतीयपंथी समुदाय का वर्णन मिलता है यथा-

"पुरुष नपुंसक नारि वा, जीव चराचर कोई।

सर्व भाव भज कपट तजि, मोहि परम प्रिय सोई।।"[6]

अर्थात भक्त एवं भक्ति की पवित्रता के संबंध में उल्लेख करते हुए भगवान राम कहते हैं कि इस संपूर्ण चराचर जगत में निवास करने वाला कोई भी जीव हो चाहे वह पुरुष हो, स्त्री हो अथवा नपुंसक। चाहे पशु पक्षी हो, चाहे देवता चाहे दानव। अगर वह अपना कपट, अपना अहंकार छोड़कर समभाव से बिना लालसा के मेरी उपासना करता है तो वह मुझे अत्यंत प्रिय है। इस उल्लेख से स्पष्ट है कि रामायण काल में स्त्री पुरुष के समान ही किन्नरों को भी समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त था।

महाभारत- महाभारत भारत का अनुपम पौराणिक, ऐतिहासिक, धार्मिक एवं दार्शनिक ग्रंथ है। इसका रचनाकाल 3100 ईसवी पूर्व से 1200 ईसवी पूर्व के मध्य माना जाता है। परंतु इसका संकलन तथा अंतिम स्वरूप गुप्त काल (चौथी सदी) में सामने आया। परंपरागत रूप में इसकी

रचना का श्रेय महर्षि वेदव्यास को दिया जाता है। इसमें तत्कालीन द्वापर युगीन समाज, संस्कृति, राजनीति आदि का विशद विवेचन मिलता है।

महाभारत में किन्नरों के अनेक रूप तथा उनसे संबंधित अनेक कथाएँ विभिन्न स्थानों पर मिलते हैं। उनमें से एक कथा अर्जुन के बृहन्नला रूप की है जो महाभारत के ही वन पर्व में संकलित है। इस कथा अनुसार अपने 12 वर्ष के वनवास के समय जब अर्जुन दिव्यास्त्र प्राप्ति हेतु स्वर्ग लोक की यात्रा करते हैं तब उसी यात्रा के दौरान इंद्र की प्रिय अप्सरा उर्वशी अर्जुन के रूप यौवन पर मोहित हो उनसे प्रणय निवेदन करती है-

" त्वदुणाकृष्टाकिताऽहम नङ् गवश मागता। चिराभिलषितो वीर ममाऽष्येष मनोरथः।।"[6]

अर्जुन द्वारा इस निवेदन को अस्वीकार कर देने से क्रोधित हो उर्वशी उन्हें हमेशा के लिए नपुंसक बन जाने का शाप देती है। इंद्र को जब पूरा घटनाक्रम मालूम चलता है तब उर्वशी को अपने दिए गए शाप की समय सीमा कम कर एक वर्ष कर देने का आदेश देते हैं। जिससे अर्जुन एक वर्ष के लिए नपुंसक बन जाते है।

तवपित्राऽभ्यनुज्ञानां स्वयं च गृहमागताम् । यस्मान्मां नाऽमिनन्देथाः कामबाण वंशगताम् ।।
तस्मात्वं नर्तनः पार्थस्त्रीमध्ये मानवर्जितः । अपुमनिति विख्यातः षण्ढवद्विचरिष्यसि ।।"[7]

अर्थात हे अर्जुन। मैं तुम्हारे पिता इंद्र की आज्ञा तथा कामदेव के वश में होकर स्वयं ही तुम्हारे समीप आई थी और तुमने मेरे प्रणय निवेदन को ठुकरा कर मेरा अपमान किया। इस कारण मैं तुम्हें

शाप देती हूँ कि तुम स्त्रियों के बीच में मान रहित होकर नपुंसक के समान नाचने वाला बनोंगे और सब लोग तुम्हें देखकर यह कहेंगे कि यह पुरुष नहीं है।

जैन साहित्य

जैन धार्मिक साहित्य में तीन लिंगों की परिकल्पना की गई है। स्त्रीलिंग, पुल्लिंग तथा नपुंसक लिंग। इन तीनों लिंगों का निर्धारण इनके जन्म के साथ- साथ इनकी यौन इच्छाओं तथा आकांक्षाओं के सम्मिलित रूप से किया गया है- "जैन दर्शन में मनुष्य की आत्मा को बंधन में डालने वाले नौ कषायों अर्थात नौ दुष्ट प्रवृत्तियों का उल्लेख मिलता है। जहां कर्म को स्त्री वेद, पुरुष वेद तथा नपुंसक वेद के रूप में सम्मिलित किया गया है। नपुंसक वेद अर्थात स्त्री और पुरुष दोनों के साथ भोग की अभिलाषा उत्पन्न करने वाले मोहनिय कर्म।"[8] इस प्रकार स्पष्ट है कि जैन साहित्य में नपुंसक व्यक्ति स्त्री व पुरुष दोनों से समान रूप से आकर्षित होता है, दोनों ही से समान रूप से यौन क्रिया के लिए उत्सुक रहता है। स्त्री वेद जहाँ स्त्री के गर्भ में स्त्री स्वभावगत वृद्धि होती है वहाँ उत्पन्न होती है, गर्भ में जहाँ पुरुष स्वभाव वृद्धि होती है तथा जिससे श्रेष्ठ पुरुषों का जन्म हो वहाँ पुरुष वेद उत्पन्न होते हैं परंतु गर्भ में जहाँ न तो स्त्री न हीं पुरुष स्वभावगत वृद्धि होती है वहाँ नपुंसक वेद का जन्म होता है। जिसमें स्त्री एवं पुरुष दोनों के मनोभाव सम्मिलित होते हैं।

बौद्ध धार्मिक साहित्य

बौद्ध धार्मिक साहित्य में त्रि-पिटक प्रमुख हैं। सुत्त पिटक, विनय पिटक तथा अभिधम्म पिटक। इनमें से सुत्त पिटक में भगवान बुद्ध के सिद्धांत, संवादों एवं तर्कों के रूप में संगृहित है। सुत्त पिटक के ही पाँच निकाय हैं। वह है दीर्घ निकाय, मज्झिम निकाय, संयुक्त निकाय, खुद्दक

निकाय तथा अगुंत्तर निकाय। अगुंत्तर निकाय के विमानवत्थु संबंध के अंतर्गत किन्नर शब्द का प्रयोग मिलता है। विमानवत्थु संबंध में उन पुरुषों एवं स्त्रियों का वर्णन किया गया है जिन्होंने बौद्ध धर्म का अनुसरण कर देव लोक में जन्म लिया। इसके अनुसार "चंद्रभागानदीतीरे अहोसी किन्नरी तदा।"[9]

अर्थात चंद्रभागा या चिनाब नदी के पहाड़ी प्रदेश (तीर, किनारे) पर कभी किन्नरों का बसेरा होता था। इस अर्थ के अनुरूप किन्नर देवताओं की एक श्रेणी मानी गई है, जो पर्वतीय प्रदेशों में निवास करती है। यह शारीरिक रूप से परिपूर्ण थी ना कि विकलांग।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने भी अपनी पुस्तक किन्नर देश में किन्नरों से संबंधित इसी प्रकार की जानकारी उपलब्ध कराई है जो बौद्ध धर्म से ही प्रेरित है "यदि किन्नर का शाब्दिक अर्थ बुरा आदमी है, तो अपने शत्रु के लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग आज भी हुआ करता है। किसी ने अपने शत्रु को यह नाम दिया होगा, यह तो जरूर मालूम होता है और ऐसा नाम आर्यों की भाषा में होने से यह अर्थाभाव आर्यों का ही हो सकता है, तो क्या किन्नर आर्यों से भिन्न थे ? हाँ, आदिम रूप में जरूर मालूम होते हैं।"[10]

इसी आधार पर राहुल जी ने किन्नरों को शारीरिक रूप से सामान्य मनुष्य से श्रेष्ठ बताया है जो उनकी विशेषता बताती है ना की कमी। बुद्धिस्त विनय ग्रंथ में भी सेक्स या लिंग के चार विभाजन किए गए हैं। यह है- स्त्री, पुरुष, स्त्री पुरुष दोनों के गुण एवं प्रकृति वाले तथा पंडका। यह चौथी श्रेणी के लिंग अर्थात पंडका वह है जो शारीरिक एवं व्यवहार प्रवृत्तियों के आधार पर किन्नर होते हैं। इनमें स्त्री व पुरुष दोनों के समान गुण विद्यमान रहते हैं।

इतरेतर भारतीय साहित्य

इतरेतर भारतीय साहित्य वह समस्त साहित्य हैं जो धार्मिक नहीं है। धार्मिक साहित्य के अतिरिक्त भारत का जो भी राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक साहित्य है वो सभी इतरेतर साहित्य का भाग है। प्राचीन काल से लेकर मध्यकाल तक के साहित्य ग्रंथों में किन्नरों की उपस्थिति उनकी महत्ता को दर्शाती है। किन्नरों को प्राचीन समय से लेकर मध्यकालीन समय तक न सिर्फ सम्माननीय स्थान प्राप्त था बल्कि वे आर्थिक एवं राजनीतिक दृष्टि से भी संपन्न थे।

प्राचीन भारतीय साहित्य में पाणिनी के अष्टाध्यायी, वात्स्यायन के कामसूत्र, चाणक्य के अर्थशास्त्र, पतंजलि के साहित्य के अतिरिक्त तमिल व्याकरण, सिद्ध सिद्धांत पद्धति के अतिरिक्त मध्यकालीन सल्तनत साहित्य एवं मुगल साहित्य के साथ मध्ययुगीन भक्तिकालीन साहित्य तक किन्नरों के साक्ष्य मिलते हैं ।

कामसूत्र

कामसूत्र का रचनाकाल पाँचवी सदी माना जाता है। इसके रचयिता वात्स्यायन हैं। इन्होंने संस्कृत भाषा में कामसूत्र की रचना की। कामसूत्र गुप्तकालीन साहित्य का अनुपम ग्रंथ है। तृतीयपंथी या किन्नर समाज का उल्लेख इस ग्रंथ में भी कई स्थानों पर मिलता है। कामसूत्र में ही वात्स्यायन ने किन्नरों के लिए तृतीय प्रकृति शब्द का प्रयोग किया है। ग्रंथ के नवम अध्याय में किन्नरों की प्रकृति का वर्णन करते हुए लिखा है-

"द्विविधा तृतीया प्रकृतिः स्त्रीरूपिणी पुरुषरूपिणी च"।[11]

अर्थात तृतीय प्रकृति के दो रूप होते हैं एक स्त्री के रूप में तथा दूसरा पुरुष के रूप में। वह किन्नर जिसमें स्त्री रूप गुण ज्यादा हो, वह किंपुरुषी और जिसमें पुरुष गुण ज्यादा हो, वह किंपुरुष होते हैं।

इस तरह वात्स्यायन ने तृतीय प्रकृति को किंपुरुषी (स्त्री हिजड़ा) तथा किंपुरुष (पुरुष हिजड़ा) में विभक्त कर उनकी प्रकृति की विस्तार से चर्चा की है। तृतीय लैंगिकता के संबंध में ही किन्नरों के लिए अधिकतर वाचिक शब्दों का प्रयोग वात्स्यायन ने स्त्रीलिंग शब्दों से ही किया है। इनके अनुसार किंपुरुषी औरतों की तरह ही वस्त्र धारण करती है तथा अक्सर गणिका होती है। जबकि किंपुरुषों का व्यवहार मर्दों की तरह होता है तथा इनका कार्य सेठों तथा अभिजात्य वर्ग के लोगों की तेल मालिश करना होता है।

तृतीय लिंग के संबंध में कामसूत्र में पुरुषों को सलाह भी दी गई है कि "वे स्त्री को धीरे-धीरे लुभाये और उन पर यौन संबंध स्थापित करने के लिए जोर डालें, लेकिन इसके साथ-साथ कामसूत्र में उन्हें यह चेतावनी भी दी गई है कि अगर वे जरूरत से ज्यादा धीमे हो जाएंगे तो उन्हें तृतीय प्रकृति का ठहराया जा सकता है।"[12] इस तरह स्पष्ट है कि किन्नरता कामसूत्र में लैंगिक विकृति या मर्दाना कमजोरी से संबंधित गुण है जो पुरुषों से संबंधित है ना कि स्त्रियों से।

कामसूत्र में ही किन्नरों के अतिरिक्त तृतीय लिंग या तृतीयपंथी के रूप में उभयलिंगी तथा द्विलिंगी कामुकता की भी व्याख्या की है। इसमें उन पुरुषों की विशेषता बताइ है जो स्त्री के साथ-साथ अपनी यौन इच्छा पुरुषों से भी पूरी करते हैं। उसी तरह "स्वैरिणी" नामक स्त्रियों का वर्णन

मिलता है जो पुरुष व स्त्रियों दोनों से प्रेम संबंध स्थापित करती हैं। कामसूत्र में ही एक अन्य स्थान पर किन्नर को व्यापक अर्थ में परिभाषित किया गया है।

"किम अहं नरः इति किन्नरः"[13]

'अर्थात ऐसा पुरुष जिसे अपने पुरुष होने पर संदेह होता है वह किन्नर है। इस तरह किन्नरता का संबंध सिर्फ शारीरिक त्रुटि से ही नहीं व्यक्ति की मानसिकता से भी है।

भारतीय इतिहास

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में किन्नरों के साक्ष्य सल्तनत काल से लेकर मुगल काल तक देखने को मिलते हैं। यह समय वह समय था जब किन्नर आर्थिक, राजनीतिक, प्रशासनिक एवं सामाजिक दृष्टि से न सिर्फ सुदृढ़ एवं मजबूत थे बल्कि उन्हें सम्मानजनक स्थिति प्राप्त थी। मध्यकालीन भारतीय इतिहास को दो भेदों में समझ सकते हैं

निष्कर्ष रूप में हम देखते हैं कि भारतीय समाज में स्त्री एवं पुरुष की अवधारणा के मध्य गूंजने वाले, कभी दोनों से वियुक्त लैंगिक प्रकृति का प्रतिनिधित्व करता है। किन्नर समुदाय प्रारंभ से ही न चाहते हुए भी भारतीय समाज का अनछुआ हिस्सा रहा है। सिर्फ भारत ही नहीं कभी हिजड़ा, जनखा आदि तो कभी थर्ड जेंडर, कोथिस आदि अन्य नामों से विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं तक में इनका अस्तित्व हमें दिखाई देता है। प्राचीन समय में इनको सामान्य मनुष्य के समान तो कहीं देवताओं के समतुल्य समझा जाता था। स्वतंत्रता से पूर्व एवं स्वतंत्रता के बाद की बदलती परिस्थितियों में जहाँ वैज्ञानिक सोच बढ़ी है, वहीं किन्नरों के प्रति लोगों की मानसिकता में अधिक

सकारात्मक बदलाव नहीं आया। फिर भी भारत के मुकाबले वैश्विक परिदृश्य में देखें तो किन्नरों की स्थिति में सकारात्मक बदलाव दिखाई देते हैं। अब स्थितियाँ सुधर रही हैं और आशा है कि भविष्य में और भी बेहतर होंगी।

संदर्भ – सूची

1. देवदत्त पटनायक शिखंडी और कुछ किन्नर कहानियाँ, पृ. 42

2. चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा (अनु.) श्रीमद् वाल्मीकि रामायण, उत्तरकांड, सर्ग 87, पृ. 258)

3. वही, सर्ग 89, पृ.264

4. तुलसीदास रामचरितमानस, अयोध्या कांड, पृ. 557

5. महेंद्र भीष्म किन्नर कथा, पृ. 40

6. दामोदर सातवेकर महाभारत वन पर्व (भाषा भाष्य समेत), उर्वशी अर्जुन संवाद, पृ. 244)

7. दामोदर सातवेकार महाभारत वन पर्व (भाषा भाष्य समेत), उर्वशी-अर्जुन संवाद, पृ. 247

8. सोहन राज तंवर जैन कर्म विज्ञान और मनोविज्ञान, पृ. 22

9. गणेश प्रसाद बुधौलिया शास्त्री आदि काव्य और बुद्ध साहित्य रामायण एवं जातक कथाएं, पृ. 188

10. राहुल सांस्कृत्यायन किन्नर देश में, पृ. 346

11. http://main stree.com/kamasutra/kamasutra_part_2-9-htm/.08-12

12. देवदत्त पटनायक शिखंडी तथा कुछ किन्नर कहानियाँ, पृ. 182-183

13. पारसनाथ द्विवेदी (सं) वात्स्यायन मुनि प्रणितम कामसूत्र, पृ. 242

14. तुलसीदास रामचरितमानस, उत्तरकांड श्लोक 87 (क), पृ. 996

15. देवदत्त पटनायक शिखंडी और कुछ किन्नर कहानियाँ, पृ. 174

द्वितीय अध्याय:

किन्नर समाज की समस्याएँ

द्वितीय अध्याय: पारिवारिक समस्याएँ

2.1 पारिवारिक समस्याएँ

तिलस्मी शरीर – डॉ० रामकुमार घोटड़

नर्स बहन जी प्रसव कक्ष से बेबी ट्रे में बच्चे को लेकर बाहर आई और बोली, "अफसोस है कि हम आपके नवजात को नहीं बचा पाए।" सास क्रोध में भड़क गईं, "क्यों कैसे नहीं बचा पाए ...?" जेठानी ने धीरे से पूछा, "लड़का है या लड़की?"[1] नर्स बहन जी ने नवजात से हटाने का प्रयास किया, क्योंकि उन्हें लग रहा था कि बच्चे का शरीर न तो लड़का जैसा है और न ही लड़की जैसा, बल्कि किन्नर जैसा। सास ने बच्चे को कपड़े पहनाने के लिए नहीं कहा, क्योंकि उन्हें लगा कि भगवान की इच्छा को मानना चाहिए। फिर जेठानी का गुस्सा बढ़ गया और वह मर गई। यहाँ मुख्य समस्या समलैंगिकता और समाज में इसकी स्थिति की स्वीकृति के विषय में है। नर्स बहन जी और सास द्वारा बच्चे की समलैंगिकता की व्याख्या और इस पर उनकी प्रतिक्रिया दर्शाती है कि समाज में इस मुद्दे की उपेक्षा और असमानता है। यह समस्या समाज में उचित जागरूकता और समग्र समर्थन की आवश्यकता को उजागर करती है।

माहेरा – हरदान हर्ष

लता स्कूल से लौट रही थी और उसकी पीठ पर भारी बस्ता था। उसे रानी जैसी एक अजनबी महिला मिली, जिसे वह "आंटी" कहा। रानी की तैयारी उसे घर तक छोड़ने के लिए थी। उनकी बातचीत में प्रेम और समझ की भावना जागृत होती है। घर पहुंचते ही, लता ने उसे "मौसी" कहा,

जिससे उनका संबंध और भी गहरा हो गया। रानी के नियमित घर आने-जाने से उनका संबंध मजबूत हुआ। लता की शादी का निर्णय, अंजना के दुख के बीच एक महत्वपूर्ण मोड़ है, जिसमें रानी ने उसका साथ दिया और उसे आशीर्वाद दिया। जब लता स्कूल से लौट रही थी, उसकी आंटी रानी के साथ की गई बातचीत में एक अद्भुत गहराई और विशेषता थी। उनकी बातचीत में उम्मीद, समझ, और प्रेम की भावना जागृत हो रही थी। लता की भावनाओं का अद्भुत संवाद, जिसमें वह रानी को "मौसी" कहकर बुलाती है, उनके रिश्ते की गहराई को दिखाता है। रानी का नियमित घर आने-जाने से उनकी संबंध की मजबूती का अहसास होता है। उनके बीच उत्तरोत्तर बढ़ते आत्मीयता का अनुभव होता है, जो उनकी रिश्ते की गहराई को और भी मजबूत बनाता है।

लता की शादी का निर्णय, जिसमें अंजना की दुखभरी कथा शामिल होती है, रानी की सहायता और आशीर्वाद के साथ एक महत्वपूर्ण समय होता है। इससे पाठकों को लगता है कि उनका संबंध न केवल संवादों में है, बल्कि वह एक आदर्श और समर्थ आत्मीयता का उदाहरण है।

ढोलक की थाप – सुरेन्द्र कुमार अरोड़ा

यह कहानी एक परिवार में एक विवाह के उत्सव के माहौल का वर्णन करता है। यह खुशीभरी अवसर को बजाया जाता है जब दूल्हा दुल्हन को घर लाता है। उत्सव के दौरान, कई लोगों की तालियों, ढोलक की धुन और हंसमुख आवाजों का माहौल होता है। उत्सव में शामिल होने के बावजूद, कई बार वातावरण की अतिरंजितता के कारण, कई बार व्यक्ति अबोध महसूस करता है। कहानीकार की मां उत्सव को रोकने की बजाय, उन्होंने यह सलाह दी कि इन्हें जारी रखने दें क्योंकि ये आशीर्वाद का रूप हैं। हालांकि, कहानीकार, जो अधिक भावुक होता है, उसने उत्सव

के द्वारा उत्पन्न अव्यवस्था के कारण अप्रसन्नता व्यक्त की। अत्यधिक शोरगुल के बीच, कहानीकार की बहन अपने समाजिक दबाव और व्यक्तिगत संघर्षों का अनुभव साझा करती हैं, परिवार की गतिविधियों की जटिलताओं को हाइलाइट करते हुए। यह पाठ पारिवारिक बंधनों, परंपरा और परिवारीय परिस्थितियों के अंतर्निहित विकारों का अभिव्यक्ति करता है।

कुदरत का तोहफ़ा– डॉ० रामकुमार घोटड़

कहानी में, नर्स बहन जी प्रसव कक्षा से बाहर आते हैं और अपनी सास से लड़का हुआ है या लड़की, यह पूछती हैं। नर्स बहन जी का उतावलेपन और मुस्कान इस बात को स्पष्ट करते हैं कि उनके द्वारा आए बच्चे की लिंग का महत्व नहीं है। साथ ही, उन्होंने बताया कि बच्चा एक उभयलिंगी है, जिसमें लड़का और लड़की दोनों के गुण हैं। इससे माँ-बेटी को हैरानी होती है और वे अंदर जाने के लिए हिम्मत नहीं कर पाती हैं। यह कहानी लिंग के विषय में समाज में अभिवृद्धि और समानता को बढ़ावा देती है। इससे हमें यह सिखने को मिलता है कि हर व्यक्ति का मूल्य उनके लिंग या जाति से नहीं, बल्कि उनके कार्यों और गुणों से मापा जाना चाहिए।यह कहानी लिंग के मामले में समाज में मौजूद अवस्था और असमानता को उजागर करती है। नर्स बहन जी के संदेश से स्पष्ट होता है कि हर व्यक्ति का मूल्य उनके लिंग या जाति से नहीं, बल्कि उनके गुणों और कार्यों से मापा जाना चाहिए। इससे हमें समाज में लिंग समानता और समाजिक समरसता की महत्वपूर्णता का अधिकारिक ध्यान दिखाया जाता है।

अधूरी माँ– डॉ० क्षमा सिसोदिया

एक अनोखे वैवाहिक कार्यक्रम के दौरान, एक मौसी ने अपनी बेटी की शादी में अपनी सहमति से एक किन्नर को बारात में शामिल किया। यह घटना मौसी के जीवन का अद्वितीय अनुभव था, जो उसको नये सुख का अहसास कराया। इस समय उसने बेटी को एक बिटिया की तरह समझा और उसके जीवन के इस महत्वपूर्ण पल को यादगार बनाने का प्रयास किया। बचपन से ही मौसी ने अपनी बेटी को प्यार और संजीवनी के साथ पाला-पोसा। वह बेटी की हर खुशी और दुख में साथ दिया, उसके सपनों को साकार करने के लिए हर संभव प्रयास किया। बचपन में ढोलक की थाप और हाथ की तालियों से ही उसकी दुल्हनिया थी। रिश्तों की अहमियत को समझने में उसे वक्त लगा, लेकिन आज वह इस खास मौके पर अपनी बेटी की विदाई के दिन को याद करते हुए अब उस रिश्ते की महत्वपूर्णता को समझ चुकी थी। जब बेटी अपने नए जीवन की यात्रा के लिए रवाना होने लगी, तब मौसी की आँखों में खुशी के आंसू थे, जो उसके चेहरे पर मुस्कान लाते हुए दिखाई देते थे। उसने अपनी बेटी की दुल्हनिया के स्वागत में सबसे ज्यादा उत्साह और प्रसन्नता दिखाई। वह अपनी बेटी की शुभकामनाओं को लेकर उसे स्नेहपूर्ण गले से लगाया और उसके लिए शुभकामनाएं दी। इस अनमोल पल को मौसी ने अपने दिल में सुरक्षित कर लिया और उसे अपने जीवन के सबसे प्रिय और यादगार क्षणों में गिना। इस अनूठे कार्यक्रम के द्वारा, उसने रिश्तों की महत्वपूर्णता को समझा और अपने जीवन के ये अनमोल पल सुरक्षित करने का इरादा किया।

गृहशोभा – पंकज जोशी

एक बच्चे के जन्म पर उसके पिता को यह निर्णय लेने में कठिनाई होती है कि उसे लड़का या लड़की कहा जाए। समय के साथ, उसके विकास और स्वभाव को देखते हुए, उसे इस निर्णय का पता चलता है। यह कहानी एक ऐसे बच्चे की है जिसके प्राकृतिक स्वरूप ने उसके पिता की सोच को परिवर्तित किया। उसके विकास के साथ, उसकी पहचान में भी परिवर्तन आया और वह लड़की के रूप में पूरी तरह स्वीकार की गई। आज, वह लड़की अपने परिवार के लिए एक लक्ष्मी और घर की शोभा है।इस कहानी के माध्यम से हमें यह सिखने को मिलता है कि धैर्य और समय के साथ, हमें अपने बच्चों के स्वाभाविक और सही स्वरूप को स्वीकार करना चाहिए। यह उसे एक समृद्ध और स्नेहपूर्ण परिवार में विकसित करने में मदद करता है।

बरगद का छांव – डॉ० निरुपमा वर्मा

यह पत्र एक बेटी के द्वारा उसके पिता को लिखा गया है। बेटी अपने पिता को पत्र लिखते समय बहुत संवेदनशील और भावुक है। उसने अपने पिता के साथ अपने जीवन की प्रारंभिक यादों को साझा किया है, जैसे कि वह अपने पिता के साथ किताबों के पढ़ाने में, उनके साथ खेलने में, और उनके सहारे अपने सपनों को पूरा करने की प्रेरणा पाने में। बेटी ने अपने पिता को अपने भविष्य की योजनाओं के बारे में बताया है और उनसे उनके साथ रहने की भी अपील की है। वह अपने पिता को बताना चाहती है कि वह उनके साथ है और उन्हें हमेशा समर्थन मिलेगा। पत्र में उसने अपने पिता को बेहद स्पष्ट किया है कि वह उनके साथ खड़ी है, उनकी मजबूती और सहारे की जरुरत है। यह पत्र एक प्रेमपूर्ण और आदर्श रिश्ते का प्रतीक है, जिसमें बेटी अपने पिता के

प्रति अपनी श्रद्धा और प्यार का अभिव्यक्ति करती है। पिता भी बेटी के प्रति अपना समर्थन और प्यार प्रकट करते हैं, और उनकी इस भावना को समझते हैं। इस पत्र के माध्यम से, बेटी ने अपने पिता को उसके महत्वपूर्ण स्थान पर रखा है और उनके साथ उसके जीवन की यात्रा में उसके समर्थन का भरपूर आभास किया है।

सिर्फ़ माँ – राशि सिंह

इस विविध और गहराई से भरे विस्तार से, कहानी में एक परिवर्तन की घटना प्रस्तुत की गई है। हरस्वरूपा के जीवन में नई सदस्य के आने के समय की घटनाओं का वर्णन किया गया है, जो उनके परिवार के लिए एक महत्वपूर्ण समय है। जब हरस्वरूपा को अपनी नई संतान की आवाज सुनाई देती है, तो उसे अपने जीवन में एक नई पहचान का अहसास होता है। वह अपने बच्चों के साथ खुशी का अनुभव करते हुए, परिवार के महत्व को और भी महसूस करते हैं। यह विशेष भाग कहानी में एक और परिवर्तन की घटना को प्रस्तुत करता है। हरस्वरूपा के जीवन में नए जन्म की खुशियों के बीच, एक घटना के माध्यम से, हमें उनके परिवार के महत्वपूर्ण क्षणों का पता चलता है। उनकी पत्नी का नया जन्म और बच्चे की आवाज से हरस्वरूपा को अपने घर की ओर धावा लेते हुए, हमें उनके परिवार के महत्वपूर्ण और अद्वितीय अनुभवों का विवरण मिलता है। उनकी पत्नी की आवाज से, हमें उनकी माँ के रूप में संबंधित भावनाओं का संदर्भ मिलता है, जो नया जन्म देने के समय में स्पष्ट होती हैं। इस संवाद से, हमें माँ के प्रेम और संघर्ष का अनुभव होता है, जो एक नई ज़िम्मेदारी के साथ आती है। इस तमाम घटना और संवादों के माध्यम से, हमें यहाँ दिखाया जाता है कि कैसे परिवार के सदस्य एक-दूसरे के साथ साझेदारी करते हैं, और

एक नए सदस्य के आगमन से सभी का जीवन नई दिशा में मुड़ जाता है। कहानी में उनके संबंध की गहराई, और उनके जीवन के महत्वपूर्ण क्षणों का वर्णन किया गया है, जो उन्हें नए जीवन की शुरुआत के लिए तैयार करते हैं। उनके द्वारा उठाए गए और उनके अनुभवों के माध्यम से, कहानी एक परिवर्तन के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश प्रस्तुत करती है, जो जीवन के संघर्षों और संप्रेषण के बीच अद्वितीय और प्रेरणादायक है। यह कहानी पारिवारिक समस्याओं के विषय में भी बात करती है, जैसे कि समाज में नई सदस्य के आगमन के समय की चुनौतियां और उनके साथी सदस्यों के बीच संबंधों में समझौता करने की आवश्यकता। यह उत्पन्न होने वाली पारिवारिक चुनौतियां और संघर्ष दिखाती है, जैसे कि नए जन्म के समय परिवार के सदस्यों के बीच साझेदारी और समर्थन की आवश्यकता होती है। इससे हमें यह सीख मिलती है कि पारिवारिक समस्याओं को समाधान करने के लिए सदस्यों के बीच संवाद और समर्थन महत्वपूर्ण होता है।

आशीष – राजेन्द्र श्रीवास्तव

जब शन्नो मौसी और भागवती काकी छोटी बहु के आने वाले जन्म का स्वागत कर रही हैं, तो उनकी रीति-रिवाज में विशेष अंदाज होता है। वे ढोलक की थाप पर ताली बजाते हैं, गाते हैं, और नाचते हैं, जो परिवार के उत्सव की भावना को दर्शाता है। उनका यह व्यवहार संबंधों की खुशी, समृद्धि, और एकता को प्रकट करता है। शन्नो की इस विनती में भी गहरा अर्थ है। वह ईश्वर से सिर्फ एक आशीर्वाद मांगती है, लेकिन उसकी भावना में और गहराई है। उसकी इस विनती से यह संकेत मिलता है कि उसे सिर्फ स्वस्थ और सुखी संतान की चिंता नहीं है, बल्कि उसके लिए एक उत्कृष्ट और नेक आत्मा की कामना है।यह विशेष भाग कहानी में परिवर्तन के लिए एक

महत्वपूर्ण पल प्रस्तुत करता है। काकी की खुशी और आशीर्वाद दिखाते हैं कि वह नई संतान के लिए अच्छे भविष्य की कामना कर रही हैं। शन्नों की विनती और उनकी अद्भुत भावनाएं उनके विश्वास को दर्शाती हैं कि उन्हें नई संतान के लिए केवल सुख और समृद्धि ही नहीं, बल्कि उन्हें उच्चतम गुणों और मूल्यों की प्राप्ति की आशा है। "चाहे जैसी हो, पर आने वाली संतान हमारे जैसी न हो"[2] – यह उद्घाटन उनकी भावना को दर्शाता है कि उन्हें नई संतान के लिए एक बेहतर और सुखी जीवन की कामना है, जो उनके संस्कार, मूल्य, और नैतिकता को विकसित करे। इस सन्देश से उनका यह अर्थ निकलता है कि वे उनकी संतान को सबसे अच्छी संभावनाओं के साथ जीवन में प्रेरित करना चाहते हैं। इस कहानी में परिवार के सदस्यों के बीच एक सजीव और प्रेमपूर्ण संबंध का आदर्श प्रस्तुत किया गया है, जो नए सदस्य के आगमन को धन्यवाद और आशीर्वादों से स्वागत करते हैं।

बड़ी बहन– शोभना श्याम

इस कहानी में, एक परिवार में नयी बहू का आगमन होता है और उसे स्वागत के लिए तैयारी की जाती है। यह नई बहू उस समय आती है जब परिवार के सदस्यों में खुशियों की माहौल बनी होती है। उनके आगमन के साथ ही, परिवार के सदस्य उन्हें शुभकामनाएँ देते हैं और उनके स्वागत में भाग लेते हैं। रस्मों और परंपराओं के माध्यम से, उन्हें समाजिक सम्मान और आदर प्रदान किया जाता है। इस कहानी में, परिवार की एकता, सामाजिक सहयोग और पारंपरिक मूल्यों का महत्व उजागर किया जाता है। इस कहानी में, विदेश से लौटे एक परिवार में नयी बहू का स्वागत होता है। उन्हें सभी परिवार के सदस्यों ने खुशी से स्वागत किया। नई बहू को रस्मों और

परंपराओं के माध्यम से आदर्श बनाया गया, जिसमें सभी सदस्य भाग लेते हैं। यह घटना परिवार के एकता और सामाजिक सहयोग को दिखाती है।

गतिशील पल – विभा श्रीवास्तव

कहानी समाज के गुटों में घुसपैठियों के दौरे पर प्रकाश डालती है, जो अक्सर समाज में अलगाव और संकीर्णता का सामना करते हैं। उनका आत्मसमर्पण और परिवार में सम्मिलित होने का दृश्य, जैसे ही वे एक बच्चे को पहचानते हैं जो शायद उनके समुदाय से हो सकता है। इस पहचान से हिजड़ों और बच्चे की माँ के बीच एक संघर्ष का आरंभ होता है, जो मातृशक्ति और बलिदान के विषय पर प्रकट होता है, भले ही सामाजिक पूर्वाग्रह के बावजूद। माँ की निर्मम इनकार उनकी सहनशीलता और अपने संतान की सुरक्षा के प्रति उनकी दृढ़ता को दिखाती है, हालांकि हिजड़ों की दबावों का सामना करते हुए। इस कथा के माध्यम से, कहानी समाज में किनारे पर रहने वाले समुदायों के सामने आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डालती है और पारिवारिक बंधो के भीतर मिलने वाले शक्ति और प्रेम का महत्व प्रशंसा करती है।

माँ का धर्म – रूपेन्द्र राज

इस कहानी में, माँ और उनके बेटे के बीच एक बहुत गहरा वार्तालाप दिखाया गया है, जो उनके बीच एक गहरे भावनात्मक संघर्ष को प्रकट करता है। बेटा अपनी नवजात बच्चे को देखने की इच्छा व्यक्त करता है, लेकिन माँ इसे नकारती है, कहती है कि बच्चा उनके परिवार के लायक नहीं है। बेटा उसे बच्चे को देखने की अपनी इच्छा को प्रकट करने की कोशिश करता है, लेकिन माँ अडिग रहती है। यह वार्तालाप पुत्र की आकांक्षाओं और माँ की कठोर सामाजिक

उम्मीदों के बीच की टकराव को उजागर करता है। इसके अतिरिक्त, इस वार्तालाप में पारिवारिक दिनचर्या, मातृ-पितृ की जिम्मेदारियाँ, और समाजी दबावों के विषय में भी परामर्श दिया गया है। यह माँ की परिवार की इज़्ज़त के बारे में उनकी चिंताओं को दर्शाता है और उसकी समाज की नियमों से विचलित होने की इच्छा को दर्शाता है। वहीं, बेटे का भावनात्मक अप्रतिबंधितता उसकी पारिवारिक जुड़ाव और सामाजिक बाधाओं के खिलाफ उसकी लड़ाई को दर्शाता है। कुल मिलाकर, इस वार्तालाप में पारिवारिक संबंधों की जटिलताएँ, व्यक्तिगत इच्छाओं और समाजी उम्मीदों के बीच की टकराव, और माँ और बेटे दोनों के अनुभव का भावी तंत्र उजागर किया गया है।

थर्ड जेंडर –अनिल शूर आजाद

इस कहानी में पारिवारिक समस्याओं को दर्शाया है, इस कहानी के माध्यम से स्त्री को दोयम नजरों से देखा ही गया है परन्तु किन्नरों को तियम नज़रों देखा गया है। इस कहानी में किन्नर के पैदा होने से समाज कैसे रोता है वह दर्शाते हैं कहानी यह हैं कि कस्बे के मातृत्व केंद्र के ऑपरेशन थियेटर के बाहर एक तनाव छाया हुआ था तभी नर्स बहनजी ने बाहर आकर घोषणा की, की जच्चा –बच्चा दोनों सकुशल हैं।तभी सास ने प्रश्न पूछा कि लड़का है या लड़की, तभी नर्स कहती हैं कि "जी न लड़का है न लड़की, बच्चा थर्ड जेंडर है"[3] यह सुनते ही वहां एक गहन मातम पसर गया।तो यहां हमें पता चलता है लोग बच्चे के पैदा होने से खुश नहीं होते बल्की लैंगिक रूप को कितना महत्वपूर्ण समझते हैं यह बताया है।एक परिवार ही किन्नर के पैदा होने से

असामंजस्य में पड़ जाते है यह भी पता चलता है। आज भी किन्नरों के पैदा होने से उनको स्वीकार करने से हिचकिचाते हैं यह भी दर्शाया है।

वह देवता –कमल कपूर

इस कहानी में कैसे परिवार समाज में बदनामी के डर से निष्ठुर होकर एक किन्नर शिशु को किन्नर समुदाय को सौंपा जाता है यह दर्शाया है। साहित्य – महाकुंभ के आखिरी दिन का अंतिम सत्र था। 'हिन्दी –साहित्य और महिला लेखन' विषय पर देश के भिन्न –भिन्न शहरों से आए चुनिंदा लेखकों के वक्तव्य का सत्र था। मंच – संचालक ने घोषणा की, की "इस सत्र की अध्यक्ष और मुख्य वक्ता उदयपुर से पधारीं डॉक्टर प्रोफेसर कनुप्रिया जी है।"[4] यह सुनकर लेखिका को लगा की सुंदर नाम के साथ वह देखने में भी बहुत सुंदर होंगी। अगले ही पल वह हाथ जोड़े मुस्कान बिखेरती वह मंच पर खड़ी थीं उसे देखकर सभी अवाक रह जाते हैं, लेखिका पर तो स्निग्ध कल्पना पर जैसे साइबेरिया की बर्फ गिर गई हो। सभागार में सुगबुगाहटें उछलने लगी…"अरे! यह तो छक्का है" "उफ गॉड! ट्रांस जेंडर" ये हिजड़ा क्या अध्यक्षता करेगा "[5] आदि –आदि। माहौल में वितृष्णा–सी घुल गई। लेखिका के मन भी कसैला –सा हो गया, पर जब उन्होंने हर वक्ता के वक्तत्व पर सटीक टिप्पणी दी और विषय पर धाराप्रवाह बोली वो भी बिन देखे तो सभागार में ऐसी मुग्ध खामोशी पसर गई कि साँस लेने का स्वर भी शोर का–सा आभास दे रहा था। वक्तव्य के समापन पर बजी जोरदार तालियाँ उनकी सफलता की गवाही दे रही थीं। तमाम पत्रकार सबको छोड़कर उन्हें घेरे खड़े थे और अपनी तुच्छ मानसिकता को धिक्कारती सुधा सहाय दूर खड़ी मुग्ध दृष्टि से उन्हें निहार रही थी की एक पत्रकार का स्वर कर्ण –पटल से

टकराया, और आखिरी सवाल पूछते हुए कहता है कि "इस मुकाम तक पहुंचने की राह में अनेक चुनौतियाँ और मुश्किलें आई होंगी, अपनी सफलताओं का श्रेय आप किसे देती हैं?"[6] वे कहती हैं कि उस देवता को, जिसे ईश्वर ने मुझसे बहुत पहले ही धरती पर भेज दिया था, मेरी परवरिश का दायित्व दे कर।"[7] यह सब सुनकर उसके मन में प्रश्न उभरा की कौन है वह? आप के पिता? वह कहती है कि नहीं जी! वह देवता मौन तपस्वी –सा खड़ा है उस गुलमोहर के नीचे हर एक की नज़र उस ओर उठ गई और सभी उन्हें देखकर आश्चर्य चकित हो गए और कटे –फटे स्वर कंठ से फूटने लगे की " अरे! यह तो...यह भी आप जैसा है.. मेरा म.. त.. ल.. ब.."[8] यहाँ हमें पता चलता है की लोग, समाज कैसे वेशभूषा तथा लिंग से परखते हैं और लोगों की मानसिकता के बारें में भी पता चलता है की उनकी सोच कैसी हैं। वह कहती हैं कि " जी हां! मेरी बिरादरी के ही हैं यह...बल्की मैं इनकी बिरादरी की हूं। मेरे जन्मदाताओं ने तो समाज में बदनामी के डर से निष्ठुर होकर मुझे इनके हाथों सौंप दिया था पर इन्होंने मेरी प्रतिभा को पहचानकर, पूरे किन्नर समाज से बैर मोल लेकर मुझे पाल– पोषकर, पढ़ा–लिखाकर इस मुकाम तक पहुंचाया। लाडली बिटिया हूं मैं इनकी। वहां क्यों खड़े हैं बाबूजी? यहां आइये न!" लेकिन वह वहीं खड़े मुस्कुराते रहे... आशीर्वाद की मुद्रा में दोनों हाथ उठाए। यहां हमें पता चलता है कि कैसे उनके जन्मदाताओं के दिल पत्थर के बने होंगे जो अपने ही बच्चों को किन्नर समुदाय को सौंप देते हैं। और किन्नर समुदाय समाज के दंश को झेलकर समाज के ही बच्चे को अपना समझकर पाल– पोषकर, पढ़ा–लिखाकर एक अच्छे मुकाम तक पहुंचाते हैं यह बताया है।

कनक हरलालका– अस्तित्व

इस कहानी में हमें एक परिवार के प्रति सकारात्मकता दिखाई देता है, यह कहानी एक शहर की विख्यात गॉयनोकालाजिस्ट, डॉक्टर विजयता की है। वह बहुत अनमनी–सी अभी एक डिलीवरी करवाकर अपने चेम्बर में बैठी थी, उनके सामने अस्पताल के फॉर्म पड़े थे, जिनमे उन्हें केस का ब्यौरा भरना था। सेक्स के सामने की बिंदुरेखा ही उनके असमंजस और उदासी का कारण थी। उनकी आंखों के सामने उनके जीवन संघर्ष कथा घूम गई। जन्म के तुरंत पश्चात् की घटनाओं का तो उन्हें पता न था, पर बाद की सारी अपेक्षाएं, लांछनाएं, चुभती व्यथाएं उनके मानस पटल पर गहरी खुदी हुई लकीरों के समान स्पष्ट थीं। उस युग में उनका जन्म घर पर ही हुआ था। उसकी माँ से ही सुना था कि जब घर वालों को पता चला कि उनकी गणना न पुरूष में है, न स्त्री में, और समाज में उस वर्ग को अनेक तिरस्कृत नामों से ही संबोधन किया जाता है, तो एक सन्नाटा व्याप्त गया था। समाज के डर से आपस में सलाह कर निर्णय लिया गया कि दफन कर छुट्टी पाते हैं और सुबह होते ही कह दिया कि मरा हुआ बच्चा पैदा हुआ है। पर जिस मां ने नौ महीने अपने पेट में रखकर, अपने रक्त, मज्जा से उसका निर्माण किया था वह इसे कैसे स्वीकार कर लेती। इसमें बच्चे का तो कोई कुसूर न था। और उसी समय उस स्त्री ने अपना सबल रूप दिखाया जिसे समाज में उसे अबला कहा जाता था। और पुरुषों की ओर मार डालने की क्रूरता के विरुद्ध खड़े होते हुए बोली की यह उसकी बेटी है और खबरदार किसी ने इसे हाथ लगाया तो। यहां मां का जीवन उसके लिए कैसे समर्पित हो जाता है यह बताया है। उसे एक विशिष्ट समाज वर्ग द्वारा अपनाने की पेशकश भी दी गई थी, परन्तु मां एक लोहे की दीवार के समान उसकी संरक्षक बनकर उसके और

समाज के बीच खड़ी थी। उसे मिली लांछन के विष को उसके साथ उसकी मां भी नीलकंड सदृश्य अपने गले में धारण करती रही। और उसकी मां ने उसे पाला –पोसा, पढ़ाया –लिखाया, शिक्षा दी, संस्कार दिए। मेधा की लगन भी जोरों पर थी, मात्र एक शारीरिक अभाव के कारण जो कि ईश्वरीय देन थी, वह इस अभिशप्त जीवन से बाहर थी, उसने अपने लगन से, अपने पांव पर खड़े होकर अपने जीवनमार्ग को दिशा –निर्देश दिया आज वह एक विख्यात डॉक्टर बन गई। फिर अचानक उसके सामने नवजात के रूप में उसका अतीत एक और विजयता के समान प्रश्नचिन्ह बनकर उपस्थित हो आया और सोचती रही कि क्यों इनका अस्तित्व और अस्मिता समाज स्वीकार नही कर सकता? इस सभ्य कहलाने वाले समाज के फॉर्म में सेक्स के सामने वाले स्थान पर दो ही ऑप्शन थे बेटा या बेटी यह देखकर वह विवश हो गई उसे नवजात की अस्मिता की रक्षा के लिए इन दो में से किसी एक को ही चुनना था। अचानक उसके सामने उसकी मां का चेहरा घूम गया, स्त्री की महानता, सशक्तता का परिचय उसके अपने जीवन में हर कदम पर पाया था। इस नवजात की अस्मिता और अस्तित्व की रक्षा भी उसकी मां को ही तो करनी थी और फिर उसने दृढ़ हाथों से कलम उठाया और बच्चे की मां से मशवरा कर फार्म के कॉलम भर दिया बेटी और प्रसूता की नवजात संतान बेटी थी। यहां हमें पता चलता है कि भले ही सरकार ने उन्हें स्वीकार कर दिया हो पर उन्हें फॉर्म में सेक्स के सामने वाले स्थान पर उनके लिए ऑप्शन नहीं रखा।

टूटते तारे की चमक – कविता वर्मा

यह कहानी एक प्रतितात्मक दिखाई देती हैं और कैसे एक परिवार समाज के दबाव के कारण अपने ही बच्चे को किन्नरों को सौंप देते हैं यह बताया है। संकरी हमेशा मुख्य सड़क से अंदर वाली छोटी सड़क पर मोड़ लेता और गली में खेलते बच्चों को हॉर्न देकर उस मकान से आगे आ जाता और फिर पलटकर देखता और गाड़ी को फिर मुख्य मार्ग की तरफ़ मोड़ देता। वह रोज़ ऐसे ही करता उसके दिल में एक अजीब–सी कसक होती, लेकीन वह उसे दबा लेता और अपने घर आकर घंटों उससे छटपटाता रहता। एक दिन अचानक उस मकान के सामने भीड़ लगी थी जिससे देखकर वह अपनी गाड़ी किनारे लगाकर मकान के अंदर दाखिल हुआ और देखा की एक फटे –मैले बिस्तर पर हड्डियों का ढांचा मात्र बचे वृद्ध को जबरदस्त खांसी का दौरा पड़ा था उसकी बूढ़ी पत्नी उसकी छाती सहला रही थी, पानी पिलाने की कोशिश कर रही थी लेकीन कोई फायदा नहीं हुआ। उसने उसे गोदी में उठाकर डॉक्टर के यहां ले चला गया वह देखकर तमाशबीन की भीड़ से प्रशंसा के कुछ शब्द "बेटा तो ऐसा होना चाहिए" उसके दिल को जख्मी ही कर दिए। ठीक होने के बाद उस वृद्ध को घर पहुंचाया उन्हें आराम लग चुका था, उसके सिर पर हाथ रखते हुए उन्होंने उसे आशीष देते उसका परिचय पूछा तो उसकी आंखे भर आई। और वह इतना ही सका कि "बाबा मैं आपका टूटा तारा हूं जिसे आपने किन्नरों को सौंप दिया था।

कल्पना मिश्रा –नेग

यह कहानी नकारात्मक सोच से सकारात्मक की ओर बढ़ते हुए दिखाई देता है। और एक लिंग की तुलना करते हुए दिखाई देते हैं,जब पांडे जी के घर में बच्चा पैदा हुआ हिजड़े "जुग –

जुग जिए तोरा लाल, भावनवा के भाग जागे हो।"[6] यह बधावा गा रहे थे। तभी वहा पांडे जी ने कहा कि कैसा लाल और कैसे भाग चुप रहने के लिए कहा, यहां लड़की हुई है बताया लेकीन वे कहने लगे की पोती के जनम का नेग तो दो परन्तु पंडित गुस्सा हो जाता है और कहते हैं की उन्हें कोई नेग नही मिलेगा क्योंकि उनके घर दूसरी बार लड़की पैदा हुई थी। और वे सगुन देने से मना कर देते हैं, लड़का होता तो मुंह मांगा नेग देते। हिजड़े नाराज़ होकर कहते हैं कि लड़की हुई तो क्या हुआ वह हमारी तरह तो नहीं हुई है, भगवान उसे खूब खुशियां दे, हमें तो कोई भी अपने सगे भाई, बहनों की शादी –ब्याह और घर के कोई कामकाज में भी नहीं जा सकते। उनकी आवाज में एक दर्द जलक रहा था। पांडे जी चुप चाप घर के अंदर चले गए और वे अपनी बच्ची को उनके गोद में देकर, उनके हाथों में इक्यावन सौ रूपये दिए और उनकी गुड़िया को ढेर सारा आशीर्वाद देने के लिए कहा और खुशी से हिजड़े ढोलक की थाप के साथ नाचने लगे और दुआएं देने लगे।

गीता कैथल – दिल का रिश्ता

यह एक पारिवारिक समस्याओं को दर्शाता है। जहां रमा (बेटी) सरिता जो माँ (किन्नर) की जोड़ी बहुत मशहूर थी वे दोनों प्यार से रहते थे परन्तु रोमा को अपने पिताजी का नाम जानना था। उसने मां से पूछा परंतु उसने मना कर दिया। रमा छिड़कर बैठती है तो रमा को लगता है की उसकी माँ उसे मनाने आएगी परन्तु वह नहीं आती जब रमा जाकर देखती है तो उसकी मां बेशुध्य होकर गिरी हुई होती है वह तुरंत उसको अस्पताल लेकर जाती है, जब वह डॉक्टर से पूछती है की उसकी मां कैसी हैं तो डॉक्टर कहता है कि वह उसकी मां नहीं है वह एक किन्नर है, यह सुनकर उसके सामने पूरी जिंदगी एक चलचित्र की तरह घूम गई। उसे सारे जवाब मिल गए थे, वह उसके

मां के पास बैठकर उससे माँफी माँगती है, वह कहती है कि उसे कुछ नहीं जानना बस वह मुझे छोड़कर न जाना और अपने अंदर की भगवान से कहती की ऐसी मां पर हज़ार माँ – बाप कुरबान हैं। इस कहानी में कैसे समाजिक दबाव के कारण परिवार अपने बच्चे को छोड़ देते हैं, जो जिसे जिंदगी के बारें में पता नहीं। एक निर्दयी समाज और परिवार को दर्शाया है।

पंकज जोशी –गृहशोभा

इस कहानी में एक पारिवारिक समस्या को दर्शाया है। इस कहानी में बदलती मानसिकता हमें दिखाई देती है। जहां एक बच्चे जन्म होता है, जब वह पैदा होता है तो उसके बाप को समझ नहीं आता है कि थाली पिटवाये या नहीं लेकिन फिर उसे लड़का बोलकर थाली पिटवाते हैं और गांव की सारी ज़मीन बेचकर शहर चला जाता है, उन्हें समझ नहीं आता है कि लड़का कहें या लड़की, एक दिन समाज के तिरस्कार सहन न करने के कारण वह उसको नदी में प्रवाहित करने चला जाता है तभी उसकी अंतरात्मा ने उसको झकझोरता है कि मूर्ख ईश्वर के अंश को मार रहा है, यह तो उसकी कृपा थी। फिर उसके बच्चे की मुस्कान देखकर वह अपने बच्चें का लालन – पालन करने लगा। जैसे समय व्यतीत होने लगा बालक के शारीरिक अंगों का विकास होने। बढ़ते अंगों के विकास के प्रति बालक की जिज्ञासा व उसकी मनोदशा माता –पिता से अधिक देर तक छिपी नहीं रही और उसके हाव–भाव, बोलचाल के कारण आधुनिक चिकित्सा विकास के चलते उसे पूर्ण लड़की का स्वरूप दे दिया। आज वही लड़की किसी के घर की लक्ष्मी और गृहशोभा बन गई है। इस कहानी के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाने की कोशिश की है।

चित्रा राणा –लाखों में एक

इस कहानी में समाज के कारण एक पिता अपने बेटे के प्रति नकारात्मक सोच को दर्शाया है। और एक मां अपने बेटे को इस समाज के लिए अपने पति के समक्ष सकारात्मक सोच बता रही है। बहुत वर्षों बाद उन्हें बच्चा हुआ था वह भी किन्नर जिससे एक पिता नाखुश था। उसे वंश बढ़ाने के लिए कोई चाहिए था। वह अपनी पत्नी से कहता है की इसे पालकर यह कैसे जायेगा, घर घर जाकर पैसे कमाएगा, वह कहता है कि हर एक प्रणाली का उद्देश्य है कि समाज को आगे बढ़ाये, नयी पीढ़ी लाए। तो उनकी पत्नि उसे समझाती है कि एक बाप ही नहीं अपना रहा तो समाज उसको कैसे स्वीकार करेगा।

द्वितीय अध्याय: आर्थिक समस्याएँ

2.2 आर्थिक समस्याएँ

स्वावलम्बी – कल्पना भट्ट

यह कहानी एक आर्थिक परिस्थिति को दर्शाती हैं। जहां लोकल ट्रेनों में किन्नर इडली सांभर का डिब्बा लिए ताली बजाकर बेच रहा था लोकल ट्रैन में रोज़ सफ़र करने वालों के लिए इस तरह से खाने की चीज़ों को बेचने वालों की कमी नहीं होती। पर थर्ड जेंडर अब इस व्यवसाय के लिए इस डिब्बे में कौतूहल का विषय बन गया था। लोग उन्हें धिक्कार के नज़रों से देख रहे थे और कह रहें थे की अरे यार हद है यह तो, अब इनके हाथ का बना खाकर अपनी भूख मिटानी होगी? यहां समाज की नकारात्मक सोच को हमारे समक्ष रखा गया है।उसी ट्रेन में एक बच्चे की हरकतों ने किन्नर का ध्यान आकर्षित किया और उस औरत से कहता है कि तेरा बच्चा उनकी बिरादरी का लग रहा है, तू तो समझ सकती है अन्न तो सबके लिए समान होता है। सभी उसे निहार रहे थे। लेकीन बच्चे को भूख लगी थी, वह किन्नरों वाली स्टाइल में खुद के लिए खाना मांग रहा था। उस किन्नर ने उसकी मां को उनके समाज में न भेजने का कारण पूछा, अगर वह हां कह दे तो वह मुखिया को लेकर आती हू कहती हैं, तभी उसकी मां कहती हैं कि " अभी तो तुमने कहा अन्न में फर्क नहीं, तो हमने और तुममें फर्क क्यों? क्या तुमको पैदा करने के पहले तुम्हारी मां ने 9माह…।"[1] इसके आगे वह कुछ नहीं बोल पायी। मर्यादाओं ने उसको जगड़ लिया था। बच्चा इडली खा रहा था उसको देख करीब एक बच्चे ने भी जिद की तो उसकी मां ने भी उसको दिला दिया और वह किन्नर से चिढ़ रही थी और कहती हे भगवान! उसके बच्चे की रक्षा करना। यह

सुनकर किन्नर की आंखों में अश्रु बह गए। वह उस पहली बच्चे की अम्मा से कहता है कि "सच कहा अम्मा, अन्न में फर्क नहीं होता न इंसानों में, पर हमारे फर्क को काश आपके जैसी अम्मा मिल जाती।"[2] और वह बिना पैसे लिए, ताली बजाता हुआ अपना सामान ले आगे बढ़ गया। डिब्बे में बैठे मुसाफ़िर इस छोटे किन्नर को देख रहे थे और वह उनका चर्चा का विषय बन गया था, पर उसकी मां उसको सीने से लगाए गौरव का अनुभव कर रही थी। इस कहानी में एक अच्छे परिवार के न मिलने से उनकी क्या दुर्दशा होती है यह बताया है और समाज उनपर कैसे शोषण करता है वह बताया है।

और दीप जल उठा– सविता इन्द्र गुप्ता

किन्नर ने धन जुटाने के लिए सेठ से पैसे मांगे, लेकिन सेठ ने उन्हें ठुकरा दिया। इस पर किन्नर ने उसे अपने सपनों और मेहनत के महत्व को समझाने का प्रयास किया। उन्होंने सेठ को बताया कि उनका मांसिक संघर्ष और सामाजिक स्थिति के अन्याय का अनुभव किया है, और उन्हें भी समाज में उनकी स्थिति को सुधारने का अधिकार है। सेठ ने अंत में किन्नर को पैसे वापस कर दिए, जिससे किन्नर को उसके काम के लिए सहायता मिल सके। इस घटना ने समाज में सामाजिक न्याय और समर्थन की महत्वपूर्णता को प्रकट किया। यह उसे समझाता है कि हर व्यक्ति का मानसिक समर्थन और समाज में समानता का अधिकार होना चाहिए।

आधा अधूरा – सुरेंद्र केलें

चौराहे पर लाल बत्ती जलते ही, वहाँ खड़े विक्रेता और व्यापारी अपने काम में व्यस्त हो गए। इसी बीच, एक व्यक्ति ने एक कार से बाहर निकलकर एक धनिक से मदद मांगी। धनिक ने व्यक्ति

की बात सुनी और उसके साथ एक गंभीर वार्ता की। व्यक्ति ने बताया कि उनकी शादी को आठ साल हो गए हैं, लेकिन उन्हें संतान नहीं हुई है। एक साधु ने उन्हें यह सलाह दी है कि यदि वह अधूरे मनुष्य के संग चलें, तो उन्हें संतान प्राप्त होगी। वह इस माँग को पूरा करने के लिए तैयार है। परंतु फिर भी, उसकी एक और माँग है – उसे अपने इलाज के लिए धन की आवश्यकता है, ताकि वह समाज में सम्मान से जी सके .यह अंश एक गरीब व्यक्ति के साथ उसके धनी मित्र के बीच की कहानी को बताता है। गरीब व्यक्ति को अपनी सांगीतिक संभावनाओं को बेहतर बनाने के लिए धन की आवश्यकता है, जबकि धनी मित्र को संतान प्राप्ति की आशा है। इस विपरीतता में, धनी मित्र के समर्थन के माध्यम से, गरीब व्यक्ति अपनी समस्याओं का समाधान पा सकता है। इसके अलावा, वह अपने इलाज के लिए धन की आवश्यकता को सामाजिक समानता और सम्मान के लिए भी मानता है। धनी मित्र उसकी माँग को समझता है और उसे धन दे देता है, जिससे गरीब व्यक्ति को अपने जीवन में एक नई उम्मीद की किरण मिलती है। इस अनुभव से, हमें यह सिखने को मिलता है कि धन का उपयोग समाज में उत्तम और समर्थन की दिशा में किया जाना चाहिए। इस कहानी में धन की आवश्यकता, गरीबी, और आर्थिक समाधान की चुनौतियों को उजागर किया गया है। धन की अभाव में गरीब व्यक्ति की समस्या और धनी मित्र के सामाजिक उत्तरदायित्व का भी परिदृश्य है।

नामकरण – योगराज प्रभाकर 119

"जिसको भी अपने हिजड़े होने पर दुःख है, वो अपना हाथ खड़ा करें।"[2] यह बोलते हुए, व्यक्ति उन सभी को बुलाता है जिन्हें इस समाज में अपने अस्तित्व से दुखी होने का अनुभव हुआ है। यह

वाक्य एक सामूहिक संवाद की शुरुआत करता है। इसके बाद, एक साक्षात्कार के माध्यम से, सभागार में लोगों से पूछा जाता है कि क्या उन्हें लगता है कि उनके साथ अन्याय हुआ है। एक सामूहिक स्वर उठता है, जो इस परिस्थिति में उनकी भावनाओं को प्रकट करता है। इसके बाद, उनसे विभिन्न प्रश्न पूछे जाते हैं, जैसे कि क्या हिजड़ा उग्रवादी बना है, क्या किसी ने देशद्रोह किया है, क्या किसी ने भ्रूण हत्या की है, और क्या किसी ने साम्प्रदायिक बातचीत को फैलाने का आरोप लगाया गया है। इन सभी प्रश्नों के उत्तर नकारात्मक होते हैं, जिससे एक सामान्यतः संवाद की भावना परिभाषित होती है। आखिरकार, एक प्रश्न उठाया जाता है कि क्या हिजड़ा समाज है या कि लोग। इस सवाल के साथ, सभागार में सन्नाटा छा जाता है और यह दर्शाता है कि कुछ नई परिभाषाएं बन रही हैं। इस प्रश्न से समाज में अपने स्थान को लेकर सवाल उठते हैं और उसकी सामाजिक पहचान पर विचार किया जाता है।

यह कहानी अर्थिक समस्याओं को भी दिखाती है। "हिजड़ा" या "किन्नर" समुदाय के सदस्यों को अक्सर रोजगार और आर्थिक संबंधों में समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उन्हें उच्चतम शिक्षा, रोजगार के अवसर और उचित वेतन की पहुंच में कई बाधाएं आ सकती हैं। इसके अलावा, समाज में उन्हें आर्थिक सहारा और समर्थन की कमी होती है, जिससे उन्हें अधिकारिक आर्थिक स्थिति में पहुंचने में परेशानी होती है। इससे उन्हें आर्थिक संकट और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है।

कृष्ण मनु –टेढ़ी उंगली

यह कहानी सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों एवं अपने अधिकारों के प्रति सामाजिक विरोध करते दिखाई देते हैं, इस कहानी में जब घी सीधी न निकली तो उंगली टेढ़ी करनी पड़ती है यह बताया है। जब ट्रैन बोगी के एक छोर से शोर उठता है। अजीब –अजीब सी आवाज निकलती, अंगुलियां चटकाती, तालियां बजाती छह सात की संख्या से कुछ औरतें पूरी बोगी में फैल जाती हैं। जब वे पैसे मांगने के लिए आती हैं तो सब उनसे डर जाते हैं उनकी अश्लील बातें और बेहूदी हरकतों से पूरी बोगी में अशिष्टता की दुर्गंध फैल जाती है। जिन्हें वे औरत समझ लेता था वह दरअसल वे किन्नर हैं। उन्हें देखकर वह पैसे देकर अपना पिण्ड छुड़ा लेता है। एक किताबी बाबू पैसे देने के बहाने किताब पढ़ने का नाटक कर रहा था सभी किन्नर उसके पास आकर मजाक करने लगे। युवक खुद को तमाशा बनता देख क्रोध से तिलमिला उठता है। वह किन्नरों को डांटने लगता है, वह कहता है कि पैसे नही दिया तो क्या बिगाड़ लोगी मेरा? युवक का रौब उफान पर चला आता है। तो वे लोग उसको सबक सिखाने के लिए वे साड़ी थोड़ा ऊपर उठाकर उस युवक को घेरे में लेने की कोशिश करने लगते हैं। बोगी में बैठी औरतें मुंह छुपा लेती हैं, पुरूष इधर –उधर देखने लगते हैं, युवक हड़बड़ा जाता है। शायद ऐसी विकट समस्या देख उस पर सवार गॉड फादर का दबंग नायक दुम दबाकर भाग खड़ा होता है इस तरह से वे पैसे ऐंठते हुए दिखाई देते हैं। फिर वे लोग पचास का नोट मुट्ठी में दबाकर किन्नर उसकी बधाइयां लेते हुए चले जाते हैं। इसी के साथ तमाशे का पटाक्षेप हो जाता है।

वसूली – डॉ० लता अग्रवाल

सिम्मी और राधे मोहन के बीच बातचीत में, सिम्मी शुरुआत में राधे मोहन की सुंदरता की प्रशंसा करती है और उसकी प्रशंसा करती है। हालांकि, बातचीत में एक अचानक मोड़ आता है जब एक हिजड़ा समूह उनके पास आता है, राधे मोहन से धन मांगता है। सिम्मी हस्तक्षेप करती है, उन्हें धमका कर बताती है कि यदि वे राधे मोहन को परेशान करते हैं तो वह पुलिस को संलग्न कर लेंगी। यह राधे मोहन को परेशानी का संकेत है, और वह उन्हें मांगी गई धनराशि का देने में सहमत हो जाता है, ताकि किसी संभावित परेशानी का सामना न करना पड़े। फिर सिम्मी किसी को कॉल करके बताती है कि राधे मोहन का कर्जा समाप्त हो गया है। यह संवाद चरित्रों के बीच टेंशन भरे संवाद को पकड़ता है और स्थिति में शक्ति के गतिशीलता को उजागर करता है।

यह एक आर्थिक समस्या हो सकती है। वसूली या उधार लेने की स्थिति अक्सर आर्थिक संबंधों में संकट का कारण बनती है, और धन की मांग और धमकियों का सामना करना लोगों को आर्थिक परेशानियों में डाल सकता है। इस संवाद में, राधे मोहन को धन की मांग का सामना करना पड़ता है, और उसे धनराशि का उधार लेने के लिए मजबूर किया जाता है, जिससे उसकी आर्थिक स्थिति पर दबाव पड़ता है।

टार्गेट – मदनलाल श्रीमाली

इस कहानी में, प्रमुख पात्र एक समूह से मिलता है जिसमें वृद्ध किन्नर और उनके साथी होते हैं जो उससे पैसे मांगते हैं क्योंकि उसकी बेटी का जन्म हो गया है। उनका दावा होता है कि उनकी संतान की शादी परंपरागत रूप से पिता के घर में होने वाली है और बेटी के ससुराल वाले किन्नरों

को पैसे देंगे। प्रोत्साहित करने के बावजूद, प्रमुख इन दावाओं का स्वीकार नहीं करता और उन्हें ज़बरदस्ती भगा देता है। अगले दिन, एक हिजड़ा अकेला लौटता है, जो घायल दिखाई देता है और उसके गुरु ने उसे कड़ी से कड़ी पिटाई की है क्योंकि उसने अपना लक्ष्य पूरा नहीं किया। यह घटना हिजड़ा समुदाय की अंतर्निहित और सामाजिक चुनौतियों को उजागर करती है।

2.3 सामाजिक समस्याएँ

किन्नर – सुरेन्द्र कुमार अरोड़ा

यह कहानी व्यक्ति के आंतरिक संघर्ष, सामाजिक असमानता, और प्राकृतिक सौंदर्य के महत्व को उजागर करती है। यह एक यात्री के अनुभवों का वर्णन करती है जो ट्रेन में बैठे हुए हरे-भरे दृश्यों का आनंद लेता है। प्रकृति की सुंदरता और प्राकृतिक वातावरण से उसकी आत्मा को शांति मिलती है। इसके बाद, वह अपने दिमाग में उठे विचारों को कविता के रूप में प्रस्तुत करने का निर्णय लेता है, जो कि प्राकृतिक सौंदर्य की महत्वता को उजागर करता है। लेकिन, उसे एक अन्य साथी जवान के अश्लील और आतंकित करने वाले व्यवहार का सामना करना पड़ता है। उसकी आंतरिक संघर्ष को दर्शाते हुए, किन्नर के रूप में उसका प्रतिस्पर्धी का संदेश, सामाजिक असमानता और अधिकार के बारे में उसके विचारों को चुनौती देता है। अंत में, एक बच्चे के प्रश्न ने उसे उसकी अंतरात्मा के संघर्ष को जागृत किया, जिससे उसने समाजिक न्याय और मानवता के महत्व को समझा। जिससे उसे अपने विचारों और अपने अन्याय के खिलाफ खड़ा होना पड़ता है। यह कहानी मानवता, समाजिक न्याय और प्राकृतिक सौंदर्य के महत्व को प्रकट करती है। यह कहानी एक अद्वितीय तरीके से सामाजिक मुद्दों को उजागर करती है और प्रकृति के साथी के रूप में हमारे संबंध का महत्व बताती है।

कृति – प्रकृति – पूनम डोगरा

"कृति-प्रकृति" एक रोचक कहानी है जो एक किन्नर के माध्यम से समाज में स्थिति की वास्तविकता को सामने लाती है। इस कहानी में, किन्नर की अनूठी पहचान और समाज में अपनी

स्थिति को स्वीकार करने की कठिनाई को उजागर किया गया है। वह अपने आत्मसमर्थन को बढ़ाने के लिए आगे बढ़ता है और अपने सपनों को पूरा करने के लिए साहसी बनता है। मेयर साहेब के भाषण में, उन्होंने समाज को समझने और स्वीकार करने की आवश्यकता को बताया। वे अपने अनुभवों को साझा करके सभी को उत्साहित करते हैं कि वे अपने सपनों की पूर्ति के लिए किसी भी स्थिति में साहसी बन सकते हैं। इस कहानी ने समाज में स्थिति की महत्वपूर्णता और अपने स्वाभिमान को संरक्षित रखने के लिए स्वीकार करने की आवश्यकता को सुनिश्चित किया है।

मैं भी इंसान – पूजा अग्निहोत्री

मधु और स्वाति ने जानकी के घर के सामने एक भीड़ देखी, जो उन्हें हैरान कर दिया की उनकी काकी को पतोहू होने वाला है। दोनों ने तारीफ भी की कि बच्चा हुआ है, लेकिन उन्होंने भी यह उम्मीद की कि यह एक बेटा है, क्योंकि उन्हें ज्यादा शोर-शराबा नहीं सुनाई दे रहा था। वे दोनों जानकी के घर गये और वहाँ देखा कि महिलाएं रो रही हैं और बहु को कोस रही हैं। इंस्पेक्टर ने उनसे कारण पूछा और एक किन्नर ने उन्हें बताया कि यह बच्चा उनका है, लेकिन उन्हें देने को तैयार नहीं है। इससे स्पष्ट हुआ कि बच्चा एक किन्नर है, जिसके कारण उन्हें उसे अपनाने की इच्छा नहीं है। यह कहानी किन्नरों के जीवन को विवरणित करती है, जो समाज में अभिवृद्धि के लिए संघर्ष करते हैं। एक दिन, इंस्पेक्टर एक किन्नर के घर में एक नवजात शिशु को देखता है और उसकी पहचान के बारे में पूछताछ करता है। किन्नर के बाल और जवाब देने पर, इंस्पेक्टर का अचानक इस विषय पर उत्तर देने का सामना किया जाता है कि वह खुद भी एक किन्नर है। इससे

सभी को आश्चर्य और चौंका लगता है। यह कहानी समाज में सामाजिक समर्थन और समानता के महत्व को बोध कराती है।

औरों से बेहतर – दीपक मशाल

कहानी "मधुबाला" एक अत्यंत दुखद और सोचने पर मजबूर करने वाली कहानी है जो एक हिजड़े के अत्याचारिक घटना के बारे में है। मधुबाला की मौत के बाद, उसकी सखियाँ, डिम्पल और शबनम, न्याय के लिए उठती हैं और उसकी मौत का बदला लेने का संकल्प करती हैं। उनका साहस और निष्ठा उन्हें उस अधूरी न्याय की तलाश में बढ़ते कठिनाईयों का सामना करने के लिए प्रेरित करता है। इस कहानी के माध्यम से, सामाजिक न्याय, मानवाधिकार, और साहस के महत्वपूर्ण संदेश साझा किए जाते हैं। कहानी में, विभिन्न व्यक्तियों के संघर्ष, उत्पीड़न, और न्याय के खोज का विवरण दिया गया है, जो पाठकों को गहराई से विचार करने पर मजबूर करता है। इसके अलावा, कहानी में समाज के नियमों, धार्मिक मान्यताओं, और व्यक्तिगत संघर्षों को भी प्रकट किया गया है, जो पाठकों को अपने आसपास के जीवन में अधिक समझाने के लिए प्रेरित करता है।

हॉट हॉट – जितेन्द्र कुमार गुप्ता

यह कथा एक ट्रेन में हो रहे घटनाक्रम को विस्तार से वर्णित करती है, जो समाज में आधुनिकता और समर्थन के विषयों पर ध्यान केंद्रित करती है। चार-पाँच सजे-धजे किन्नर यात्रियों से पैसे माँग रहे हैं, जो उनके साथी यात्रियों को परेशान कर रहे हैं। इसके बावजूद, एक यात्री अपने साथी का समर्थन करता है और उसे आत्मविश्वास देता है। यह कहानी सामाजिक अन्याय को

उजागर करती है और सहानुभूति और समर्थन के महत्व को बताती है। इसके माध्यम से, लेखक समाज में सहयोग और गरिमा के प्रति जागरूकता बढ़ाता है. इस कहानी में, ट्रेन के कम्पार्टमेंट को समाज का छोटा सा प्रतिबिंब माना गया है, जहां विभिन्न पृष्ठभूमियों और दृष्टिकोणों के व्यक्ति आपस में संवाद करते हैं। कहानी का आरंभ एक समूह ट्रांसजेंडर यात्रियों के साथ होता है, जो साथी यात्रियों से धन माँग रहे हैं, जिससे उनमें विभिन्न प्रतिक्रियाएँ पैदा होती हैं। कुछ लोग उनके प्रति नापसंदी और हास्य का अभिव्यक्ति करते हैं, जबकि दूसरे दृश्य के साक्षी बने रहते हैं। तनाव के बीच, एक यात्री उत्कृष्ट रूप से सहानुभूति और समझ का ध्वनि है। प्रारंभिक संकोच के बावजूद, यह व्यक्ति ट्रांसजेंडर यात्रियों के लिए समर्थन का अभिवादन करता है, जिससे उनके सामाजिक स्थिति में बदलाव की आवश्यकता को उजागर किया जाता है। इससे उन्होंने समाज में समावेश और सम्मान की महत्वपूर्णता को उजागर किया है।

कहानी मनुष्य अन्तराक्षी और सामाजिक गतिविधियों में शक्ति के गुणात्मक रूप को उजागर करती है। उदाहरण द्वारा व्यक्ति के द्वारा ट्रांसजेंडर यात्रियों के प्रति अनुभूति और समर्थन की भावना को दर्शाते हुए, यह कहानी समाज में सामावेशिकता और सम्मान की आवश्यकता को सार्थकता देती है। अंततः, यह समाज में एक अधिक समावेशी और न्यायसंगत संस्कृति के लिए अपील करती है, जहां विविधता का जश्न मनाया जाता है और हर किसी को गरिमा और सम्मान के साथ व्यवहार किया जाता है।

उपहास – डीडी मणि त्रिपाठी

शांता किन्नर की कहानी एक समाजिक संघर्ष को दर्शाती है, जिसमें वह अपने असामाजिक स्थिति के कारण ताने और उलाहनों का सामना करती है। लेकिन, उनकी पढ़ाई और संवेदनशीलता उन्हें अन्याय के खिलाफ उठने की साहसिकता देती है। जब शहर में अपराधियों का हमला होता है और बच्ची को अपहरण का प्रयास किया जाता है, तो शांता किन्नर का साहस और निर्णायकता सामने आता है। उनकी क्रिया न केवल बच्ची की जान बचाती है, बल्कि समाज में उनकी स्थिति को भी परिवर्तित करती है। इस घटना से मुहल्ले वालों की नजरें भी उन पर पूरी तरह से बदल जाती हैं। उनकी उत्कृष्टता और साहस से, वह समाज में एक महत्वपूर्ण और सम्मानित व्यक्ति बन जाती हैं, जो अपने समूह के लिए गर्व का स्रोत बनती हैं। इस प्रकार, शांता किन्नर की कहानी सामाजिक संघर्ष, साहस और समाज में परिवर्तन के महत्वपूर्ण संदेश को साझा करती है।

नपुंसक – डॉ० नीना छीब्बर

यह कथा रेलवे कोच में घटित हुई घटना के बारे में है, जिसमें एक टिकट चेकर और यात्रियों के बीच एक असंतोषपूर्ण इंटरेक्शन दिखाया गया है। टिकट चेकर की आवाज में गंदे शब्दों का प्रयोग, यात्रियों की भड़की आवाज, और समाज में उत्पन्न असुरक्षित माहौल का वर्णन किया गया है। जब वह दूसरे कोच में भागे, तो सभी यात्रियों ने उन्हें चुपचाप देखा और उनकी कार्रवाई को प्रशंसा की। विमलाबाई ने भी अपनी आवाज में स्वयं को अभिव्यक्त किया और टिकट चेकर के खिलाफ उत्तेजित होकर कार्रवाई की इस कथा के माध्यम से लेखक ने रेलवे में होने वाली

अनियमितताओं और लोगों के बीच उत्पन्न सामाजिक और मानसिक दरारों को प्रकट किया है। यह घटना उन आम लोगों की कहानी है जो रेलवे सफर के दौरान अनुभव करते हैं और कैसे समाज में उत्पन्न आपसी टकरावों से गुजरना पड़ता है।

भेद – पवित्रा अग्रवाल

यह कथा एक महिला बेला के बारे में है, जो अपने घर के दरवाजे पर तालियों से सूचना देती है कि कोई आ रहा है। उसके बाद, एक विषय पर बातचीत होती है जिसमें वह अपनी स्वीकृति और समर्थन देने के लिए तैयार होती है। यह बातचीत में वह दूसरे व्यक्ति के पति की मौत के बारे में जानकारी देती है और उनके अवस्था के बारे में। वह उसके बच्चों की स्थिति और परिस्थितियों को भी बताती है। बेला अपने इनसानियत के नाते समर्थन का भाव व्यक्त करती है और दूसरे के दुख को साझा करने का संकेत देती है। इस कथा में नेतृत्व, समर्थन और मानवता के महत्व को बोलबाला गया है। इस कथा में, माँजी और बेला के बीच एक भावनात्मक और संवेदनशील संवाद होता है। माँजी अपने दुःख को साझा करती है, जिसमें उन्होंने बताया कि उनका पहला बच्चा किन्नर था और उसे अस्पताल में छोड़ दिया गया था। बेला, जो भी एक किन्नर के माता है, भी इस सच्चाई को जानती है, और उनके दुख को समझती है। इसके बावजूद, वह खुद भी भावुक होती है और आँसूओं से भरी आँखों से लौट जाती है। इस कथा में माँजी और बेला के बीच एक साथ जीवन की असलियत का जोरदार एवं संवेदनशील संवाद दिखाया गया है।इस प्रकार, बेला की कहानी हमें न केवल मानवीय संबंधों की महत्वपूर्णता को समझाती है, बल्कि हमें सामाजिक जागरूकता, सहानुभूति, और नेतृत्व के महत्व को भी समझाती है। उनकी कहानी

से हमें यह सिखने को मिलता है कि हमें अपने समुदाय के सदस्यों के प्रति समर्थन और सहानुभूति दिखाने की आवश्यकता है, ताकि हम समृद्ध और समाज में सामंजस्य बनाए रख सकें। यह संवाद एक घर के द्वार पर घटित होता है, जहां दरवाजे की घंटी बजने के बाद मालकिन द्वार खोलती है। यहाँ, एक संवेदनशील संवाद व्यक्त होता है जिसमें मालकिन ने दरवाजे खोलते हुए तीव्रता और कटुता से अपने भावों को व्यक्त किया। उनकी चिढ़ की भावना और सवाल उसकी परिस्थिति और उसकी भावनाओं को प्रकट करते हैं। उसकी बातें व्यक्तिगत दुख और असमंजस को दर्शाती हैं।

नरपिशाच – दिव्या राकेश शर्मा

इस कहानी में, संगीता की जीवन की संघर्षनात्मक यात्रा को गहराई से व्यक्त किया गया है। उसका यह संघर्ष न केवल उसके व्यक्तिगत संघर्षों को दिखाता है, बल्कि सामाजिक मुद्दों को भी उजागर करता है जो महिलाओं को उनके अधिकारों के लिए लड़ने के रास्ते में रोकते हैं। संगीता की माँ बनने की चुनौती, जिसमें उसे अपने बच्चे को बचाने के लिए खुद को जोखिम में डालना पड़ता है, उसकी महत्वपूर्ण पहलू है। वह अपने धैर्य, साहस और प्रेम के साथ अपने बच्चे की रक्षा करती है, जो उसके सामाजिक और परिवारिक परिस्थितियों के खिलाफ होती है। कहानी में, संगीता की स्थिति से उनके परिवार के सदस्यों की व्यावसायिकता और निष्ठा का परीक्षण होता है। उनका समर्थन और उनकी इच्छा उसे उसके लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने में मदद करती है। इस कहानी में उजागर होने वाले सामाजिक मुद्दे, जैसे लिंग भेदभाव और महिलाओं के अधिकारों की प्रतिबद्धता, हमें समाज में न्याय और समानता की अहमियत को विचार करने के लिए प्रोत्साहित

करते हैं। इसके अलावा, यह हमें यह भी सिखाता है कि माँ का प्यार और संघर्ष उनके परिवार के लिए कितना महत्वपूर्ण होता है।

बदलाव – सविता मिश्रा

शीला ने बंसी को समझाने की कोशिश की कि वह किसी को भी उनके बाहरी रूप के आधार पर ना जज्बाती हो और ना ही उनके साथ अन्याय करे। उन्होंने उसे समझाया कि जीवन में हर किसी का अपना अनुभव और संघर्ष होता है, और हमें उनका सम्मान करना चाहिए। शीला ने यह भी बताया कि निशी के जैसे व्यक्ति भी समाज का हिस्सा हैं और उन्हें भी समानता और सम्मान का अधिकार है। इससे, शीला ने बंसी को सामाजिक सहयोग, समर्थन, और समाज में समर्थ नागरिक बनने के लिए प्रोत्साहित किया। उनकी बातें बंसी को निशी जैसे व्यक्तित्व के महत्व को समझने और समर्थ होने की प्रेरणा देती हैं। इस प्रकार, शीला ने अपने बेटे को समाज में सही मानसिकता के साथ सही कार्रवाई करने की महत्वपूर्ण बातें सिखाई। इस कहानी में सामाजिक समस्या को दर्शाया गया है। यहाँ एक व्यक्ति को उसके बाहरी रूप के आधार पर ना जज्बाती होने का सामना करना पड़ता है, जिससे सामाजिक समानता और समर्थन की कमी का पता चलता है। इसके अलावा, कहानी में भेदभाव और न्याय की अभावीता भी प्रकट होती है।

शुकर है बेटा ना हुआ– ज्योति जैन

यह कहानी एक शहर की शांति के बारे में है जो पिछले कुछ वर्षों से धारावाहिक आतंकवाद और धार्मिक हिंसा के घातक प्रकरणों का शिकार हो गया है। इस आतंक की भयंकरता ने लोगों को डरावने और असुरक्षित महसूस कराया है। कहानी के मुख्य पात्र, दो बेटे, अपने पिताओं की

सलाह के विपरीत, शहर में सुरक्षा में निकल जाते हैं, जो एक बहुत जटिल और खतरनाक परिस्थिति में होते हैं। जब वे वापस लौटते हैं, तो उन्हें पता चलता है कि उनका शहर अब वहाँ सुरक्षित नहीं है जैसा पहले था। माता के दुखद मन को देखते हुए, उनके मन में अनेक प्रश्न उठते हैं और उन्हें लगता है कि क्या अब उनके बच्चे भी सुरक्षित हैं। उनकी सारी उम्मीदें उनके बच्चों के लौटने के साथ जुड़ी हैं। कहानी में एक और अहम पात्र शबनम है, जो एक समाजसेवी है और उसका मिशन अपने शहर को फिर से सुरक्षित बनाने का है। उसके विचार और प्रयास शहर को फिर से एक स्थिर और अधिक सुरक्षित जगह बनाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। कहानी में विविध पात्रों के माध्यम से, इसे एक संघर्ष के पारित और उम्मीदवार कथा के रूप में पेश किया गया है, जो हमें यहाँ कार्य करने के लिए प्रेरित करता है कि अपने समाज में परिवर्तन लाने के लिए कैसे योगदान दें।

बद्दुआ – सोनी ललित मिश्र

केशव का अनुभव बस में किन्नरों से मिलने वाली घटनाओं को दिखाता है। वह हर बार बस में बैठने पर दस रुपये का नोट निकालकर उन्हें देता है, लेकिन इस बार उसकी जेब में नोट नहीं मिलता। यहाँ एक किन्नर उसे अपना हाथ बढ़ाता है, वसूली करते हुए। केशव के पास ना होने पर, वह उससे सवाल करता है कि क्यों वहे उसे पैसे देने चाहिए। इस बातचीत में, केशव बड़े ही उत्साहित होकर किन्नर के साथ धर्म, धन, और जीवन के महत्व को लेकर बातचीत करता है। उसकी वाणी में सही ज्ञान और साहस के आलोक में, वह परिस्थितियों को पूरी तरह से प्रभावित करता है। उसके बयान ने बस में मौजूद अन्य यात्रियों को भी सोचने पर मजबूर किया, जिन्होंने

फिर अपने पैसे वापस ले लिए और किन्नर चुपचाप बस से उतर गया। इस घटना से, केशव ने न केवल अपनी संवेदना दिखाई, बल्कि उसने अन्य लोगों को भी विचार करने पर मजबूर किया और उन्हें धार्मिक और मानवीय न्याय की महत्वपूर्णता को समझाया। इस कहानी में सामाजिक समस्या को दर्शाया गया है। किन्नर समुदाय के सदस्य के रूप में, किन्नर किशोर जो केशव को पैसे वसूलने की कोशिश करता है, वास्तव में समाज में मान्यता और समानता के साथ जुड़े अपराधीमान का प्रतिनिधित्व करता है। इससे उसका अनुभव किन्नर समुदाय के साथ विभिन्न सामाजिक प्रतिबंधों और अन्याय को दिखाता है। इसके अलावा, केशव के जवाब देने के तरीके से भी समाज में मौजूद सामाजिक बुराइयों और असमानता को दिखाया गया है। उनकी बातचीत से वह बस में मौजूद लोगों को सोचने पर मजबूर करती है और समाज में धार्मिक और मानवीय न्याय की महत्वपूर्णता को समझाती है।

विक्षिप्त किन्नर –डॉ. अंजिव अंजुम

इस कहानी में सुनीता जो एक किन्नर है उसकी दर्दनाक कहानी को दर्शाया है।वह बेशर्मी बेहयाई से सबको बेआबरू करती है और बाद में दुआओं की पोटली आशीर्वाद देती दुआएं देती,नोटों को हाथों से छीनकर दाता के गालों को उन्हीं की उंगलियों से छूकर होठों से बेशर्मी से चूमती और दुकानदारों और दाताओं को विभिन्न पद्नामों और उच्च संबोधनो से पुकारती दुकान दुकान पर जा रही थी। तभी एक बेकाबू कार की टक्कर से सुनीता ख़ून से लथपथ एक बोरे की तरह पड़ी थी। उससे न खड़ा हुआ जा रहा था न ही वह ताकत ही लगा पा रही थी बदन से खून बहता जा रहा था,उसकी हड्डियाँ भी फ्रैक्चर था। वह सिर्फ़ कराह और सहायता की पुकार ही

अपने मुंह से निकाल पा रही थी। उसे उम्मीद थी कि शायद सभी उसे अस्पताल पहुंचा देंगे,लेकिन किसी ने भी उसकी सहायता नही की। उसे लगता था कि वे सब अपने हैं परन्तु वह उम्मीद एक भ्रम ही था। थोड़ी देर पहले वह सभी को आशीर्वाद दे रही थी, दुआएँ लूटा रही थी। यह सब व्यर्थ था,कोई भी उसकी मदद करने के लिए नहीं पहुंचा था। वह किन्नरों के वास्तविक हालात से परिचित हो गई थी। जहाँ वह स्वयं को अभिशाप किन्नर मान रही थी और दूसरी ओर खड़ी फ़ौज को 'विक्षिप्त किन्नर ' के रूप में पहचान गई थी। यह कहानी सामाजिक परिस्थितियां को दर्शाती हैं। उसी के साथ लोगों की मानसिकता को दर्शाया है। उसी के साथ लोगों की पत्थर दिल, क्रुरता को भी दर्शाया है जो एक गरीब किन्नर की मदद करने से मुकरा जाते हैं। वे एक विक्षिप्त किन्नर के रूप में दिखाई देते हैं अर्थात् पागलों की किन्नर के रूप में दिखते हैं।

नई माँ – राजकुमार निजात

यह कहानी एक दस साल की बच्ची के जीवन के विषय में है, जो घिनौने रेप का शिकार हुई थी। उसे अस्पताल में दो महीने तक इलाज के बाद ठीक होकर दूसरे बालिका गृह में भेजने का निर्णय लिया गया था। वहां उसे एक किन्नर ने गोद लेने की इच्छा से आया। बाल कल्याण परिषद ने उससे पूछा कि वह उसे गोद में क्या करेगी, तो उसने कहा कि वह उसे पालेगी, उसे पढ़ा-लिखा करेगी, एक अच्छा नागरिक बनाएगी, उसे माँ जैसी दुलार और पिता जैसा प्यार देगी, उसकी सभी ख्वाहिशें पूरी करेगी, उसकी हर तरह से देखभाल करेगी, और उसे ब्याह करेगी। परंतु, जब उससे पूछा गया कि क्या वह इस नई माँ के साथ जाना चाहेगी, तो उसने कहा कि वह किसी भी जगह भेज दी जाए, लेकिन उसे ऐसे बालिका गृह में नहीं भेजना चाहिए जहां सफेदपोश पुरुष और फीकी

मुस्कान वाली बर्बर औरतें रहती हैं। इसके माध्यम से कहानी दिखाती है कि बच्ची ने अपनी दुखद गुजारी हुई ज़िंदगी के अनुभव से अपने मानवीयता और सुरक्षा की पहचान कर ली है, और वह अपने भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए सजग है।

कोढ़ – सुमित कुमार

यह कथा शहर के एक प्रसिद्ध अस्पताल के बारे में है, जहां आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। एक घायल व्यक्ति घायल था जो गोली लगी थी। उसके हालात को देखकर डॉक्टरों को उसका इलाज करने के लिए एम्बुलेंस वाले को बुलाया गया। जब उसे जाँच किया गया, तो पाया गया कि उसके शरीर में कई गंभीर चोटें थीं और उसका हाल गंभीर था।

डॉक्टरों के बीच एक विवाद उठा कि घायल को किस वार्ड में रखा जाए, क्योंकि न तो वह महिला था और न ही मर्द। बहस के बाद, मुख्य डॉक्टर ने उसके अवस्था को देखते हुए कहा कि उसे कहाँ रखा जाए, क्योंकि कोई वार्ड उसके लिए उपलब्ध नहीं था।

घायल व्यक्ति ने डॉक्टरों को एक अजीब सा दृष्टिकोण से देखा, और फिर अपनी सांसों को बटोरते हुए डॉक्टरों को हिचकियाँ सुनाईं। इसके बाद, उसके मुंह से खून की एक जीवित लकीर निकली, जो बिल्कुल इनसानों जैसी थी। इस संदर्भ में, कथाकार ने मानवता और निःस्वार्थ भावना के प्रति अपना समर्थन व्यक्त किया है। कथा मानवता और संवेदनशीलता के महत्वपूर्ण सिद्धांतों को प्रकट करती है, जो अस्पताल में इलाज करने वाले सभी लोगों के लिए लागू होने चाहिए। इसके अलावा, यह कथा उन सामाजिक समस्याओं पर ध्यान दिलाती है जो विभिन्न वर्गों और

लैंगिक समूहों के लोगों को अस्पताल में समान रूप से उपचार नहीं मिलने के लिए कभी-कभी सामना करना पड़ता है।

बधाइयाँ–रश्मि तारिका

कहानी में रोजी और मधु के बीच एक वार्ता है, जहां रोजी खुशियों की बधाइयाँ मिलने पर खुश होती है और खरीददारी करने का सुझाव देती है। मधु, एक किन्नर, इसे समझाते हुए प्रश्न करते हैं कि क्या उनकी जिंदगी केवल दूसरों की खुशियों में ही समाप्त हो जाएगी। रोजी को यह समझाते हुए कि उनकी पहचान उनके साथ ही है, मधु उन्हें समझाते हैं कि उनकी प्रतिष्ठा उनके अच्छे कामों में है, और बधाइयों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस तरह, कहानी में एक सांविधानिक और सामाजिक मुद्दे को उठाते हुए एक संवाद के माध्यम से व्यक्ति के स्वाभिमान और समाज में उनकी स्थिति की महत्वपूर्णता को उजागर किया जाता है। यह एक सामाजिक संदेश देती है कि व्यक्तिगत और सामाजिक पहचान का महत्व है और हर किसी के अच्छे कामों को महत्व दिया जाना चाहिए।

फ़िर से मत आना – डॉ० रामकुमार घोटड़

यहाँ एक विषय के बारे में बताया गया है जहाँ एक व्यक्ति ने अपने पिता को दफनाने के लिए समाज के निर्देशन में दिन में ही उनका अंतिम संस्कार कर दिया, लेकिन रात में उनकी कब्र संभालने के लिए वापस चला गया। उसे उसके गाँव में आदमियों की गतिविधियों का सामना करना पड़ा, जहाँ वह देखा कि लोग उसके पिता की लाश को जूतों से मार रहे हैं और फिर उसे कब्र में दफना दिया। इसके बाद, वह एक और व्यक्ति से मिलता है जिसे वह पहचानता है, और

उसे अपने नाम से पुकारता है। यह वाक्यांश एक संक्षिप्त सारांश की भूमिका का अंश है।इस वाक्यांश में, एक व्यक्ति दूसरे को दोष देता है कि वह अपमानजनक व्यवहार क्यों कर रहा है, लेकिन उत्तर में एक बाई उसे समाज की परंपरा का महत्व बताती है। वह कहती है कि इस तरह का व्यवहार समाज की परंपरा में शामिल है, और यह उनके लिए स्वाभाविक है। वह बताती है कि यह एक संदेश है कि वे जूतों से पीटकर जाने वाले को समझाते हैं कि वे अपनी परंपरा और मूल्यों का सम्मान करें और अपनी जिम्मेदारियों को संभालें। इस कहानी में यह दर्शाया गया है कि कई समाजों में परंपरागत नीतियों और अपमानजनक व्यवहार की स्वीकृति होती है, जो उत्पीड़न और अन्याय को बढ़ावा देती है। इससे हमें समाज में सुधार की जरूरत का अंदाजा होता है।

अपनी अपनी जिंदगी – डॉ० रामकुमार घोटड़

मोहल्ले की दूसरी महिला छोर की कहानी में गहराई से उसकी सामाजिक स्थिति और भावनाएं उजागर होती हैं। गरीबी के कारण उसने जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना किया। समाज में उसकी असहायता और गरीबी ने उसे सोचने पर मजबूर किया कि वह अपने जीवन को कैसे आगे बढ़ाएगी। उसके द्वारा चुने गए आत्महत्या का रास्ता सिर्फ उसके व्यक्तिगत दुख को ही नहीं दर्शाता, बल्कि मोहल्ले की सामाजिक संरचना और उसमें मौजूद समाजिक दबाव भी उसकी कहानी में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उसकी आत्महत्या का परिणाम सिर्फ उसके निजी जीवन को ही नहीं प्रभावित करता, बल्कि समाज में एक गहरी सोच के साथ जागरूकता पैदा करता है कि समाज कैसे अपने सदस्यों को सहारा देने के लिए आगे बढ़ सकता है।मालती की कहानी में गहराई से उसके जीवन की कठिनाइयाँ और अवसाद दिखते हैं। उसकी विवाह की

अपेक्षाओं और समाज की दबावों के बीच, वह स्वयं को अकेला और असहाय महसूस करने लगी। उसके पति और समाज द्वारा उसके ऊपर लगाए गए शंकाओं और आकलनों के कारण, उसने अपने जीवन के लिए आत्महत्या की राह चुनी। उसकी दुखद कहानी से हमें समझ मिलता है कि किस प्रकार समाज में स्त्रियों के जीवन की स्वतंत्रता और स्वाधीनता की कमी कितना बड़ा मुद्दा है। उसकी मौत के बारे में बात करते समय, उसके उत्तराधिकारियों को उसके जीवन में से उसे निकालने के बजाय, उसके साथ संवेदना और सहानुभूति बढ़ाने की आवश्यकता होती है। उसके दुःख को सुनते हुए, हमें उसकी आत्महत्या के पीछे छिपी भावनाओं और समाज की चुप्पी को खोलने के लिए जागरूक होने की आवश्यकता है। उसकी मौत के बाद, हमें उसके लिए भगवान की कृपा की प्रार्थना करने के साथ-साथ, उसके जैसे विचारशीलता और आत्मविश्वास वाले लोगों के लिए आगे बढ़ने का संकेत मिलता है।

भ्रांतियां – रेखा मोहन

एक स्कूल में, एक अनोखा और सामाजिक दृश्य देखकर सभी अचंभित हो गए। दो किन्नरों के साथ एक दस साल की लड़की का स्कूल में प्रवेश होना सभी के लिए एक अनोखी घटना थी। लोगों को यह देखकर हैरानी हुई और वे स्कूल के स्टाफ रूम में उठी हलचल के बारे में बात करने लगे। स्कूल के विद्यार्थी भी उत्सुकतावश लग गए और उन्हें देखकर आश्चर्य हुआ। एक दिन, स्कूल में किन्नरों ने एक लड़की को नाचते हुए लाया। इस घटना ने सभी को हैरान कर दिया और कुछ छात्र छुपने की सोच ली, ताकि वे पकड़े न जाएं और उन्हें अपने साथ बना लिया जाए। किन्नरों ने स्कूल प्रिंसिपल के पास जाकर एक लड़की का एडमिशन करवाने का फैसला किया,

और उन्होंने भरने वाले सभी खर्चे का दायित्व लिया। प्रिंसिपल ने पूछा कि लड़की के माता-पिता कौन हैं, तो किन्नरों ने अपने गरीब ड्राइवर को पुकारा और उन्होंने बताया कि वे इस लड़की की अदोप्शन कर रहे हैं। वे उसकी पालन-पोषण की जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार हैं और सामाजिक उत्थान के लिए योजनाएं बना रहे हैं। इस प्रकार, उन्होंने स्पष्ट किया कि उनका उद्देश्य उसे सिर्फ एक पारिवारिक वातावरण प्रदान करना है.यह कहानी एक सामाजिक समस्या को उजागर करती है जो हमारी समाज में किन्नरों के साथ भेदभाव और असमानता की है। इसके साथ ही, यह एक संदेश भी देती है कि प्रेम और समर्थन से एक बच्चे को पालने में किसी भी सम्प्रदाय के लोग सक्षम हो सकते हैं।

असली हिजड़े– सुधीर कुशवाह

कथा में, सुरेश और उनके परिवार की स्थिति एक महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दे को प्रकट करती है, जो लिंग और जाति के स्थितिकों को चुनौती देता है। उनका अनुभव उनके परिवार और समाज के लिए एक मार्गदर्शक साबित होता है, जो समझ और समाजिक स्वीकृति के माध्यम से अपने बेटे की शादी को सफल बनाता है। इस कथा में, सुरेश ने उचित समय पर और सही तरीके से समाजिक असमानता को सामने लिया। उन्होंने अपने बेटे की शादी में उनके समर्थन का संदेश दिया, जिससे समाज में समर्थन और समझ का माहौल बना। इसके अलावा, कथा में उस व्यक्ति का उल्लेख है जो सुरेश के परिवार को हिजड़े के रूप में निर्धारित करता है, और सुरेश के परिवार की उत्तरदायित्व और समझ दिखाने का मौका प्रदान करता है। इस प्रकार, उसने उन्हें इनसान के रूप में स्वीकार किया और उनके साथ सम्मान से व्यवहार किया, जिससे समाज में सामाजिक

समर्थन और एकता का माहौल बना। कथा ने न केवल सुरेश के परिवार के साथ ही उनके समाज को भी एक सामाजिक संदेश दिया कि मानवता और सम्मान कोई चुनौती नहीं होती, और समाज में सभी को समान रूप से समाहित किया जाना चाहिए।

प्रेम की भूखी– सीमा जैन

यह कहानी एक व्यक्ति के नए घर में जाने के बाद हुई घटनाओं पर आधारित है। जब वह दरवाजे पर पहुंचता है, उसे नई स्थिति का सामना करना पड़ता है। दीदी उसे नए घर की राहत के बारे में संदेह के बारे में बताती है, लेकिन वह फिर भी नए घर में अपनी स्थिति को स्वीकार करने के लिए तैयार हो जाता है। वह पैसे की कमी के बावजूद भी दीदी के साथ अपनी जिम्मेदारी को समझता है और उन्हें उसकी सहायता की आवश्यकता होती है। इस कहानी में सामाजिक मुद्दों, उत्साह और परिवार के महत्व को उजागर किया गया है।

अंत से प्रारंभ– सतविंद्र कुमार राणा

यह कहानी दो युवकों के बीच एक गहरी और सार्थक बातचीत के बारे में है, जो उनके जीवन में महत्वपूर्ण फैसलों और भविष्य की दिशा में मददगार साबित होती है। दोनों युवकों के बीच आत्म-विश्वास, सपने, और आगे बढ़ने की इच्छा के विषय में विवाद होता है, लेकिन उनकी बातचीत उन्हें एक-दूसरे के साथ जुड़े रहने की भावना को स्पष्ट करती है। इस कहानी में भाषा शैली का प्रयोग उनकी भावनाओं को समझने और उनके बीच के गहराई को समझने में मदद करता है।इस कहानी में दो युवकों के बीच की बातचीत और उनके बीच के विवाद समाजिक समस्याओं को दर्शाते हैं। उनके भविष्य की दिशा में विवाद उनके समाजिक परिवेश और

सामाजिक मान्यताओं को भी प्रभावित कर सकता है। इसलिए, इस कहानी में समाजिक समस्या का संवाद दिखाया गया है।

नाज़ुक थाली– रोहित शर्मा

यह कहानी एक परिवार के आसपास घटित होने वाले एक घटना को विवरण करती है। नई बहु के आने से परिवार में खुशियां होती हैं, लेकिन एक दिन ऑटो में बैठे लोगों ने धूमधाम से देखी जाती हैं। उन्हें नई बहु का नेग मिलता है, जिसके लिए उन्हें पैसे देने की आवश्यकता होती है। सूरज की पत्नी, शकुंतला, ने बच्चे को देखकर अत्यंत भावुक होकर रोने लगी, जो सभी को प्रभावित करता है। अंत में, एक औरत नई बहु को अपने परिवार से जुड़े रिश्तों के बारे में संवेदनशीलता से बताते हुए, उसे नेग नहीं देने के लिए उत्साहित करती है। यह कहानी परिवार और समाज में सहजता और संवेदनशीलता के महत्व को दर्शाती है।

बदलते समय– सतीश राठी

कहानी में विभा को चारों ओर किन्नरों के दबाव और उनकी माँगों का सामना करना पड़ता है। पहले उन्हें डर का सामना करना पड़ता है, लेकिन फिर उनका साहस और उनकी समस्याओं का सामना करने की क्षमता प्रदान करती है। विभा की निर्णायकता और सामाजिक नेतृत्व की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, जो उन्हें अपने परिवार और समाज में उच्चतम मानकों का पालन करने के लिए प्रेरित करती है। कहानी में किन्नरों के साथ संघर्ष के माध्यम से सामाजिक न्याय और समर्थन की महत्वपूर्णता को उजागर किया गया है।इस कहानी में मुख्य समस्या यह है कि विभा को समाज में किन्नरों के दबाव और उनकी माँगों का सामना करना पड़ता है। इससे

सामाजिक न्याय और समर्थन की महत्वपूर्णता को उजागर किया गया है, जिससे विभा को अपने साहस और संज्ञाना के माध्यम से समस्याओं का सामना करने की क्षमता प्राप्त होती है।

खाने लायक – शोभना श्याम

कहानी में दो व्यक्तियों के बीच एक विवाद है जो चर्चा के माध्यम से प्रकट होता है। एक व्यक्ति चक्की की सफाई और अनाज पीसने की तारीफ करता है, जबकि दूसरा उसे अवांछित और कठिनाईयों के रूप में देखता है। उनकी विवादित विचारधारा दिखाती है कि वे समाज के कामकाज और प्रथाओं को कैसे देखते हैं। यह कहानी समाज में भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों को संवाद करती है और उसके पाठकों को विचार करने के लिए प्रेरित करती है।

डरपोक हिजड़ा –शिखर चंद जैन

कहानी एक विवादित मां के चारों ओर घूमती है, जो अपने बेटे को आतंकियों से बचाने के लिए स्थानीय विधायक की मदद की मांग कर रही है। उन्होंने अपनी दुखभरी और उत्सुकता से उसके सामने अपनी चिंता और क्रोध को व्यक्त किया, उसे कहते हुए कि अपने बेटे को बचाने के लिए सेना या सीआरपीएफ के जवानों को भेजा जाए। विधायक ने उन्हें आश्वस्त किया कि उन्होंने पहले ही एक काबिल अधिकारी सुकांता को भेज दिया है, जो कई सफल ऑपरेशनों में शानदार प्रदर्शन कर चुका है। धीरे-धीरे पता चलता है कि आशु का बेटा सुरक्षित है, क्योंकि सुकांता और उसकी टीम ने आतंकियों को निष्क्रिय कर दिया है। विधायक आशु से कहते हैं कि वह "हिजड़ा" जैसे अपमानजनक शब्दों का उपयोग न करें, क्योंकि सुकांता खुद एक हिजड़ा पुलिस इंस्पेक्टर है, समाज में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के प्रति समर्थन और सम्मान की आवश्यकता

को जाहिर करते हुए। कहानी भाषा और शैली का उपयोग करके व्यक्तिगत और सामाजिक मुद्दों को प्रस्तुत करती है, साथ ही समाज में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए समाजिक सम्मान और स्वीकृति को बढ़ावा देती है।

गाली – डॉ० शील कौशिक

कहानी में 'किन्नर सदन' का वर्णन है, जहां किन्नर समुदाय के लोग एक धनी सेठ के आगमन का स्वागत करने के लिए तैयार होते हैं। सेठ उन्हें हजार रुपये देता है, जिससे कुछ किन्नर आकर्षित होते हैं, लेकिन अन्य कुछ नाराज होते हैं क्योंकि उन्हें अधिक पैसे की उम्मीद थी। वे उसे नाराजगी से किन्नर होने का आरोप लगाते हैं और उसे उनके साथ हिस्सेदारी में लेने के लिए कहते हैं। इससे पहले कि विवाद बढ़ जाए, एक बच्चा औरत की जगह उसके हाथों में दिए गए पैसों को पकड़ते हैं। सेठ का उत्तर देते समय उनके साथी उन्हें विवाद के लिए निन्दा करते हैं। सेठ अपने निर्णय पर दृढ़ रहते हैं, और उनकी बेटी को लेकर वे बहुत हानि उठाते हैं। इस कहानी में सामाजिक समस्याओं का गहरा अन्वेषण किया गया है।

कितने नर– 'शब्द मसीहा' केदारनाथ

कहानी में एक किन्नर के साथ हो रहे एक घटना का विवरण है। उसकी जीवन की अलग-अलग पहलुओं को दर्शाते हुए, वह एक ट्रेन में घटित होने वाले हिंसात्मक घटनाओं का सामना करता है। एक लड़के द्वारा किये गए हमले के बाद, उसको उसके अन्य किन्नर मित्रों द्वारा बचाया जाता है। वे सभी मिलकर उस घटना के जिम्मेदारों को पकड़ने का प्रयास करते हैं। पाठ में समाजिक

समस्याओं और सामाजिक उदारता के मुद्दों पर भी ध्यान दिया जाता है। पाठ में समाजिक समस्याओं और सामाजिक उदारता के मुद्दों पर भी ध्यान दिया जाता है।

समानता – विनय अंजू कुमार

यह कहानी एक सामाजिक संघर्ष को दर्शाती है जहां किन्नर समुदाय के लोगों को समाज में समानता की मांग करनी पड़ती है। उद्घाटन भाषण के दौरान, जी ने इस बात को उजागर किया कि किन्नर समुदाय भी मानव समाज का हिस्सा है और उन्हें समाज का अभिन्न अंग बनाने का समर्थन किया। इसके बाद, एक किन्नर समुदाय के सदस्य ने अपने बच्चे को किन्नर समुदाय से उठाने के खिलाफ अपील की। जी ने उनकी मदद के लिए सुरक्षा दस्ते के साथ कार में बैठने का निर्देश दिया, जो उनके सुरक्षा की जिम्मेदारी था। इस घटना के बाद, जी को यह अनुभव हुआ कि उनके उपदेश का असर उस व्यक्ति के जीवन पर हो रहा है जिनका बच्चा किन्नर समुदाय से उठाया गया था। इस तरह, यह कहानी एक सामाजिक संघर्ष और समाज में समानता के प्रति जागरूकता को बढ़ावा देने का संदेश देती है।

क्योंकि – विरेंदर 'वीर' मेहता

भामा मौसी ने अपने भाषण में समाज को एक महत्वपूर्ण संदेश दिया कि हर व्यक्ति, चाहे वह किन्नर हो या कोई और, कीमती है और उन्हें समाज में समान दर्जा और सम्मान प्राप्त होना चाहिए। उन्होंने यह भी दिखाया कि किन्नर समुदाय के सदस्य भी दिलचस्प और महान योगदान दे सकते हैं और समाज के लिए महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने अपने विचारों को मजबूती से प्रस्तुत किया और समाज को उनके द्वारा जिए गए जीवन की महत्वता को समझाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने

व्यक्तियों को समाजिक समर्थन और सामर्थ्य को समझने के लिए प्रेरित किया और उन्हें यह बताया कि हर व्यक्ति की अहमियत है, चाहे वह किन्नर हो या कोई और। भामा मौसी के भाषण से सभी उपस्थित लोगों को सोचने और कार्यशैली में परिवर्तन लाने की प्रेरणा मिली।

संबंध– विरेंदर 'वीर' मेहता

यह कहानी तनु और समीर के बीच उनके रिश्ते के बारे में एक बातचीत को दर्शाता है। तनु उसकी सामाजिक मान्यताओं और अपनी शारीरिक स्थिति के कारण समीर के साथ एक रोमांटिक संबंध बनाने से हिचकिचाती है, जिसमें उन्हें अंगभंग का संकेत मिलता है। इसके बावजूद, समीर तनु को त्याग नहीं देता है। उन्होंने तनु को आश्वस्त किया कि उनका रिश्ता केवल शारीरिक रूप से नहीं, बल्कि उनकी सहायता, समर्थन और प्रेम पर आधारित होगा। समीर ने भी यह दिखाया कि वह सामाजिक आशा और नियमों को चुनौती देने के लिए तैयार है, यदि तनु उसके साथ खड़ी है। समीर की इस आश्वासन और समर्थन से तनु की आत्मा की उन्नति होती है, और वह समीर के साथ चलने की राजी हो जाती है। इस पाठ में प्रेम, स्वीकृति, और समाजिक मान्यताओं के खिलाफ लड़ने की इच्छा जैसे मुद्दे उजागर किए जाते हैं, जो एक सच्चे संबंध की स्थिति को प्रकट करते हैं। समाजिक समस्या दर्शाई गई है। तनु के समाजिक मान्यताओं और शारीरिक स्थिति के कारण समीर के साथ एक रोमांटिक संबंध बनाने में हिचकिचाहट हो रही है। इससे समझा जा सकता है कि समाज में ऐसे संबंधों को लेकर अभी भी आराम से स्वीकार नहीं किया जाता है और इसे सामाजिक परिवेश में स्थानांतरित करने में कठिनाई हो सकती है।

दुआएँ–अर्चना त्रिपाठी

इस कहानी में रीता मुख्य पात्र है जो एक किन्नर है। इस कहानी के माध्यम से हमें सकारात्मक भावना प्रकट होती है।एक लड़की है (बेटी) जो ३ बार अपना गर्भ खो चुकी है यह सुनकर रीता किन्नर उसे दुआएं देने के लिए खींचती है और बाहर ले जाकर उसकी बलाएं उतारती है,और बहुत सारे आशीष देती हैं और चावल से उसकी झोली भर देती है यहां हमें उनकी संस्कार दिखाई देती है। और वह उनकी अम्मा के मन में एक उम्मीद जगा देती है की उनकी आस जरूर पूरी होगी और वह उनसे कहती है कि "हमें अपने दरवाजे कोई नहीं देखना चाहता लेकिन हमारी दुआएं कभी बेअसर नहीं होता। जल्दी आऊंगी सोहर गाकर नेग लेने।"[1] यहां हमें एक किन्नरों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण दिखाई देता है, हमने हमेशा उनको स्वीकार करने से इनकार किया है, हमेशा लोग उनको देखना नहीं चाहते,एक ही समाज में रहकर लोगों में एकता का भाव छूटा हुआ दिखाई देता है, हमने हमेशा इनको अलग अलग नामों और लिंगों से संबोधित किया है जो एक गलत है।इस कहानी में अम्मा जो समाज के ताने सुनकर हार गई थी रीता के वजह से उनके घरों में एक उम्मीद उमड़ती दिखाई देती है,उनके मन में भेदभाव भी नही दिखाई देता है और किन्नरों के मन में आम आदमी के प्रती नकारात्मक विचार न होकर सकारात्मक विचार दर्शाते हुए दिखाई देता है।

किन्नर –डॉ. अखिलेश पालरिया

इस कहानी में समाज की मानसिकता, अंधविश्वास को दर्शाया है। कहानी की शुरुआत ऐसे होती है की उस घनी आबादी वाले कस्बे में हर रोज कुछ न कुछ घटित होता था कभी अच्छा

कभी बुरा। किन्नरों का समूह जिस गली में रहता था वह गली किन्नरों की गली के नाम से ही मशहूर हो गई थी। कोई भी मांगलिक कार्य होता तो किन्नर वहां पहुंच जाते इस तरह किन्नर आर्थिक रूप से काफी सम्पन्न थे। एक दिन वे अपेक्षाकृत एक गरीब के घर में पहुंच जाते हैं जिसके घर में बिटिया की शादी थी, किन्नर शादी का माहौल देखकर उनसे पांच हजार मांगने लगे जिससे घर के मुखिया ने किन्नरों को हाथ जोड़ते हुए कहता है कि वह जैसे तैसे उधारी करके उसकी बेटी के हाथ पीले कर रहा है, वह खुशी खुशी हजार पांच सौ दे सकता है किन्नर इस बात पर सहमत नहीं थे। फिर भी वे हार मानकर उनकी बेटी को दुआएं देकर अपनी गली में लौट आते हैं। लेकिन अचानक एक ऐसी घटना घटती है जिसकी वजह से विवाह वाले मकान में शार्ट सर्किट से आग लग जाती है और सभी दहेज का सारा सामान जलकर राख हो जाता है जिसकी वजह से लोग किन्नरों को कोसने लगते हैं और कहते हैं कि "किन्नरों की हाय लग गई"[2] यहां पर हमें समाज में नकारात्मक मानसिकता दिखाई देता है। और यह बात किन्नरों तक पहुंच जाती है। समाज में अंधविश्वास के कारण बदनामी उनकी हो जायेगी इस डर से वे जो कुछ भी नुकसान हुआ,उसकी भरपाई करने के लिए उनकी मदद करने के लिए तयार हो जाते हैं। वे कहते हैं की "भगवान ने हमें अवसर दिया है कि हम सिद्ध करें कि खोट हमारे मन में नहीं बल्कि हमारा मानसिक स्तर सामान्य जन से कहीं ऊंचा है कि हम उसकी मदद कर सकते हैं जो हमारी नहीं करता।"[3] यहां हमें पता चलता है कि लोग उन्हें एक बुरी नज़र से ही देखते हैं, उन्हें अपशगुन की मानसिकता रखते हैं तो उसी मानसिकता में बदलाव लाने का किन्नर समूह एक गरीब की मदद करने लग जाते हैं,और यहां पर यह भी पता चलता है कि लोग कोई भी उस लाचार गरीब की मदद करने नही जाते सभी

एक दूसरों पर उंगली उठाने में लग लगे हुए हैं। फिर हसी खुशी से किन्नर समुदाय उस गरीब की मदद करने में लग जाते है।

मां की व्यथा...आभा नौलखा

इस कहानी में हमें नकारात्मकता दिखाई देता है। निकुंज की आंखो के सामने उसकी पूरी जिंदगी एक चलचित्र की भांति घूम रही थी, उसे याद आया की जब उसकी मम्मी पापा ने उसकी जिंदगी से परिचय कराया था वह किन्नर है, लेकीन वह अपने लक्ष्य से हिला न सकी उसने कड़ा निर्णय लिया कि वह अपने माता –पिता को उनकी इस मेहनत का फल अपनी मेहनत से देगा और वह प्रतिष्ठित कंपनी में पाकर उसने वह सपना पूरा किया। वही उसकी मुलाकात अभय से हुई और कब प्यार हो गया पता ही न चला, और अभय फिर भी उसको स्वीकार करता है और उससे विवाह कर लेता है। कुछ समय बाद वे निलेश को गोद ले लेते हैं, कुछ सालों के बाद निलेश बारह साल का ही तो था कि अभय का अकस्मात निधन हो जाता है अब वह निलेश को सब कुछ बता देना का फ़ैसला करती है क्योंकि अब वह अठारह बरस का हो गया था जब वह उसे अपना हकीकत बताती है तो निलेश चिल्ला पड़ता है की और कहता है कि "मैं अनाथ हूं और तुम एक किन्नर.....एक किन्नर के हाथों मेरा पालन –पोषण...छी..."[4] तो यह बता चलता है की समाज में कितने नकारात्मक सोच रखनेवाले लोग रहते हैं। और इस बेटे को जरा भी समझ नही आया की उसकी सगी मां ने उसे अनाथ आश्रम में छोड़कर चली गई थी लेकिन दूसरी मां के आस ने उसे गोद ले लिया और समाज की हीनता को झेलकर, संघर्ष को झेलकर उसे पढ़ाया, पाला पोसा लेकीन उस लड़के ने मां के दिल को ठेस पहुंचाया है,उसने एक बार भी नही सोचा

कि उसकी मां भले ही किन्नर हो परन्तु उन्होंने एक यशोदा की तरह उसका ध्यान रखा, प्यार दिया, ऐसे कहने वाले बच्चों को अनाथ आश्रम में ही रखना ठीक लगता है,जो अपनी मां की व्यथा को समझ नहीं पाया और वह पढ़ लिखकर भी उसकी सोच में लैंगिक विकलांग के बारे में कितनी नकारात्मकता भरी पड़ी है यह दर्शाया है।

कमलेश भारतीय – अगले जन्म मोहि....

इस कहानी में कैसे मंगलमुखी इस कुरीति में फंसना नही चाहती यह दर्शाया है। मंगलमुखी से एक पत्रकार होने के नाते एक सवाल पूछा गया कि " ईश्वर ने आपके साथ इस जन्म में तो अन्याय किया। जब अगला जन्म मिले तो किस रूप में जन्म लेना चाहेंगी?" तो वह कहती हैं की " मैं!, अगले जन्म में। मैं यही बनना चाहूंगी यानी मंगलमुखी, आप हैरान न हों। पता है क्यों! पता है न लड़की के जन्म पर ही पाबंदी है, भ्रूण हत्या है... यदि कहीं जन्म ले ही ले तो कदम –कदम पर खतरे ही खतरे... फिर शादी में दहेज। बताओ क्या फायदा लड़की होकर?"[5] यह जवाब सुनकर वह चुप हो गया और अगला सवाल करने की हिम्मत नहीं जुट पा रहा था। यहां हमें पता चलता है की एक पत्रकार भी यह कुरीतियों से वाकिफ परन्तु समाज के दबाव से वह कुछ नहीं कह पा रहा है।

चित्रा राणा – सर्कस का जोकर

इस कहानी में समाज द्वारा किन्नरों पर होता शोषण को दर्शाया गया है। इस कहानी में शैक्षिक समस्या हमें दिखाई देती है। इस कहानी में को पात्र है वह है गोपी जो एक किन्नर थी, वह पहली बार समाज में अकेले निकलने की हिम्मत की थी, जब वह क्लास में जाती हैं तो उसे सारे घूरने

लगते, उसके साथ अलग ही बर्ताव करते, यह सब देखकर उसके हाथ पांव ठंडे पड़ जाते। तो वह क्लास में जाने से पहले प्रोफेसर के आने तक इंतजार करती रहती। जब वह क्लास में जाती है तो उसे महसूस होता है कि उसके कान गरम हो गए हैं, वह बहुत हड़बड़ा गई थी जब वह हिम्मत करके दौड़ती है तो उसे प्लेटफार्म से टुकराने की वजह से चोट लग जाती हैं। सभी क्लास उसे सर्कस की तरह देख रहे थे जिसमें जोकर हँसे या रोये दर्शकों को बस हँसी ही आती थी कोई भी उसकी सहायता के लिए नहीं पहुंच पाया, समाज कैसे कटपुतली की तरह तमाशा देख रहा है यह बताया है। फिर लेडी प्रोफेसर उसे सहानुभूति देती है की उसका कोई भी शोषण नहीं करेगा और उसे स्टाफ रूम में बैठने के लिए कहती है। और उसे एंट्रेंस में हाईएस्ट मार्क्स मिलने पर बधाई देती हैं इस तरह समाज पर एक करारा तमाचा पड़ते हुए हमें दिखाई देता है।

हिजड़ापान– रूप देवगुण

रेलवे स्टेशन के पास एक खाली पड़ी जगह में कुछ लोग घेरा बनाए तमाशबीन देख रहे थे, उत्सुकतावस मैं भी उधर चला गया, देखा कि उस भीड़ के घेरे में तीन किन्नर अपना नाच-गाना कर रहे थे। एक ढोलक बजाने में मशगूल था, दूसरा ताली बजाने में और तीसरा ठुमके लगा-लगा कर नाचने में मस्त। वास्तव में ही उसका नाच आकर्षक था, चेहरे के हाव-भाव और आँखों के मटकाने के साथ उसके थिरकते पैर में अनुभव और परिपक्वता की झलक दिख रही थी, उसकी लय और ताल के मेल से भरपूर नृत्य प्रस्तुति देखकर सभी दर्शक हर्षोविलास मुद्रा में तालियां बजा रहे थे।

इतने में ही उधर से गुजर रहे दो राहगीर भी उस भीड़ की ओर आ गए, एक ने भीड़ से झांक कर देखा,

"अरे! कुछ नहीं यह तो हिजड़े हैं हिजड़े, यह तो ऐसे ही मजमा लगाए रहते हैं आओ चले...।"[6] यह शब्द शायद नाचने वाले किन्नर के कानों तक पहुंच गए थे, उसने नाचना बंद कर उस राहगीर की तरफ हाथ करते हुए कहा,

"अरे बाबू! हम हिजड़े नहीं हैं, कहाँ दिखा आपको हमारे में हिजड़ापन ... यह तो हमारा हुनर है हुनर, एक कलाकारी ... आइए ना अंदर ... आइए आप और दिखाइए अपनी मर्दों की कलाकारी ... आप तो अपने आपको मर्द मानते हैं, पूर्ण मर्द ... नहीं बाबू हमें हिजड़ा नहीं कलाकार कहिये एक कलाकार।"[7] वह राहगीर शर्मिंदगी से मुँह नीचे किए स्टेशन की ओर चल पड़ा। इससे सभी को यह शिक्षा मिली कि हर व्यक्ति का सम्मान किया जाना चाहिए, चाहे वह कोई भी हो।

देहलीज का दर्द – डॉ. लता अग्रवाल

खबर पाते ही कि छोटी बहन का ब्याह हो रहा है, शिल्पा अपनी गुरु महेंद्री के जाना करने पर भी वहाँ का मोह त्याग न पाई। सोचा माँ तो रही नहीं... भाई भी छोटा हो हैं उसे कहाँ दुनियादारी की इतनी समझ छोटी बहन माँ की ममता को तरस रही होगी। वह जाकर सब कमी दूर कर देगी आखिर बड़ी बहन भी माँ के समान ही होती है. अब तक तो उसके प्रति उनकी तल्खी भी समाप्त हो गई होगी।

खैर! उन पर बोझ नहीं अब वह ... दो दिन विवाह की रस्में पूरी कर लौट जाएगी अपनी बस्ती में ...। अपनी बचपन की गलियों में जाकर लगा जैसे फिर से पुराने दिन याद आ गये। इन्हीं गलियों में कभी खुशियाँ बरसती थी रही हैं। शिल्पा जैसे ही घर की चौखट पर पहुँची, आज दर्द का अहसास दे "अरे! लो किन्नर आ गई... अब हो जाये जरा संगीत की महफ़िल ... अपने साथियों को तो लाओ।"[8] मेहमान चहकते हुए बोले, मानो उनके मनोरंजन का साधन आ गया। शिल्पा की नजर छुटकी को खोज रही थी, ये... रही, छुटकी कुछ लड़कियों से घिरी मेहंदी लगवा रही थी। शिल्पा छुटकी को सीने से लगाने उसकी ओर बढ़ी कि आखिर बहन ती पहचान ही लेगी।

"अरे..! अरे !.. वहाँ कहाँ जा रही हो, इन्हें तो न बस नेग लेने की पड़ी रहती है।"[9]छुटके की बहु है शायद मालिकाना हक़ दिख रहा था बोलने में। तभी हलवाई के लिए सामान लेने छोटू वहाँ आ पहुँचा ... नजरें टकराई मगर वही उपेक्षा भाव...! शिल्पा ने बढ़कर छुटकी की बलैय्या ली उसका माथा चूमने झुकी ही थी कि छुटकी कान में बोल पड़ी,

"दीदी! माँ-बाबा के न रहने पर बड़ी मुश्किल से ब्याह तय हुआ है। अब तुम्हारे आने से सब गड़बड़ हो जायेगा.... प्लीज्ज! यहाँ से चली जाओ दीदी, मेरा ब्याह राजीखुशी हो जाने दो।"[10] कुछ कहती शिल्पा इससे पूर्व मेहमान बोल पड़े,

"अरे! खड़ी क्या हो कुछ ठुमके तो लगाओ ... ऐसे नेग नहीं मिलने का ...हा! हा! हा!।"[11] उनके लोगों की ठुमके वाली महफ़िल का दृश्य दिखाई देता है।

"दो हंसों की जोड़ी दरवाजे खड़ी रे... आज मेरी बन्नो ससुराल चली रे...।"[12] दिल में शूल की चुभन, आँखों में आँसू ले शिल्पा ने ठुमके लगाये। बेग से सोने की अंगूठी निकाल छुटकी के हाथ में धर दरवाजे की ओर बढ़ गई।

किन्नर समुदाय के सदस्यों को समाज में सम्मान की कमी का सामना करना पड़ता है, और यह एक सामाजिक समस्या है जिसका समाधान करने के लिए सामाजिक संजाल और शिक्षा की आवश्यकता है। इस कहानी में, नवीन ने अपनी माँ के साथ खड़े होकर उन्हें सम्मान और सहानुभूति दिखाई, जिससे उन्हें एक महत्वपूर्ण संदेश मिला कि हर व्यक्ति का सम्मान करना जरूरी है।

संस्कार– मिथिलेश दीक्षित

गाँव में चर्मकार के घर और किन्नरों के घर के बीच एक दुर्घटना में हरिया चमार और उसकी पत्नी की मौत हो गई थी। इसके बाद, उनकी बच्ची की परवरिश के लिए कोई तैयार नहीं हुआ। सलोनी किन्नर ने उसकी देखभाल की और उसे कॉलेज जाने के लिए एक पुरानी स्कूटी खरीदकर दी। आज, सोनिया का एनसीसी की ट्रेनिंग का आखिरी दिन था, और वह पहली बार स्कूटी से कॉलेज जा रही थी। उसने एनसीसी वाली ड्रेस पहनी हुई थी। जब स्कूटी की आवाज सुनकर रामसेवक पण्डित की छोटी बहु ने दरवाजे पर आई और उससे बोली।"हाय रे, दैया! जीजी, इस हिजड़ी को तो देखो। जे तो मरदों के भी कान काटे है!" जेठानी भी बोल पड़ी," आखिर रहती किसके घर है? संस्कार कहाँ से मिलेंगे?"[13] अचानक ही दोनों की हँसी बच्चे की चीख से रुक गयी। छोटी बहु का दो साल का बच्चा चबूतरे से गिर गया। ईंट पर सिर लगने से माथे से खून की

धार बह निकली छोटी बहु ने सोनिया को गले लगाकर एक रात की आवाज में माफी मांगते हुए कहा, "बेटा! मुझे माफ कर दो। मुझे माफ़ कर दो, बेटा---!" इसके पहले, एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना में उनके घर के बच्चे को चबूतरे से गिर गया था, जिससे उसकी माँ के माथे से खून बहने लगा था। सोनिया ने तत्काल क्रियान्वित होकर बच्चे को उठाया, उसे प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ले गई, और उसकी देखभाल की। उन्होंने बच्चे की ड्रेसिंग करवाई, उसे दवा दिलवाई, और फिर उसे उसके घर तक पहुंचाया। इससे पूरे परिवार में समझौता और साथ में एक संवेदनशील वातावरण बना। इस पूरी घटना ने दिखाया कि सोनिया की साहसिकता और सहानुभूति के कारण एक परिवार की समृद्धि को बढ़ावा मिला। छोटी बहु ने सोनिया को गले लगाकर उसकी महत्वाकांक्षा की जानकारी दी, जिससे उसे उसकी प्रशंसा और सम्मान का अभिवादन किया गया। इस पाठ में एक सामाजिक समस्या को दर्शाया गया है जो गाँव में किन्नरों और चमारों के समाजिक संघर्षों को उजागर करता है। यहाँ पर एक बच्चे के दुर्भाग्यपूर्ण हादसे के माध्यम से यह दिखाया गया है कि किन्नरों के समाज में स्थिति कितनी कठिन हो सकती है जब उन्हें समाजिक स्वीकृति और सहायता की आवश्यकता होती है। इसके साथ ही, सोनिया की सहानुभूति और साहसिकता के माध्यम से समस्या का समाधान भी दिखाया गया है।

धारा विरुद्ध– सुनील वर्मा

कमला और शबनम की बातचीत से पता चलता है कि उन्होंने समाज में लड़की के जन्म के महत्व को बढ़ावा देने का निर्णय लिया है। वे यह तक मानती हैं कि लड़की के जन्म को भी उत्सव के रूप में मनाना चाहिए, न कि सिर्फ बधाई लेने के लिए। इस नए दृष्टिकोण से, वे अपने समुदाय

में परिवर्तन लाने के प्रयास कर रही हैं। चौधरीजी की प्रतिक्रिया से साफ होता है कि समाज में इस परिवर्तन को स्वीकार करने की दिशा में प्रगति हो रही है। इसके बाद, बच्ची ने कमला को धन्यवाद दिया और उनके साथ नाचा, इससे समाज में एक सकारात्मक संदेश प्रस्तुत होता है कि हर जन्म खुशियों के मौके हैं और उन्हें समान रूप से मनाना चाहिए। यह कहानी समाजिक समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करती है, जैसे कि लड़कियों के जन्म के महत्व को समझाने और समाज में परिवर्तन लाने की बात।

जवाब – मीरा जैन

इस कहानी में गुलाबो और शब्बो के बीच एक संघर्ष का वर्णन किया गया है। गुलाबो एक किन्नर है जो अनाथाश्रम में रहता है। गुलाबो को अपनी मुखिया शब्बो के सामने उसकी निगाह में देखकर घबराहट महसूस हुई। शब्बो ने पूछा कि उसका आना कहाँ से है, जिससे गुलाबो का चेहरा पसीने से भीग गया। शब्बो ने उसे कहा कि उसकी कार्यवाहिक विवादित है और उसे यहाँ रहने की अनुमति नहीं है। गुलाबो ने उसके पैर पकड़े और गुहार लगाई, बताते हुए कि उसे अनाथाश्रम में जाने का कोई विकल्प नहीं है। जब उसने शब्बो को बताया कि वह आश्रम के बच्चों द्वारा माँ कहलाने का सम्मान प्राप्त करती है, तो शब्बो भी निःशब्द हो गई। गुलाबो और शब्बो के बीच का विवाद दिखाता है कि समाज में जातिवाद और सामाजिक असमानता किस प्रकार से अपनी भूमिका निभाते हैं। शब्बो की धारणा के अनुसार, किन्नरों को सामाजिक नियमों के अनुसार जीना चाहिए, जबकि गुलाबो उन्हें समाज में स्वीकारता की मांग करते हैं। गुलाबो ने शब्बो के सामने अपनी असलियत को पेश किया और उसे अपनी मान्यता को स्वीकारने के लिए

मजबूर किया। यह कहानी सामाजिक संरचना, सामाजिक न्याय, और असमानता के खिलाफ एक शक्तिशाली संदेश प्रस्तुत करती है। यह कहानी ज्यादातर समाजिक समस्याओं को उजागर करती है, जैसे जातिवाद, सामाजिक असमानता, और समाज में अधिकारों की कमी। गुलाबो और शब्बो के बीच का विवाद समाजिक व्यवस्था की प्रतिस्पर्धा को प्रकट करता है, जहां किन्नरों को समाज में स्वीकृति और सम्मान की कमी महसूस होती है। इस प्रकार, कहानी अधिकतर समाजिक समस्याओं को उजागर करने पर ध्यान केंद्रित करती है।

सहयात्री– मोनिका

एक 20-21 साल की युवती ने भरी भीड़ वाली अंतिम बस में चढ़ाई की। जैसे ही उसने अपने आसपास देखा, उसे एक खाली सीट मिली। लेकिन जब वह उस खाली सीट पर जाने लगी, तो उसने देखा कि वहाँ पहले से ही एक सहानुभूति और समानता के भाव से सवारी बैठी हुई थी, जो किन्नर या हिजड़े की तरह दिखती थी। यह नजर उसे भी चौंका देने वाली थी, लेकिन फिर भी उसने उस सीट की तरफ बढ़ते हुए उसमें बैठ लिया। इससे बस में उस और दूसरे सहयात्रियों के बीच एक विश्वास का माहौल बना। इस कहानी में सामाजिक समानता, सहानुभूति, और अपनी सुरक्षा की जिम्मेदारी को उजागर करती है।इस कहानी में सामाजिक समानता, सहानुभूति, और समय परिवर्तन के महत्व को प्रकट किया गया है। यह कहानी सामाजिक समस्या को दर्शाती है। यह उस समाजिक प्रथा को उजागर करती है जिसमें लोगों को उनकी पहचान के कारण भेदभाव किया जाता है, और उन्हें समानता और सहानुभूति का अधिकार नहीं दिया जाता। इस प्रकार, यह

कहानी सामाजिक समस्या को दर्शाती है जो जातिवाद और असमानता के खिलाफ लड़ाई को उजागर करती है।

मरा हुआ मर्द – बलराम अग्रवाल

इस कहानी में एक वार्तालाप को दर्शाता है जो किन्नर समुदाय के एक सदस्य और संपादक के बीच हो रहा है। जो खुद किन्नर है, अपनी पहचान को स्पष्ट करने की कोशिश कर रहा है, लेकिन संपादक इसे समझने को तैयार नहीं हैं। संपादक किन्नर के विषय में अज्ञानता दिखा रहे हैं और उन्होंने उसे 'नपुंसक' कहकर ठगा दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि 'मेडिकली अनफिट' का मतलब 'नपुंसक' होता है, 'किन्नर' नहीं, और इसलिए उसे किन्नर के लिए उपयुक्त रचनाएँ चाहिए। उन्हें अपनी सच्चाई साबित करने के लिए मेडिकल टेस्ट करवाने का सुझाव देते हैं, लेकिन संपादक उनकी सच्चाई को स्वीकारने को तैयार नहीं हैं। उनकी बातों से प्रेरित होकर मिमियाया उन्हें समझाने की कोशिश करते हैं, लेकिन संपादक नकारात्मकता और भेदभाव के साथ उत्तर देते हैं। इस संवाद में, सामाजिक संज्ञान की कमी और समाजिक समानता की मांग को उजागर किया जाता है।

यह कहानी सामाजिक समानता की कमी और भेदभाव के खिलाफ आंदोलन की मांग को उजागर करता है। इसमें किन्नर समुदाय के सदस्यों के साथ किये जाने वाले अन्याय और उनकी पहचान को लेकर सामाजिक संज्ञान में कमी को भी दर्शाता है।

तालियों की थाप – फेबुल्स रोहतक

इस कहानी में, एक परिवार की सुबह के आरंभ का वर्णन किया गया है जब घर में एक शादी की तैयारी हो रही है। सभी परिवार के सदस्य उत्साह से उठकर अपने-अपने कामों में लगे हुए हैं, लेकिन नई दुल्हन के आगमन के साथ ही घर में हलचल मच जाती है। इसके परिणामस्वरूप, घर में उत्सव की आत्मा उजागर होती है, और तालियों की गड़गड़ाहट और ढोलक की धुन सुनाई देती है। माँ को, जो पिछले दिनों से शादी की तैयारी में व्यस्त थी, कुछ अवकाश मिला था, लेकिन नयी दुल्हन के आगमन के साथ ही घर में हलचल मच गई। उनकी नींद अधूरी थी, और उनका अन्यायुक्त आवाज में प्रतिक्रिया आई। इसके बाद माँ का निर्णय आया कि नव-दम्पत्ति को स्वागत के रूप में समर्थन देना जरूरी है, और उन्हें आशीर्वाद देना भी। इस संवाद में, उत्सव की धुन और आधुनिक जीवन की भागदौड़ में परिवार के सदस्यों के भावनात्मक अनुभवों को उजागर किया गया है। यह भी दिखाता है कि आधुनिक जीवन में परंपराओं का महत्व और उनका समर्थन भी महत्वपूर्ण है।"ये सुबह-सुबह क्या हल्ला मचा रखा है? क्या चाहते हो तुम लोग? जाओ यहाँ से..."[1] इस वाक्यांश में, बेटा की स्थिति का वर्णन किया गया है। उसकी नींद अधूरी होने के कारण उसका अनमना होना स्वाभाविक था, और उसने इसका इशारा करते हुए सभी को समझाया कि उन्हें इस समय की शोर-शराबा से इंकार है। माँ ने इस परिस्थिति को समझा और अपने बेटे को समर्थन देने के लिए उसे शादी के महत्व को समझाया, और उसे कहा कि वह उन्हें इस समय में समर्थन दें। इससे पता चलता है कि परिवार में परंपराओं का महत्व और समर्थन की भावना महत्वपूर्ण है।इस अंश में, एक पारिवारिक समारोह में तालियों

और बेसुरी आवाजों के साथ विवाद का संदेश दिखाया गया है। एक बेटी की जगह एक बेटे की प्रतीक्षा के बावजूद, माँ एक बेटी की आशा रखती है। इस परिस्थिति में, एक किन्नर (हिजड़ा) ने बेटे की इच्छाओं का सम्मान किया और बेटी की अनुमति के बिना खुशियों का समर्थन किया। यह दिखाता है कि पारिवारिक मानदंडों के बावजूद भी, समाज में समानता और समरसता की प्राथमिकता को महत्व दिया जा रहा है।इस विवाह समारोह में बेटे का अलग मूड उसकी व्यक्तित्व की अद्वितीयता को दर्शाता है। वह अपनी प्राथमिकताओं और सोच को व्यक्त करने का प्रयास कर रहा है। उसने किन्नर से एक सवाल पूछा जो उसके लिए महत्वपूर्ण था, जिससे उसका स्वार्थिता और आत्मसमर्पण प्रकट होता है।"पूछो दूल्हे मियाँ पूछो? यहाँ तो सबकुछ खुला हुआ है, पर लगेंगें पूरे के पूरे इक्कीस..."बेटा, किन्नर ने पूछा, "तुम एक महीने में कितना कमा लेते हो?"[2] लेकिन बेटा ने इस प्रश्न का जवाब देने से बचकर किन्नर को आदर मिश्रित आत्मीय नजरों से देखा। उसकी चेहरे पर शर्माहट का अंग दिखाई दिया। इसके बाद, किन्नर ने अपनी बात पूरी की और पूछा, "ये तो बताओ कि ...?""[3] ऊपर वाले की मर्जी से तुम सुंदर तो हो ही, समझदार भी लगती हो, मेरे सिर्फ एक सवाल का जवाब दे दो कि तुम चाहो तो कुछ भी वो काम कर सकती थीं जैसे हम सब करते हैं या अपने घर में अपने माँ-बाप के साथ रह सकती थीं जैसे हम रहते हैं। तो फिर इस काम में, इन लोगों के साथ क्यों आ गयीं?[4] किन्नर को इस सवाल की उम्मीद नहीं थी क्योंकि ये सवाल इतने अपनेपन के साथ उससे कभी किसी ने नहीं किया था, आज उसकी दुखती रगों पर किसी नौजवान ने अचानक अपनी अंगुली रख दी थी तो उसे लगा कि पोखर के शांत जल में किसी ने कंकड़ कोई आग का गोला फेंक दिया है। और बेतरतीब लहरें तूफान बनकर

एक साथ उछल पड़ी हैं। उसके हाथ से निकलने वाली तालियों की गड़गड़ाहट थम गयी। इस कथन में, किन्नर अपने जीवन की कहानी को बहुत विस्तार से साझा कर रहा है। उन्होंने अपने परिवार और समाज से मिली असहमतियों और अपमान के बारे में खुलकर बात की है। उन्होंने अपने संघर्षों का सामना कैसे किया, कैसे उन्होंने अपनी स्थिति को स्वीकार किया, और कैसे वे नई ज़िंदगी की ओर आगे बढ़े, यह सब विस्तार से बताया गया है। इसके अलावा, उन्होंने अपने साथ हुए अनुभवों से क्या सीखा, और कैसे वे अब अपने आत्म-सम्मान और खुद की महत्ता को मानते हैं, इस बारे में भी बात की है। उनकी कहानी में जो ताक़त और साहस है, वह उनकी अन्यों के साथ संबंध बनाने और समाज में सम्मान प्राप्त करने के लिए उन्हें प्रेरित करती है। इस प्रकार, यह कथन उनकी संघर्षशीलता, साहस, और आत्म-विश्वास को प्रशंसा करता है।इस कथन में, एक परिवार में एक मिठास और साथीता की भावना को प्रकट किया गया है। भाई किन्नरों को समर्थित किया और उसे नई चीजों को सीखने के लिए प्रोत्साहित किया .उसके भाई ने उसे प्रेरित किया कि वह सीखने के लिए नए कदम उठाए और अपनी क्षमताओं को बढ़ावा दें। उसके भाई ने उसे अपना सहायक भी बनाने की प्रस्तावित की और उसे प्रोत्साहित किया कि वह कंप्यूटर की शिक्षा लें। उसकी बहन ने इस प्रस्ताव को स्वीकार किया और हाँ कह दी। यह सभी उनके परिवार के बीच संवाद का एक सुंदर उदाहरण है जो उनकी प्रोत्साहना और समर्थन को प्रकट करता है। इस संवाद के दौरान, किन्नर की तालियों और संगीत की ध्वनि ने माहौल को और भी सामूहिक बनाया।

क्यूट – कुमार गौरव

जब झाँसी पहुंचा, तो बैग जमाते हुए एक बच्चे ने पानी की बोतल लेकर कहा, "अंकल पानी ले सकता हूँ।"[1] बच्चे की मासूमियत ने मेरा मन मोह लिया। उसने अपनी कहानी साझा की, किन्नी से मिला, जिसने उसको दस रुपये के लिए रोटी मांगी थी। उसने उसको भेजा था, लेकिन खुद पानी पीने के बजाय रोटी के लिए जगह ढूंढने में मेरी मदद की। मैंने उसे दस रुपये दिए और उसकी मदद की। बच्चे की बातों ने मुझे मुस्कान दिलाई और उसने बताया कि कैसे वह दूसरी बार बेरोजगार महिला की मदद की। बाद में, उसने मुझे एक नोट दिखाया और मुझसे कुछ नहीं मांगा। उसकी यह अद्भुत कहानी मुझे उत्साहित किया और मैंने उसकी बातों का समर्थन किया। इसके बाद, एक और महिला आई, जिसने अपनी बर्थ की तलाश की, लेकिन उसने भी बच्चे को देखकर दया की और मेरी मदद की। इस कहानी ने मुझे इस बालक की निखरी हुई मस्ती और बुद्धिमत्ता को दिखाया। यह समझाया कि कभी-कभी हमें अपनी आवश्यकताओं को छोड़कर दूसरों की सहायता करनी चाहिए। यह सीख मुझे बहुत कुछ सिखाई। बच्चे की यह कहानी मुझे एक बहुत ही मूल्यवान संदेश देती है। उसने अपने संघर्षों के बावजूद भी दूसरों की मदद करने का निर्णय लिया। उसने बस दस रुपये की मदद की, जो उसके लिए काफी मायने रखते थे। इससे हमें यह याद दिलाया जाता है कि छोटी-छोटी भलाई भी बड़े काम की हो सकती है। इसके साथ ही, उसकी दूसरी कहानी भी दिखाती है कि हमें दूसरों की सहायता करने का अवसर कभी भी मौका नहीं छोड़ना चाहिए। अगर हम किसी की मदद कर सकते हैं, तो हमें निर्लज्जता से उसे प्रदान करना चाहिए। इस कहानी से हमें यह भी सिखने को मिलता है कि हमें अपने बच्चों को उत्तम

मूल्यों और नैतिकता की महत्वता को सिखाने की आवश्यकता है। बच्चे की मासूमियत और सामाजिक जागरूकता हमें उम्मीद दिलाती है कि भविष्य में समाज में उनका योगदान सकारात्मक होगा।

संदर्भ –सूची

1.घोटड़ डॉ॰ रामकुमार, अग्रवाल डॉ॰ लता, किन्नर समाज की लघुकथाएं, साहित्य चंद्रिका,जयपुर, 2019, पृ 23

2. वही पृ॰ 23

3. वही पृ॰ 23

4.वही पृ॰ 24

5.वही पृ॰ 24

6.वही पृ॰ 24

7.वही पृ॰136

8.वही पृ॰136

9.वही पृ॰139

10.वही पृ॰139

11.वही पृ॰139

12.वही पृ॰139

13.वही पृ॰116

14.वही पृ०116

15.वही पृ०96

16.वही पृ०96

17.वही पृ०96

18.वही पृ०96

19.वही पृ० 53

20.वही पृ० 53

द्वितीय अध्याय: वैवाहिक समस्याएँ

2.4 वैवाहिक समस्याएँ

सक्षम –आभा अदीब राजदान

इस कहानी में पारिवारिक समस्या एवं वैवाहिक समस्या भी दर्शाया गया है जैसे की इस कहानी में एक परिवार को अपने बच्चे के प्रति चिंतित दिखाई देते है। अनूप उन्हें बोझ सा लगने लगा था परंतु आखिरकार अनूप की शादी करवा के उनके मन को तसल्ली मिलती है वह बताया है। वे कहते हैं कि " बहुत बड़ा बोझ मन से उतर गया गायत्री, पाप तो हम से हुआ, हम ने वह करने का सोचा जो संभव ही नहीं था, तसल्ली इस बात की है कि कम से कम कुछ प्रायश्चित ही कर सकें" यहां पर हमें पता चलता है की किन्नरों को विवाह करने के लिए कितने सारे समस्याओं का सामना करना पड़ता है।और किन्नरों के लिए रिश्ता कोई लेकर नही आता और कोई उनसे विवाह भी नही करना चाहता तो इस कहानी में गायत्री और राम लाल जी अनूप की विवाह करा दिया जो एक किन्नर है। अनूप का विवाह करके उनका मन का बोझ उतर गया था और उनको पछतावा भी हो रहा था कि उन्होंने अनूप की शादी झूठ बोलकर की थी और उन्होने बहु का सुयोग्य वर देख के विवाह भी करवा दिया। उनके बेटे की ममता में उनकी आंख पर स्वार्थ की पट्टी बंध सा गया था, अनूप ने विवाह के लिए बहुत बार मना कर दिया था क्योंकि वह अपनी अस्मिता को पहचान चुका था।वह किसी की जिंदगी बरबाद नहीं करना चाहता था, गायत्री ने उसे सामान्य बच्चों को तरह पाला, पढ़ाया –लिखाया, आज सारा बिज़नेस वही तो संभाल रहा था। गायत्री को चिंता हो रही थी की समाज उसे कुछ न कहे। वे कहते हैं की, किसी शारीरिक

कमी की वजह से दुखी होना व्यर्थ है, जबकि हमारा बेटा हर तरह से सक्षम है" अर्थात हमें कभी भी लैंगिक रूप से एक दूसरों को परखना नहीं चाहिए। हर आदमी एक समान है। किन्नरों को भी जीने का, विवाह करने का हक है किसी शारीरिक कमी की वजह से हमें दुखी नहीं होना चाहिए। एक आम आदमी की तरह किन्नर भी हर एक काम में सक्षम होते हैं लेकिन हमारी नकारात्मक सोच के विचार से वे पीछे हट जाते हैं।

शादी – निर्मला सिंह

यहाँ, प्रश्न पड़ोसन शकुन द्वारा आशा से पूछा जाता है कि उनकी बेटी को अब आईएएस अफसर बन गई है, तो उन्हें उसकी शादी क्यों नहीं कर दी जाती। इस सवाल से आशा परेशान होती है, क्योंकि वह जानती है कि उसकी बेटी ने समाज में अपनी विशेष पहचान बनाई है और उसका सपना पूरा करने के लिए कितनी मेहनत की है। वह चिंतित होती है कि उसे कैसे बताएं कि उसने अपनी बेटी को समाज की नज़रों से छुपाकर पढ़ाया और उसे अफसर बनाया है, और अब उसे उसकी शादी के लिए दबाव महसूस हो रहा है। उसे अपनी पड़ोसन को समझाने की कठिनाई महसूस होती है कि बेटी अफसर बन सकती है, लेकिन सोचे सामाजिक रूप से पत्नी, बहु और माँ नहीं बन सकती है।

गंधा है पर धंधा है – ज्योति स्पर्श

इस कथा में, विवाह के खर्च और परिवार की आर्थिक स्थिति के बारे में एक विवाहित युवक के विचारों का वर्णन किया गया है। वह अपनी जेब के परिमाण को ध्यान में रखता है और शादी के खर्च को लेकर चिंतित होता है, जो एक सामाजिक दायित्व के साथ उसके मन में होता है। वह

चाहता है कि उसके परिवार को अतिरिक्त आर्थिक बोझ नहीं उठाना पड़े, लेकिन उसे अपनी धर्मपत्नी के साथ नया जीवन आरंभ करने के साथ ही जो आनंद और संतोष मिलेंगे, उसे भी महसूस होता है।कथा में उसकी बहनों के भावनात्मक साथीदारी और समर्थन का उल्लेख है। उनकी चाहत और उत्साह अपने भाई की सुखद शादी के लिए प्रकट होते हैं, जो एक परिवार के सामाजिक दायित्व के बीच संतुलन की प्रतिकूलताओं को दर्शाता है। कथा में उसके माता-पिता की चिंता, उनके सामाजिक स्थिति और अपने परिवार के समृद्धि के प्रति उनका प्रेम व्यक्त किया गया है। उनके आर्थिक संघर्षों और उनकी परिवार की आवश्यकताओं के बीच का तनाव प्रदर्शित किया गया है, जो एक परिवार के अंतर्निहित दुःख और खुशियों को प्रकट करता है। कथा में किन्नर समुदाय की भूमिका भी महत्वपूर्ण है, जिसने विवाह समारोह में अपनी अहमियत का प्रदर्शन किया। उनका सामाजिक समर्थन और उनकी अर्थव्यवस्था को लेकर उनके साथीदारी का उल्लेख है, जो एक उत्कृष्ट सामाजिक समाधान को प्रस्तुत करता है। इस प्रकार, इस कहानी में विभिन्न पात्रों के मनोवैज्ञानिक स्तरों पर विविध धार्मिक और सामाजिक परिपेक्ष्य को उजागर किया गया है, जो विवाहित जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों पर प्रभाव डालता है।

किन्नर – देवराज संजू

यह कहानी एक युवा महिला संगीता की आत्मविश्वास और स्वतंत्रता की कहानी है। संगीता का परिवार उसे शादी के लिए प्रेरित करता है, लेकिन वह अपनी स्वतंत्रता और स्वाभिमान को महत्व देती है। जब उसे शादी का प्रस्ताव मिलता है, तो उसे अपनी आज़ादी खोने का डर होता है। संगीता का निर्णय, जिसमें वह परिवार की उम्मीदों का सामना करती है, उसकी मानसिकता

और सोच के मजबूती को प्रकट करता है। उसका निर्णय उसकी आत्म-सम्मान को पुनः स्थापित करने का एक बड़ा कदम है। संगीता का विरोध, उसके चाचा जी के अचेत हो जाने से दर्शाता है कि यह कठिनाईयों भरा निर्णय उन्हें भी गहरी प्रभावित करता है। वे उसके विरुद्ध आवाज उठाने के बजाय अचेत हो जाते हैं, जो उनके विचारों और संगीता की अहमियत को समझाता है। इस रूप में, संगीता की कहानी हमें आत्म-सम्मान, स्वतंत्रता, और व्यक्तिगत स्वाधीनता की महत्वपूर्णता को समझाती है। उसका निर्णय और संघर्ष हमें यह शिक्षा देते हैं कि हमें अपने मूल्यों और स्वप्नों के पक्ष में खड़े होकर उन्हें प्राप्त करने के लिए लड़ना चाहिए।

किन्नर – नेहा अग्रवाल 'नेह'

यह कहानी एक गाँव के माहौल को उजागर करती है, जहाँ गीता के लिए राजा के साथ की गई शादी के बारे में बात हो रही है। इस घटना की वजह से पूरे गाँव में चर्चा हो जाती है, क्योंकि राजा के साथ की यह शादी एक अद्भुत घटना है। गीता के परिवार वाले भी इस रिश्ते को खुशी से स्वीकार करते हैं और विवाह को तेजी से कर देते हैं। लेकिन, सुहागरात के दिन, जब गीता कमरे में पहुंचती है, तो उसे पता चलता है कि उनके साथ नौकर भी हैं। यह अन्याय और आत्महत्या का एक मामला है, जो गीता के बारे में सच्चाई बताता है। नौकर, जो हवेली का सबसे वफादार सेवक है, गीता को बचाने के लिए उसके साथ धोखा नहीं करता है। नौकर का विश्वासनीयता और न्याय के प्रतीक के रूप में, वह गीता को सच्चाई बताता है और उसे समझाता है कि उसकी यह शादी अंधापन का परिणाम है। उसके द्वारा किये गए नेक कार्य के कारण, गीता को अपने बड़े स्वामी के साथ नहीं रहना पड़ता है, जिससे उसकी ज़िन्दगी बच जाती है। इस कहानी के माध्यम

से, नौकर की विश्वासनीयता और उसके साहस को प्रशंसा की जाती है, जो उसने एक न्यायप्रिय और सही निर्णय के लिए किया।

तृतीय अध्याय

किन्नर समाज : सांस्कृतिक अध्ययन:

किन्नर विमर्श

तृतीय अध्याय: स्व अस्तित्व की पहचान

3.1 स्व अस्तित्व की पहचान

इंसानियत – रेखा सुतार

जानकी ने अपनी जिंदगीभर की कमाई से एक एनजीओ खोला, जिसमें समाज में प्रताड़ित महिलाओं को रोजगार प्रदान किया जाएगा। उनका उद्घाटन था और कार्यक्रम की तैयारी का जिम्मा सभी किन्नरों ने लिया। उन्होंने धूमधाम से इस आयोजन का आयोजन किया। तब वहाँ बैठे कुछ लोगों ने मज़ाक में कहा, "अब हिजड़े भी समाजसेवा कर रहे हैं।" इस पर जानकी ने जवाब दिया, "जब समाज के प्रतिष्ठित लोग चूड़ियाँ पहनकर बैठते हैं, तो हम हिजड़ों को इंसानियत दिखाने पर मजबूर होते हैं। लोग हमें कभी इंसान नहीं समझते, पर हमें हमेशा इंसानियत समझ में आती है।"[1] यह कहानी सामाजिक समानता और इंसानियत के महत्व को उजागर करती है। जानकी ने इसे अपने शब्दों में साहित्य किया, जिससे समाज को उत्थान और बदलाव की दिशा में दिशा मिलती है।

कुमार गौरव अजीतेन्दु – नेकी सबका अधिकार

इस कहानी में किन्नरों के प्रति सकारात्मक नज़रियां नज़र आती है जैसे लेखक सागर की एनजीओ में जाने का मौका मिला हुआ होता है तभी कुछ किन्नर उसकी दुकान पर मांगने आए थे,जिसे उस टोली को पंद्रह सौ रुपये देकर अपना नुकसान करवाया था जहां उसके मन में अब तक कचोट रहा था। फिर वह सागर के एनजीओ में पहुंचता है तो वह देखता है कि वह वही टोली

है और सागर को वह सब कहानी बताता है। वह उस बात की सफ़ाई देते हुए कहता है की आधा हिस्सा आई कैम्प में इन्हीं के पैसों से लगाये । वे अपने नाच –नाच कर जुटाए पैसों का एक हिस्सा वे यहां दे रहें हैं काफ़ी समय से। अब उसे अपने पंद्रह सौ रूपये देना सार्थक लगने लगा था। हम हमेशा एक किन्नर को बुरी नज़र से देखते हैं परन्तु इस कहनी के माध्यम से वे हमारे समाज में एक अस्तित्व की पहचान छोड़ जाते हैं जिसे हम भूल नहीं पाते। भले ही उन्हें व्यवसाय न मिले परन्तु वे समाज को बचाने के लिए अपना हिस्सा भी लौटाने के लिए तयार है।

पारस दासोत – किन्नर होने का दर्द

इस कहानी में एक किन्नर समुदाय की अस्तित्व के वजह से उन्हें कितना ठेस पहुंचता है वह बताया है। घर में कुत्ते के पिल्ले को घुसा आया देखकर किन्नर उस पिल्ले को अपनी गोद में उठाकर नाचता है और नाचते नाचते उस पिल्ले को उल्टा कर उसके गुप्तांग को अपने हाथ के स्पर्श से छूकर अपने साथी से कहता हैं की " देख री देखो ये पिल्ला किन्नर नहीं है, यह हिजड़ा नहीं है।" यह सुनकर वे खुशी से मारे नाच–गा रहें थे। नाचते नाचते वे सभी अचानक फूट –फूट कर रोने लगते हैं।

बुलंद तालियाँ – डॉ. नीना छिब्बर

यह कहानी एक विशेष कुमारी के जीवन के बारे में है, जो एक किन्नर होने के कारण सामाजिक और परंपरागत मान्यताओं के खिलाफ लड़ाई लड़ती है। जब वह अपने घर में साक्षात्कार के लिए जाती है, तो उसे अड़ोस-पड़ोस के लोगों की व्यंग्यात्मक नजरें और प्रसन्नता से सामना करना पड़ता है। इसके बाद उसे अपने जीवन में कई सवालों का सामना करना पड़ता

है, जैसे कि उसके रूप, स्थिति, और समाज द्वारा किए गए विभिन्न प्रतिस्थापन। वह अपने जीवन के संघर्षों के बावजूद अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित है। इस कहानी में, विशेष कुमारी द्वारा प्रदर्शित संघर्ष, साहस, और संघर्ष के माध्यम से, हमें उसकी बहादुरी और साहस का प्रतिस्पर्धी दृश्य प्रस्तुत होता है, जो हमें सोचने पर मजबूर करता है और हमें अपने आप को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करता है। यह कहानी एक विभिन्न सोच और आत्म-स्वीकृति की महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करती है।

बिखरा दर्पण – डॉ० लता अग्रवाल

एक किन्नर दर्पण के सामने खड़ा था, जो अपनी सुंदरता के अभिमान में डूबा हुआ था। उसने दर्पण में अपनी छवि को देखते हुए आत्मसंतुष्टि महसूस की, लेकिन फिर एक दिन उसे अपने अधूरापन का एहसास हुआ। उसने अन्ततः अपने अकेलापन और असम्पूर्णता को महसूस किया। इस भावना के कारण, उसने दर्पण को पीक दाग दिया और उसे तोड़ दिया। इससे उसकी आवाज के साथ-साथ उसका अक्स भी बिखर गया, जिससे उसका अकेलापन और असम्पूर्णता का अनुभव और भी अधिक हो गया। लेकिन अंत में, उसने खुशी से कहा, "मैं अकेला नहीं हूँ!"[2] इससे उसने अपनी स्वीकृति और स्वागत का भाव व्यक्त किया।

इस कहानी में अस्मिता की पहचान को भी दिखाया गया है। जब किन्नर ने अपने अकेलापन और असम्पूर्णता का सामना किया, तो उसने अपनी स्वीकृति और स्वागत की भावना का प्रकटीकरण किया। यह उसकी अस्मिता का प्रतिबिम्ब है, जो उसे अपने खुद के साथ सहजता से स्वीकार करने में मदद करता है।

ताज़ी हवा – डॉ. श्याम सुंदर दीप्ति

इस कहानी में एक महिला के अंतर्मन के विचारों और संघर्षों का विवरण है, जैसे कि वह अपने अस्तित्व के महत्व को खोजती है, सामाजिक परिचय पर ध्यान केंद्रित करती है, और अपनी वास्तविकता को स्वीकार करने की कोशिश करती है। वह अपनी माँ के साथ संबंध और महिला होने के अनुभव पर ध्यान केंद्रित करती है। अंत में, वह अपनी स्थिति को स्वीकार करती है और नई आशा के साथ आगे बढ़ती है। यह पाठ व्यक्तिगत पहचान, सामाजिक उम्मीदों, और आत्म-स्वीकृति और प्रतिरोध की दिशा में एक गहरा अन्वेषण प्रदान करता है।

जागृति – शेख़ शहजात उस्मानी

यह पाठ एक ट्रेन में घटित होने वाली घटना को विस्तार से वर्णन करता है, जिसमें एक बालक एक किन्नर फेरीवाले को देखकर हैरान होता है। वह देखता है कि किन्नर, जो केवल एक पैर और आंखों के साथ है, कैसे सभी कामों को सम्भाल रहा है। उसे यह देखकर प्रेरणा मिलती है कि हर कोई अपनी संघर्षों के बावजूद अपने सामर्थ्य को उन्नत कर सकता है। इस पाठ के माध्यम से लेखक ने व्यक्ति की असीमित सामाजिक और व्यक्तिगत साक्षमता की महत्वपूर्णता पर जोर दिया है, साथ ही उसने समाज में समानता और समर्थन के महत्व को भी प्रमोट किया है।

निस्वार्थ – राज बोहरे

एक दिन, ट्रेन के डिब्बे में मुन्ना किन्नर यात्रियों से इनाम मांग रहा था। उसकी नजर गुप्ता जी पर पड़ी, जो बुजुर्ग यात्री थे, और वहाँ उनके पास चला गया। गुप्ता जी बुजुर्ग थे और आज वे

बेहाल दिख रहे थे। उन्हें सदा ही अकेले रहना पसंद था। मुन्ना किन्नर हर बार उनसे पैसे मांगता था, लेकिन गुप्ता जी हमेशा उसे डांटते थे कि उसकी हर बार समय पर आना अच्छी बात नहीं होती। मुन्ना किन्नर उन्हें सदा शुभ कामनाएं देता और कहता कि उन्हें देखने से कभी भी अशुभ नहीं होता। विभिन्न सामाजिक और मानवीय पहलुओं को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी में, गुप्ता जी को बुरा माने बिना मुन्ना वहाँ से चला जाता है, लेकिन जब उन्हें खांसी और उल्टी से परेशानी होती है, तो कोई उनकी मदद करने का समय नहीं निकालता। यह दिखाता है कि अक्सर हम किसी की मदद करने के लिए समय नहीं निकालते, चाहे हमें वह समय हो या न हो। गुप्ता जी की खांसी और उल्टी की समस्या बढ़ जाती है, लेकिन उनकी मदद के लिए कोई उतरकर नहीं जाता। फिर, मुन्ना फिर से आता है और उसकी नजर गुप्ता जी पर पड़ती है। इस बार, वह अपनी मदद की इच्छा से गुप्ता जी के पास जाता है। गुप्ता जी की स्वास्थ्य समस्या को ध्यान में रखते हुए, मुन्ना उन्हें संभालता है और उनकी स्थिति के बारे में पूछता है। इससे यह समझने को मिलता है कि हमें अपने चाहने या अपने काम की चिंता के बावजूद, समय निकालकर दूसरों की मदद करनी चाहिए। गुप्ता जी की स्थिति बिगड़ रही थी, लेकिन मुन्ना किन्नर ने उन्हें मदद की और उन्हें अस्पताल ले जाने का प्रस्ताव दिया। गुप्ता जी उनके साथ चलने लगे जैसे बड़े बेहाल व्यक्ति के साथ उसका बेटा या सहारा बनकर। इसके बाद, वे स्टेशन पर पहुंचकर नीचे उतर गए। शाम को, गुप्ता जी और मुन्ना दोनों हमारे साथ ट्रेन में बैठे, और वे खुशी से एक दूसरे के साथ बातें कर रहे थे। इससे हम सभी को अच्छा लगा, क्योंकि अब मुन्ना गुप्ता जी के लिए अशुभ नहीं रहा। यह समझाता है कि भले ही आधिकारिक रूप से वे एक दूसरे के लिए अजनबी थे, लेकिन वास्तव में वे एक दूरस्थ परिवार के सदस्य की तरह एक-दूसरे की मदद कर रहे थे। यह कहानी

अस्मिता की पहचान को दर्शाती है। यह दिखाती है कि अस्मिता की पहचान न केवल समाज में स्थिति के आधार पर होती है, बल्कि व्यक्तित्व, सहानुभूति और मानवता के माध्यम से भी होती है। गुप्ता जी और मुन्ना किन्नर की यह नई संबंध स्थापित करने की अपनी अद्वितीय पहचान है जो केवल सामाजिक परंपराओं से नहीं बल्कि मानवता के मूल्यों से भी जुड़ी होती है।

नया प्रयोग – डॉ. शील कौशिक

कहानी का कथानक निशा के चारों ओर घूमता है, एक साहसी और दृढ़ संकल्पी व्यक्ति, जो किन्नर समुदाय से संबंधित है। अनेक चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, निशा एक ग्रामीण बैंक में नौकरी हासिल करती है। उसकी सहानुभूति और आत्म-विश्वास की वजह से, वह समाज में पूर्वाग्रहों को परास्त करती है और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करती है। निशा की यात्रा के माध्यम से, कहानी ट्रांसजेंडर समुदाय के सामने आने वाली कई संघर्षों और भेदभावों को दर्शाती है, समाज में सहानुभूति और समझ के महत्व को उजागर करते हुए। इसके अलावा, कहानी एक महत्वपूर्ण संदेश प्रस्तुत करती है कि सफलता के लिए स्वाभिमान, संघर्ष, और सहनशीलता महत्वपूर्ण होते हैं।

त्याग और मानवता –पंकज शर्मा

एक युवती रेलगाड़ी स्टेशन पर एक सीट पर सफर कर रही थी, जब उसने दो किन्नरों को हैलो कहा और उनके साथ बातचीत की। इसके बाद, गाड़ी में उनके साथ बातचीत की और फिर उनकी बहन से भी। दूसरे यात्रियों ने भी उन्हें ध्यान से देखा। उस युवती से पूछा गया कि उन्हें किन्नर कैसे जानती हैं, तो उसने बताया कि उनकी बड़ी बहन की सेहत खराब है और उन्हें

ऑपरेशन की आवश्यकता है। इसके बाद, उन्होंने अपने बहन के लिए गुवाहाटी से चंडीगढ़ जाने का वर्णन किया, जहाँ उन्होंने गुर्दे का डोनेशन किया था। युवती ने मेरे प्रश्न का उत्तर दिया और एक विनम्र और दृष्टिकोण से कहा, "वह मेरी बहन है, आखिरकार, कोई बस ऐसे ही मर जाता। और बताइए, इंसान एक किडनी के साथ भी ठीक-ठाक काम कर सकता है, सभी को यह पता है।"[1] यह जीवन के मूल्य और सहनशीलता का एक अद्वितीय बोध कराता है। आगे बढ़ते हुए, उन्होंने अपनी यात्रा के एक घटना को साझा किया, जब वे गुवाहाटी से चंडीगढ़ अपनी बहन को लेकर जा रहे थे। उन्होंने बताया कि उनकी बहन की हालत यात्रा के दौरान काफी बुरी हो गई थी, जिससे सभी को बड़ी चिंता हुई थी। एक स्टेशन पर, दो किन्नर उनके डिब्बे के पास आकर पैसे मांगने लगे। अपनी बहन की निकटता में होने के बावजूद, परिवार ने किन्नरों के साथ सहानुभूति दिखाई। उन्होंने शुरूआत में उन्हें दस रुपये का नोट दिया, लेकिन बहन की हालत देखकर और उनके बारे में सुनकर, वे पैसे वापस कर दिए और अपने पास से भी दो हजार रुपये देकर परिवार की मदद की। पैसे वापस करते समय, उन्होंने दिल से प्रार्थनाएं और आशीर्वाद भी दिए, परिवार को समझाते हुए कि उनकी बहन पूरी तरह से ठीक हो जाएगी और उन्हें चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस दयालुता और एकजुटता के नजरिए ने मुझे गहराई से प्रभावित किया, खासकर उनकी आँखों में पानी आने की बात को ध्यान में रखते हुए। उनकी युवा और दिल से आवाज में एक स्वार्थरहित भावना थी, जिसने हमें भी प्रभावित किया। उनकी यह अद्भुत कहानी देखते हुए हमें यह महसूस हुआ कि उन्होंने अपने साथीयों के साथ बहुत गहरी और सजीव बनाया है। उनके द्वारा दी गई आत्मा संबल, साहस और उत्साह ने उनकी दीदी की स्थिति में सुधार लाने में मदद की, जिससे वे ठीक-ठाक चंडीगढ़ के अस्पताल तक पहुंचे। उनका सफल ऑपरेशन और

उनकी दीदी के स्वास्थ्य में सुधार उनकी सहयाता और निःस्वार्थ उपकार के प्रति उनकी युवा की अद्भुत और दयालु भावना को प्रकट करते हैं। उनके द्वारा बताई गई दिल छू लेने वाली कहानी ने हमें समझाया कि किसी के जीवन में अच्छे काम करने की सच्ची खुशी क्या है। इस अनूठी मिलनसार कहानी ने हमें एक साथ रहने और सहयोग करने के महत्व को समझाया। उस युवा की भावनाओं को देखकर हमारी आँखें भी नम हो गईं, जो हमें उनके साथीयों के प्रति उनकी गहरी प्रेम और समर्थन के प्रति अभिव्यक्त किया। जब उस युवती ने भावुक आवाज में अपनी कहानी साझा की, तो मेरी आँखों से भी आंसू निकल आए और मैंने अपने आप को एक निष्ठुर श्रोता के रूप में महसूस किया। उस युवती और उन दोनों किन्नरों के सामने, मैं चुपचाप हो गया और मेरे मन में एक महान भावना उत्पन्न हुई। उनकी कथा सुनकर मुझे उनकी उत्कृष्टता और साहस की अद्भुतता का आभास हुआ। यह अनुपम मिलनसार कहानी ने मुझे एक सहयोगी और संदेशवाहक दृष्टिकोण विकसित कराया।

मर्दानगी – सुधीर कुशवाह

यह कहानी एक सामाजिक संदेश के साथ एक व्यक्तिगत और सामाजिक संघर्ष को विशेष रूप से उजागर करती है। जगत सिंह जाट के चरित्र में हमें उसके अंतर्निहित संघर्ष, उसकी सोच और सामाजिक परिप्रेक्ष्य की धारणा मिलती है। उसके पति द्वारा उसके साथ गलत व्यवहार की रोशनी में, हम उसके आत्म-सम्मान की कमी और सामाजिक असमानता का अनुभव करते हैं। डॉक्टर विक्रम के वादों के माध्यम से, हमें समाज में मर्दानगी के परिपेक्ष में नारी के स्थान को समझाया जाता है। इस कहानी में डॉक्टर विक्रम के उपदेश द्वारा, हमें एक समाज में समानता और

इंसानियत के महत्व को समझाया जाता है। उसके वचन द्वारा, हम देखते हैं कि समाज के स्तर पर कैसे नारी और मर्द के भूमिका में बदलाव आया है, और कैसे समानता और इंसानियत की भावना को समझाने की जरूरत है। इसके अलावा, किन्नर समाज की लघुकथाओं के माध्यम से, हमें समाज में उपेक्षित और असमान के खिलाफ उनकी आंदोलन और समर्थन करने की महत्वपूर्णता को समझाया जाता है। इसका संदेश है कि समाज में समानता, इनसानियत और समरसता को प्रोत्साहित करने के लिए हमें अपने अंदर की असली और बेहतर भावनाओं को उत्कृष्ट करना चाहिए। यह कहानी अधिकारों के प्रति समाजिक विरोध को उजागर कर सकती है। कहानी में महिलाओं के साथ अन्याय और समाजिक असमानता का विवरण है, जो उन्हें उनके अधिकारों से वंचित करता है। डॉक्टर विक्रम के वचनों के माध्यम से, समाज में महिलाओं के समान अधिकार और समानता की आवश्यकता का बोध किया जाता है। इसलिए, यह कहानी समाजिक विरोध के खिलाफ एक संदेश प्रस्तुत कर सकती है।

किन्नर – रमेशचन्द्र सिंह बेलौड़ी

एक आदमी ट्रेन में सो रहा है, जब उसे अपनी नींद से जगाने की आवाज़ सुनाई देती है। उसे प्रभावित होकर वह आंखें खोलता है और ट्रेन के एक किन्नर समूह को देखता है जो मजाक कर रहा है। लेकिन एक किन्नर उसकी बीबी को लेकर अवहेलना करता है और उसे बेहद असहमति और शर्मिंदगी का सामना करना पड़ता है। उसने इस किन्नर समूह के एक सदस्य को 10 रुपये देकर छोड़ दिया था, लेकिन एक किन्नर ने उसे गाली दे रहा था "ऊपर आऊँगी तो तुम्हारी बीबी क्या करेगी भेरुए.... तब तू मुझे रखेगा क्या?"[3] ऐसी गाली देना इन किन्नरों के लिए आम बात

थी। इसको कोई बुरा नहीं मानता था। उसने भी नहीं माना। उसे वह बहुत सुंदर लग रही थी। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें, पतले खूबसूरत होंठ, गुलाबी लिपस्टिक और काजल ने उसे बेहद सेक्सी बना दिया था अचानक उसने 10 का नोट पॉकेट में रखा। 2000 रुपये का एक नोट निकाला और अपने विजिटिंग कार्ड के साथ उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा,

"ये ले...यह मेरा पता है।"[4] उस किन्नर ने उसके रुपये को लेकर उसके मुँह पर दे मारा। विजिटिंग कार्ड लेकर रख लिया।

"अबे ! मुझे रण्डी समझता है क्या... अपनी बीबी को कोठे पर बैठा दे। मैं भी मुजरा सुनने आ जाऊँगी... और सुन तेरी बीबी को इसका वीडियो क्लिप भेज दूँगी।"[5] तभी उसकी नजर उसकी एक साथी किन्नर पर पड़ी जो इसका वीडियो बना रही थी। आज पहली बार किसी ने सरेआम उसकी इतनी बेइज्जती की थी। साथ बैठे यात्री ठहाका लगा रहे थे और वह अपना विजिटिंग कार्ड वापस पाने और वीडियो क्लिप डिलीट करने के लिए उससे विनती कर रहा था। जिससे उसे अपमान का सामना करना पड़ा। यह घटना उसे अपनी गलती का अहसास कराती है और उसे अपनी चुप्पी को तोड़ने के लिए मजबूर करती है।

सपनों का राजमहल– नेहा अग्रवाल 'नेह'

कहानी में, एक बालिका कमली को अपने पिताजी द्वारा एक ट्रेन में जाने के लिए जबरदस्ती बिठाया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप उसकी आज़ादी और स्वतंत्रता संकट में पड़ जाती है। इसके बाद, वह अपने सपनों को पूरा करने के लिए संघर्ष करती है, जैसे कि अपने खुद का टीवी

चैनल चलाने की इच्छा। वह अपने सपनों को पूरा करने के लिए अपने किन्नर होने के सम्मान को ध्यान में रखती है और उनकी सहायता करके उन्हें समाज में स्वीकृति और सम्मान प्राप्त करती है। इस दौरान, वह संघर्षों का सामना करती है, लेकिन अपनी ज़िद्दीता और संकल्प से उन्हें पार करती है और अपने सपनों को हकीकत में बदलती है।कहानी में, कमली की आत्मकथा दर्शाती है कि किस प्रकार वह अपने अत्यंत चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी अपने सपनों को पूरा करने के लिए संघर्ष करती है। वह अपने परिवार द्वारा उसके साथ की जाने वाली अत्याचारिक व्यवहार के बावजूद, अपनी ज़िंदगी में स्वतंत्रता के लिए लड़ती है।कहानी दर्शाती है कि समाज की प्रतीक्षा और स्वीकृति की भावना किस प्रकार स्वतंत्रता को प्रभावित कर सकती है, और कैसे व्यक्ति की आत्मसमर्पण और साहस उसे अपने सपनों को पूरा करने में सहायक हो सकते हैं।

तुमको नमन – पारस दासोत

सुबह की पहली किरणों के साथ ही, एक किन्नर ने भगवान की प्रार्थना की और उनका नमन किया। लेकिन तभी एक आवाज उठी, जो उन्हें रोक दिया। यह आवाज उन्हें बताती है कि उन्हें अपनी असली पहचान को स्वीकार करनी चाहिए। उसे यह समझाते हुए कि वह एक किन्नर है और उसे अपनी गरिमा को समझना चाहिए। किन्नर ने इस आवाज का उत्तर दिया, कहते हुए कि यदि वह नमन करता है, तो लोग उसे किन्नर ही समझेंगे। वह अपने स्वाभिमान को संरक्षित रखने के लिए इसका विरोध करता है। उसने यह भी कहा कि वह सबसे पहले किसी को नमन नहीं करेगा, और उसने अपनी क्षमा मांगी। इससे यह स्पष्ट होता है कि वह अपनी स्वाभिमानिता को महत्व देता है और अपनी असली पहचान को स्वीकार करता है। यह कहानी अस्तितिव की

पहचान को दर्शाती है, जैसा कि किन्नर अपनी स्वाभिमानिता और असली पहचान को समझकर उसे स्वीकार करता है। वह अपने स्वाभिमान को संरक्षित रखने के लिए सामाजिक मान्यता को त्यागने के बजाय अपनी असली पहचान पर ध्यान केंद्रित करता है। इससे, यह कहानी अस्तितिव की महत्वपूर्ण पहचान के महत्व को बढ़ावा देती है।

संदर्भ –सूची

1.घोटड़ डॉ॰ रामकुमार, अग्रवाल डॉ॰ लता, किन्नर समाज की लघुकथाएं, साहित्य चंद्रिका,जयपुर, 2019, पृ 139

2. वही पृ॰87

3.वही पृ॰120

4.वही पृ॰120

5.वही पृ॰133

6.वही पृ॰120

तृतीय अध्याय: विद्रोही चेतना

3.2 विद्रोही चेतना

कल्पना मिश्रा – कर्जदार

इस कहानी में एक समाज एक परिवार अपने शिशु के लिंगों को कैसे परखते हैं यह दर्शाया है, और कभी कभी लिंगों के आधार पर भेदभाव करते दिखाई देते हैं । इस कहानी में एक मां अपनी बेटी को बिदा करके आई थी तब अचानक उसे पुरानी चीज़े याद आ गई जब उसके घर के दरवाजे पर नवजात को ज़मीन पर पुराने कपड़ों में लिपटी पड़ी थी और साथ में एक चिट्ठी थी और उसमें लिखा था की चौथी लड़की है मजबूर हूं , डर है की अगर ये रही तो पति मुझे छोड़ देंगे, और बाकियों का हाल भी बहुत बुरा होगा, इस अभागी को आशीर्वाद के साथ प्यार देने के लिए कहती हैं यहां हमें पता चलता है की एक पितृसत्तात्मक अपने नियम एक स्त्री पर कितने लागू करता है और बेटी होने से शोषण करता है यह बताया है और एक स्त्री डर से अपने बच्चों को किसी को सौंप देने के लिए तयार हो जाती हैं। जब वह किन्नर उस बच्चे को उठाती है तो वह बच्ची मुस्कुराती है और उसका नाम मुस्कान रखा जाता है,वह उसे अपने कलेजे से लगाकर रखती है जब पहली बार उस बच्ची ने उसे मां कहकर बुलाया, मानो दुनियाभर की नियामत उसे मिल गई हो। उसे तो कभी ममता की छांव नसीब नही हुई थी, पर मुस्कान को वह घर से लेकर बाहर, स्कूल तक, समाज के तीनों से लड़ती, बचाती, बड़ी जिम्मेदारी से मां –बाप दोनों ही का फ़र्ज़ निभाती है, फिर पढ़ाई पूरी होने के बाद अच्छा घर, वर देखकर शादी कर दी।। और अब वह कलेजे का टुकड़ा विदा होकर अपने घर चली गई थी और कहते हैं ना की कर्जदार तो वह हैं, इस

अनाम मां की, जिसने उस जैसी किन्नर को, मातृत्व का सुख लेने का अनमोल तोहफा दिया था। इस कहानी में एक निर्दयी परिवार की मानसिकता को दर्शाया है जहां वे एक शिशु को किन्नर के दरवाजे के पास जमीन पर पुराने कपड़ों में लिपटकर छोड़ दिया था वह भी एक चिट्ठी के साथ मजबूरी के कारण।

किन्नर माँ – रूबी प्रसाद

मानसी की कहानी एक महिला के साहस और संघर्ष का प्रतिबिम्ब है जो अपने बेटे के साथ एक किन्नर के रूप में पलने का साहस दिखाती है। जब उसे यह खबर मिलती है कि उसका बेटा एक किन्नर है, तो उसे सामाजिक दबाव और असहमति का सामना करना पड़ता है। लेकिन उसका प्रेम और साहस उसे अपने बेटे के साथ खड़े होने के लिए मजबूर करता है।

मानसी को अपने बेटे को पालने में कई संघर्षों का सामना करना पड़ता है। सामाजिक असमानता, असहमति और उपेक्षा के बावजूद, वह अपने बेटे के साथ उसका समर्थन करती है। उसका साहस और संघर्ष दिखाता है कि मानसी कैसे अपने बेटे के लिए जीवन की मुश्किल से मुकाबला करती है और उसके सपनों को पूरा करने के लिए लड़ती है। आकाश का उच्चारण, मानसी की मेहनत और उसका प्रेम दिखाता है कि किसी की जाति, लिंग, या अन्य स्थिति के आधार पर उसकी मूलभूत मानवीय गुणों का मूल्यांकन नहीं होना चाहिए। यह कहानी समाज में जातिवाद और भेदभाव के खिलाफ एक शक्तिशाली संदेश प्रस्तुत करती है और लोगों को समानता और समरसता की ओर अग्रसर करती है।

टीस – रश्मि तरीका

कहानी में प्रमुख पात्र कमल और पंकज हैं। कमल ने निर्णय लिया है कि उसे अब और शारीरिक शोषण नहीं सहना है, चाहे वह किसी की संतुष्टि के लिए हो या पैसे के लिए। वह अपनी आवाज़ उठाते हुए इस बात का सामना करता है कि इंसान की मनमर्जी भी अब ईश्वर की न्यायाधीनता के साथ ही भूल गई है। पंकज की कोशिशें उसके असफल होने के बावजूद, वह अपनी सच्ची पहचान के लिए लड़ने के लिए प्रतिबद्ध हैं। वह अपने अंदर के मानवीयता को स्वीकार करने की प्रेरणा लेते हैं, जो उन्हें समाज में स्थायीता और सम्मान प्रदान करती है। इस रूप में, कहानी एक गहरा संदेश लेकर आती है कि इंसानीता और स्वाभिमान को संरक्षित रखना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए, चाहे जीवन की कोई भी परिस्थिति क्यों न हो। कहानी में सामाजिक विरोध का मुद्दा उठाया गया है। पंकज और कमल के चरित्रों के माध्यम से, समाज में स्वाभिमान और मानवीय सम्मान की महत्वपूर्णता को उजागर किया गया है।

चंदन –अनघा जोगलेकर

इस कहानी में लोग समाज एक देवदासी को कौनसे से नज़रों से देखते हैं वह बताया है।इस कहानी में बथुआ (किन्नर) एक लड़की की जान बचाता है और वह उसकी मोह में पड़ जाता है। जैसे कि "तेरे इस पत्थर के भगवान की कोई तो ख़ास मंशा रही होगी न मुझे इस दुनिया में भेजने की,तो समझ लें कि तेरी बेटी को बचाने के लिए ही उसने मुझे……।"[1] यहां पर हमें एक मां के मन में उम्मीद जागती दिखाई देती है, यहां पर बथुआ उस लडकी की मां को दिलासा देता है की वह उसके साथ खुश रहेगी और वहीं जो लड़का है जो उसकी जान बचा सकता है और हमेशा

बचाता आया है। और मां अपनी बेटी को बथुआ के साथ भागा देती हैं और आराम दायक बैठती है और अचानक वह अपनी बीती बातों को याद करती है की वह अनाथ थी और वह यही कोई तेरह–चौदह बरस की होगी जब गांव के सरपंच, जमींदार और सेठ ने उसका ब्याह भगवान से करा दिया जाता है। तभी सरपंच उसके सर पर हाथ घुमाते हैं और कहते हैं कि "अब तुम प्रभु की अर्धांगिनी हो। तुम अब से मंदिर में ही रहोगी और भगवान के साथ साथ उसके भक्तों की भी सेवा करोगी।" यहां पर पता चलाता है कि स्त्री को एक उपभोक्ता की नजरों देखा है।और उच्च लोग ही गरीब लोगों पर शोषण करते नजर आते हैं। सरपंच का हाथ उसे विषैले सांप सा लग रहा था लेकिन वह कुछ नहीं कर सकती थी क्योंकि वह अब देवदासी बन चुकी थी। अब उसे इस समाज को झेलना था वह सहती चली गई। उसी तरह उसकी बेटी के साथ भी वही हाल होने वाला था लेकीन वह सभी को बताती है की उसकी बेटी बथुआ जो एक किन्नर है के साथ भाग गई है। लोग तरह तरह के बातें करते हैं लेकीन वह कहती है कि वह तुम जैसे हैवानों से तो मेरी बेटी उसके साथ खुश रहेगी और सुरक्षित होगी। आज वह किन्नर बथुआ उसे चंदन के वृक्ष सा लग रहा था। समाज के विषैले सांपों से घिरे होने के बाद भी उसकी नेकी की सुंगंध कम नही हो रही थी। यह कहानी एक प्रतिकात्मक कहानी है।इस कहानी में बथुआ को चंदन के वृक्ष का प्रतिक दिया गया है चंदन वृक्ष अर्थात् जो सभी नकारात्मक समाज में घिरे हुए होते हुए भी सभी को खुश रखता है, एक नेकी का सुगंध फैलाता है।

नज़राना – डॉ. लता अग्रवाल

नए मंत्रिमंडल के गठन के बाद, सड़क परिवहन मंत्री के निजी सचिव ने उन्हें बताया कि लाला मूलचंद के यहाँ से एक व्यक्ति आया है। वह सुनकर मंत्री ने उसे आदेश दिया कि वह उस व्यक्ति को मिलाए। जब सचिव ने उसे मिलाने के लिए बुलाया, तो उसने बताया कि लाला मूलचंद चाहते हैं कि बायपास रोड परियोजना का प्लान बदला जाए और उसे मरी माता चौराहे के पीछे से निकाला जाए। मंत्री ने पूछा कि इसका क्या कारण है। सचिव ने बताया कि वहाँ पर लाला मूलचंद की जमीन है, जिसकी कीमत बढ़ जाएगी अगर परियोजना को उस तरफ लाया जाए। मंत्री ने उसे समझाया कि उन्हें उसे यह समझाना चाहिए कि किन्नर होने के बावजूद वे लोग भी अच्छे होते हैं और वे समाज के हित में काम करने के लिए हैं।

इस कहानी में एक तरह की विद्रोही चेतना दिखाई गई है। यह दिखाता है कि कैसे मंत्री ने अपने सचिव को समझाया कि समाज में सामाजिक न्याय और समर्थन के लिए काम करना चाहिए, और उसने लाला मूलचंद के प्रति उसकी आपात सोच को बदलने की अपील की। इससे यह संवाद विद्रोही चेतना को सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रेरित करता है।

किन्नर – मीना पाण्डेय

ट्रेन में सफर करते हुए, एक अकेली यात्री ने किन्नरों को परेशान करने का प्रयास किया। उसके साथी यात्री भी उसके साथ में रहकर विवादित भाव दिखा रहे थे। फिर, अचानक, पीछे से ताली पीटने की आवाज सुनाई दी, जिससे संभावना थी कि किन्नर हो सकते हैं। इस परिस्थिति में, सुरभि ने सोचा कि क्या करें। हालांकि, वे अपने बातचीत में किन्नरों के समर्थन में उन्हें एक

ओर ले गए .उसने कहा, "क्यों बे, लड़की छेड़ेगा? चल छेड़ न!!"[2] यह घटना दिखाती है कि अक्सर लोग अज्ञानता और भ्रांतियों के कारण किसी को अपमानित कर सकते हैं। उन्होंने सभी यात्रियों को बीच में ले लिया और ताली पीटकर उन्हें इतना अपमानित किया कि उन्होंने स्टेशन पर रुके बिना ही सभी यात्रियों को गायब हो दिया। फिर, किन्नरों ने वापिस आकर कहा, "बेटी! चिंता न करो, अब वे कभी किसी को छेड़ने की हिम्मत नहीं करेंगे।"[3] इसके बाद, लोग चुपचाप अपने हाथ में जेब डालने लगे। सुरभि निःशब्द रह गई। उन्हें लगा कि समाज और उसकी नजर में किन्नर देवता के समान थे जो उन्हें उपहास कर रहे थे।

इस पूरी घटना में, सुरभि के अद्भुत साहस और सहानुभूति दिखाई गई। यह घटना दिखाती है कि किन्नरों को समाज में समानता का सम्मान देना चाहिए और उन्हें उनकी मानवता का सम्मान करना चाहिए। , यह कहानी विद्रोही चेतना को उत्तेजित करती है। यह दिखाती है कि विभिन्न समाजी वर्गों और भेदभावों के खिलाफ लड़ाई में सामिल होना महत्वपूर्ण है। सुरभि जैसे प्रतिभावान चरित्र ने उन्हें समर्थन और साहस का संदेश दिया है कि वे समाज में न्याय और समानता के लिए खड़े हो सकते हैं। इसके अलावा, किन्नरों के द्वारा अपने हक की लड़ाई में उनके साथ साझा होने और उनके समर्थन में खड़े होने से समाज में बदलाव की संभावना होती है।

अनोखा मीरापन – मोहित रावत

मीरा एक साहसिक और समाज सेवी व्यक्तित्व थी, जो "सरकारी सेवाओं में किन्नर समुदाय को आरक्षण" के लिए आंदोलन की प्रमुख प्रेरणास्त्रोत और अग्रदूत थी। उनके अथक प्रयासों के बावजूद, वे व्यापारिक समूहों द्वारा अपने लक्ष्य को समझा नहीं सके। इसके बजाय, उन्होंने विरोधी

ताकतों के खिलाफ आवाज़ उठाने का इरादा किया। हालांकि, जब उन्हें व्यापारिक समूहों ने धमकाया, तो वे अपने सिद्धांतों से पलट गईं और व्यापारिक बन गईं। लेकिन इसके बावजूद, मीरा का उत्साह और निष्ठा नहीं थमी। उन्होंने कहा, "मैं मीरा हूँ..."[4] और अगली सुबह उनका आंदोलन दोबारा शुरू हो गया। विरोधी ताकतों ने उनके खिलाफ बाधाएं बढ़ाई, लेकिन मीरा के मन में जीत और हार का सवाल ही नहीं था। उन्हें यह जानकर आत्मविश्वास मिला कि उनकी मृत्यु ही हार नहीं, बल्कि उनकी मृत्यु ही जीत है। उन्होंने समझा कि जीवन का मकसद समाज की सेवा है, और वे अपने उद्देश्य के प्रति अटूट रहेंगी। नई सुबह, "मीरा की मृत्युकालीन भूख हड़ताल" के नारे के साथ उठी, और किन्नर समुदाय उनके समर्थन में एकजुट था। मीरापन लिए आन्दोलन ज्यों-ज्यों तेज होता मीरा के जीवन स्पन्दन त्यों-त्यों कम और कम... साँसों और धड़कन को महसूस करने वाले डॉक्टर्स आज नब्ज़ को ढूंढ रहे थे। उधर सरकारी दस्तावेजों में किन्नर समुदाय के आरक्षण पर मुहर लग रही थी इधर मीरा की सेवा इस युग में पूरी हो रही थी। उनका आंदोलन लोगों की भावनाओं को छूता और उन्हें एक साथ लाने का कारण बना।

मीरा ने अपने उत्साह और समर्थन के साथ समाज को नए आयाम दिए और अगले पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शन किया। उनकी सेवा और साहस ने उन्हें अगले युग के सफर पर अग्रसर किया।

इस कहानी में विद्रोही चेतना का प्रतीक है। मीरा की प्रेरणा, साहस और संघर्ष व्यक्तिगत और समाजिक स्तर पर विद्रोही चेतना को प्रकट करते हैं। उनका साहस और निष्ठा सामाजिक परिवर्तन की दिशा में उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। उनकी बात से पता चलता है कि वे संघर्ष के दौरान हारने का सोचना तक नहीं चाहती थीं, बल्कि उनका लक्ष्य और उनकी उम्मीदें अभिवृद्धि और

समाज में परिवर्तन करने की ओर थीं। उनके कार्यों से, उनकी विद्रोही चेतना का संदेश सामाजिक न्याय और समानता की मांग को प्रोत्साहित करता है।

पहचान– ममता आह

यह कहानी ट्रेन में हो रहे घटनाक्रमों के माध्यम से एक अनोखी परिचय की दास्तान है। एक युवक, जो खिड़की वाली सीट पर अपने चुप्पी से निहारते रहने का आनंद लेता है, अचानक एक किन्नर से मिलता है। किन्नर, जो भिखारी की तरह दिखता है, उसे पैसे मांगते हैं। यह प्रसंग उस युवक के सोचने को प्रेरित करता है कि समाज के भेदभाव को कैसे तोड़ा जा सकता है। उसकी समझ में आता है कि इस किन्नर का जीवन कितना कठिन हो सकता है, और वह अपने आप को उसके साथ जोड़ना चाहता है। युवक ने किन्नर से बात की और उसका परिचय लिया, जिससे उसके मन में सम्मान और प्रेम की भावना उत्पन्न हुई। वह उसे स्वावलंबी और समाज में स्थान पाने की मदद करता है। इसके परिणामस्वरूप, युवक ने खुद को समाज में स्वीकृति और सम्मान के प्रति योग्य पाया। इस कहानी के माध्यम से, हमें समाज में विभिन्न प्रकार की लोगों की प्रतिभा और महत्व को मान्यता देने की आवश्यकता को समझाया जाता है। एक व्यक्ति ट्रेन में खिड़की के पास बैठा हुआ था, जो एक गहरे सोचने वाले और संवेदनशील व्यक्ति था। वह ट्रेन के संचालन के बीच-बजाए बाहर के प्राकृतिक दृश्यों का आनंद लेता था। उसका चेहरा स्थिरता से लिपटा हुआ था, जैसे वह किसी अन्य उद्देश्य की तलाश में था। फिर एक तेज और कर्कश आवाज ने उसकी ध्यान को अचानक खींच लिया। एक व्यक्ति ट्रेन के बाहर के दृश्यों को देखते हुए और धन के लिए अनुरोध कर रहा था। उसने उस व्यक्ति को ध्यान से सुना और उससे अपने बारे में जानने

के लिए पूछा। वह जानना चाहता था कि उस व्यक्ति रोज़ कितना कमाता है। उसके बाद, वह उस व्यक्ति को अपने नेटवर्क और कार्यक्रम के बारे में बताने लगा। वह एक एन.जी.ओ. था और अपने संगठन के लिए प्रचार कर रहा था। उस व्यक्ति ने अपने आप को एक एन.जी.ओ. के रूप में परिचित किया और उसके संगठन की दिशा में बात की। उसने किन्नर को समाज में स्वीकार्यता के बारे में आश्वासन दिया और उसे अपने संगठन में शामिल होने का आग्रह किया। ट्रेन का आगाज़ हो गया और उस व्यक्ति ट्रेन से उतरने। वे एक-दूसरे के साथ साझा करते हुए, समाज में समानता और सम्मान के माध्यम से जुड़े। इस प्रकार, उन्होंने एक दूसरे के प्रति सहानुभूति और समर्थन का एक उदाहरण स्थापित किया।

यह कहानी विद्रोही चेतना को दर्शाती है। युवक ने सामाजिक भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई और किन्नर से सहयोग किया, जिससे उनकी स्वीकृति और समानता की चेतना बढ़ी। उसने सामाजिक असमानता को खत्म करने और समाज में समानता को स्थापित करने के लिए सक्रिय रूप से काम किया। इस प्रकार, यह कहानी विद्रोही चेतना को स्थापित करती है और समाज में समानता और सहानुभूति के प्रति जागरूकता बढ़ाती है।

इसी दुनिया के – मन्नू लाल

कहानी में, एक युवती अपने दादाजी से किन्नर समुदाय के बारे में बात करती है, जिन्हें वह अपने कलेजे के टुकड़े समझती है। उसे दादाजी के आश्वासन का उत्तराधिकारी स्वीकार नहीं होता क्योंकि उन्हें लगता है कि समाज उन्हें कभी स्वीकार नहीं करेगा। बाद में, एक किन्नर बच्चे के साथ घटित हत्या के बारे में उसके दादाजी और वह की बातचीत दिखाई देती है। उसके दादाजी

का प्रस्ताव है कि बहु उस किन्नर बच्चे के साथ धीरे-धीरे टेदूआ दबा दे, जिससे कि वह किन्नर के बच्चे का हत्या कर सके, लेकिन जेल न जाए। इससे पहले कि कुछ हो, वह बहु खुद को और अपने बच्चे को सुरक्षित रखने के लिए कानून की मदद लेने का फैसला करती है। यह कहानी समाज में स्थितिगत बिगड़ते हुए नैतिकता को उजागर करती है, जिसमें कुछ लोग अपने स्थितिगत धार्मिक और सामाजिक धार्मिकता के लिए अपराध को सही मानते हैं। यह कहानी समाज में उच्चारित सोच की जरूरत को दर्शाती है और उसे प्रेरित करती है कि समाज में विरोधी धारणाओं को खत्म करने के लिए कार्रवाई की जाए। कहानी में, एक युवती अपने दादाजी से किन्नर समुदाय के बारे में बात करती है, जिन्हें वह अपने कलेजे के टुकड़े समझती है। उसे दादाजी के आश्वासन का उत्तराधिकारी स्वीकार नहीं होता क्योंकि उन्हें लगता है कि समाज उन्हें कभी स्वीकार नहीं करेगा। बाद में, एक किन्नर बच्चे के साथ घटित हत्या के बारे में उसके दादाजी और वह की बातचीत दिखाई देती है। उसके दादाजी का प्रस्ताव है कि बहु उस किन्नर बच्चे के साथ धीरे-धीरे टेदूआ दबा दे, जिससे कि वह किन्नर के बच्चे का हत्या कर सके, लेकिन जेल न जाए। इससे पहले कि कुछ हो, वह बहु खुद को और अपने बच्चे को सुरक्षित रखने के लिए कानून की मदद लेने का फैसला करती है। यह कहानी समाज में स्थितिगत बिगड़ते हुए नैतिकता को उजागर करती है, जिसमें कुछ लोग अपने स्थितिगत धार्मिक और सामाजिक धार्मिकता के लिए अपराध को सही मानते हैं। यह कहानी समाज में उच्चारित सोच की जरूरत को दर्शाती है और उसे प्रेरित करती है कि समाज में विरोधी धारणाओं को खत्म करने के लिए कार्रवाई की जाए। दादाजी ने पूछा, “तूने सुरेश से बात की क्या?” जिस पर जवाब मिला, “हां, किया, लेकिन अब उसकी बातें भी अलग हैं। उसने कहा कि सब कुछ ईश्वर का प्रसाद है और वह अपनी पढ़ाई करके बड़ा

ऑफिसर बनने की ख्वाहिश रखता है। सरकारी स्तर पर उसे लैंगिग पहचान भी मिल गई है।"[1] दादाजी ने फिर पूछा, "क्या उसका दिमाग फिर से खराब हो गया है? पहले तो वह बहुत परेशान था।"[2] हाँ, पहले तो उसे भी काफी परेशानी हुई थी। लेकिन जैसे-जैसे बच्चा बड़ा हो रहा है, उसके साथ खेलने की खासी क्रीड़ाएं भी बढ़ रही हैं, जिसे देखकर उसे काफी खुशी हो रही है। वह उस गोल-मटोल बच्चे की खिलौनों और उसकी खेलने की शौकिया बातों को देखकर मुदित हो रहा है। आपने तो उसका चेहरा भी महीनों से नहीं देखा है।"[3] सुरेश को बच्चे के साथ बुलाकर समय बिताने की कोशिश करते हैं, दादाजी खुशी और उत्साह से भरे हुए बच्चे के पास गए। उन्होंने बच्चे को उठाकर उसकी गोद में बिठाया, लेकिन कुछ ही पलों में बच्चे ने दादाजी की मूँछों को पकड़ लिया। दादाजी ने बच्चे को हटाने की कोशिश की, लेकिन वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। दादाजी हँस पड़े, और वह बच्चे को फिर से गोद में ले लिया। यह कहानी विद्रोही चेतना को दर्शाती है। इसमें दिखाया गया है कि कैसे एक युवा और उसकी परिवार की दृढ़ता से उन्होंने समाजिक और धार्मिक धारणाओं के खिलाफ खड़े होकर सही और न्यायिक कार्रवाई की मांग की है। इससे समाज में सुधार और न्याय की मांग को बढ़ावा मिलता है।

संदर्भ –सूची

1.घोटड़ डॉ॰ रामकुमार, अग्रवाल डॉ॰ लता, किन्नर समाज की लघुकथाएं, साहित्य चंद्रिका,जयपुर, 2019, पृ॰19

2. वही पृ॰114

3. वही पृ॰110

4. वही पृ॰110

5. वही पृ॰43

6. वही पृ॰43

7. वही पृ॰117

8. वही पृ॰117

9. वही पृ॰117

10. वही पृ॰117

तृतीय अध्याय: अधिकारों के प्रति सामाजिक विरोध

3.3 अधिकारों के प्रति सामाजिक विरोध

फजीहत – डॉ० शील कौशिक

कहानी में सुनन्दा नामक एक किन्नर की संघर्ष और साहस को दर्शाती है, जो समाज में न्याय के लिए लड़ता है। जब उसकी पड़ोसन मानसी को उसके साथ बुरी तरह से व्यवहार करती है, तो सुनन्दा उसे सहानुभूति से नहीं, बल्कि संभावित उपाय के साथ समझाने की कोशिश करता है। इसके बावजूद, मानसी की जिद्द और असहनशीलता के कारण, स्थिति कंप्लीटली निर्णायक नहीं हो पाती है और यह एक बड़ी संघर्षपूर्ण स्थिति बन जाती है। कहानी न सिर्फ एक किन्नर के जीवन की वास्तविकता को उजागर करती है, बल्कि वह भी दिखाती है कि न्याय और समर्थन की कमी में समाज में अन्याय कैसे होता है।

यह भारत है – डॉ० राजकुमार घोटड़

इस कहानी में, एक व्यक्ति अपने घर की ओर लौट रहा है और रास्ते में एक व्यक्ति को दौड़ते हुए देखता है। उसे पूछते हुए पता चलता है कि वह क्यों दौड़ रहा है। दूसरा व्यक्ति बताता है कि पुलिस उसके आसपास घूम रही है और एक महिला के साथ हुए बलात्कार के आरोपी की तलाश में युवकों को पकड़ रही है।

"फिर तुम्हें किस बात का डर, तू तो एक हिजड़ा है, हिजड़ा..!"[1]

"बाबू! यह भारत है भारत, यहाँ बीस वर्ष तो यह साबित करने में लग जायेंगे कि मैं एक हिजड़ा हूँ, मर्द नहीं, जबकि बलात्कार के अपराधी को सजा ही सात वर्ष की होती है।"[2] और वो बड़बड़ाता हुआ जंगल की ओर भाग गया। इस संदेश में, व्यक्तिगत सुरक्षा और समाजिक न्याय की महत्वपूर्ण भूमिका दिखाई गई है, जहाँ एक को अपने अधिकारों की रक्षा करने के लिए स्थिति का सामना करना पड़ता है।यह कहानी अधिकारों के प्रति समाज में मौजूदा विरोध को दर्शाता है। व्यक्ति को उसके लिंग और समाज में स्थिति के कारण अपने अधिकारों की रक्षा करने में संघर्ष करना पड़ता है।

कुमार गौरव –मर्दानी

यह कहानी में आर्थिक परिस्थिति को भी दर्शाती हैं। इसमें कैसे समाज के लोग किन्नरों पर शोषण करते हैं यह बताया गया है। इस कहानी में झुन्ना लवंडई करते हैं, शारीरिक बनावट की उनकी पूंजी होती है। साड़ी, बिंदी, चोटी लगाकर ब्याह, सगाई और ऐसे ही प्रयोजनों में औरत बनकर नाचना यही उनकी रोजी –रोटी का जरिया था। जब वह जमींदार साहेब की बिटिया के विवाह पूर्व संध्या पर आयोजित कार्यक्रम में नाचकर वापस अपने ऊपर चढ़े औरत को उतारकर बक्से में रख रही थी की उसका ध्यान उसके कमर पर जमे हुए खून पर चला गया, जमींदार साहेब के बड़के दामाद ने पांच सौ का नोट दिखाकर पास बुलाया था और कमर में चिकोटी काटते हुए नोट उसके ब्लाउज में ठूंस दिया था, उसका मन घिन्ना गया था, लेकिन तब वो औरत का मुलम्मा चढ़ाए हुए था इसलिए वह चुप था। तभी अचानक लाइट चली गई और शोरगुल बढ़ता देख झुन्ना भी कोठी में पहुंचा तो मालूम पड़ा कि अंधेरे में बिटिया की सहेली के सीने पर किसी ने हाथ मारा

था। कितनी शर्मनाक समाज को दर्शाया है जो अपने ही लोगों को छोड़ते नहीं है । जमींदार साहब चिल्लाते है की ऐसी नीच हरकत किसने की लेकिन कोई बताने के लिए तयार नही था झुन्ना की नज़रे दामाद बाबू पर थी दामाद बाबू यह देखकर बौखलाए और उसे कहता है की "घूरता क्या है बे हिजड़े, हमको ऐसा वैसा आदमी समझ रखा है क्या?[2] वह कहती है की हमने तो कुछ कहा भी नही,वाहबुस उस पर मारने के लिए चला जाता है तो वह उसका हाथ पकड़कर उमेठ देता है और कहता है की " आप जैसे लोगों के कुकर्म से बचाने के लिए ही भगवान थोड़ा मर्दानगी धर दिए हैं हमारे अंदर।"[3] इन जैसे लोगों पर मनुष्य के नाम पर धप्पा लगा हुआ दिखाई देता है, को खुद गंदे काम करते हैं और दूसरों के उपर डाल देते हैं।

अनोखा मुकदमा – कनक हरलालका

यह कहानी एक नकारात्मक सोच रखने वाले परिवार जो अपने ही बच्चे को निर्दयता दिखाते हुए कूड़े में फेंक गया यह दर्शाया है और एक किन्नर जो ममता के लालसा में आकर उसे अपना बनाने के लिए मुकदमा लड़ती है। आज कोर्ट का माहौल अलग था हर तरफ़ खुसर–पसर चल रही थी। कानून की मूर्ति की आंखे काली पट्टी के भीतर विचलित थी। एक आपत्ति दर्ज कराई गई थी। जज साहिबा अपने पक्ष में रहने के लिए कहती है। यह सुनकर एक किन्नर कहती है कि क्या पक्ष रखूं जज साहिबा, मेरा अपराध है की मैं किन्नर हूं। मुझ पर आरोप है बच्ची को मैं किन्नर बना दूंगी! मैं तो खुद किन्नर होने का दंड भुगत रही हूं। यह मेरा पेशा नहीं कि मैं किसी को मजबूरन यह जीवन जीने के लिए बाध्य कर दूं, मैं जानती हूं किन्नर होने का दर्द, न परिवार, न माता–पिता, ना किसी की निगाह में सम्मान, ना ही प्रेम। मैं क्या कर सकती हूं। मैं तो अपनी मर्जी से तो किन्नर

नहीं बनी ना? ईश्वर के निर्णय को कैसे बदल सकती हूं। ना मैं बीज हूं, ना भूमि हूं, ना सृजक हूं, ना ही मैं पोषक, पर मैं पालक हूं। यदि मैं स्त्री या पुरुष के तत्व से युक्त होती तो अपने परिवार के साथ होती, किसी खानदान की बहु या बेटी होती, मेरे भी साथ फेरे होते, सुहागन और मां बनने के अवसर होते या अगर पुरूष होती तो पति और पिता बन सकती, न मेरा कोई धर्म है, न जाति, न लिंग न वर्ण, मैं तो सबसे परे हूं। उस दिन जब कूड़े के ढेर में पड़ी वो अबोध रो रही थी तो सम्मान के भूखे ये दोनों ही सृजक और पोषक लोग किसी चारदीवारी में मुंह छिपाए हुए थे। तब मैंने अपने भीतर की ममता को नहीं मारा और इस बच्ची को अपने सीने से लगा लिया। वह जज साहिबा से प्रश्न पूछती है कि क्या वह उसका पालन नहीं कर सकती? न जन्म दे सकने वाली मां के दिल में, न अस्तित्व में लाने वाले पिता के दिल में इसके लिए प्रेम था। ऐसे में विधाता ने हमारे सीने में ममता क्यों भला डाली? बस इसी ममता के वश में आकर मैंने इस बच्ची को उठा लिया था मेरी कोई मंशा नहीं थी की मैं इसे किन्नर का जीवन दूं। मां बनकर इसे प्यार देना चाहती हूं, पढ़ाना चाहती हूं, एक नई पहचान देना चाहती हूं, सुरक्षा करना चाहती हूं ताकि किसी गलत हाथों में पड़कर इसका जीवन ना बर्बाद हो जाए। जज साहिबा यह सब सुनकर अपना चश्मा उतारते हुए कहती हैं कि " ठीक है पर कल को यह बच्ची एक किन्नर के साथ असहज महसूस नहीं करेगी? अगर नाच –गाना छोड़ देगी तो कैसे पालन –पोषण करोगी तुम इसका?"[4] यहां हमें पता चलता है कि हम यही धारणा लेकर चलते हैं कि एक किन्नर बच्ची उसके साथ असहज होगी और वह उसका देखभाल भी ठीक से नही कर पाएगी यह सोच सब व्यर्थ है। तो यह सुनकर वह कहती हैं कि वह एक चाय की दुकान खोल देने का फ़ैसला की है वह उस बच्ची को अपनी बच्ची समझकर

संभालने के लिए सब कुछ करने के लिए तयार है और वह कहती है कि वह ऐसा भी काम करेगी जो उसे सम्मान दे सकें। कानून की मूर्ति बेचैन थी तराजू के पलड़े ऊपर–नीचे हो रहे थे तभी जज साहिबा बोली की "ठीक है तुम्हारे हाथों में एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी सौंप रही हूं, तुम्हें हर छः महीने कोर्ट में बच्ची के साथ हाज़िरी लगानी होगी और एक सामाजिक संस्था तुम पर निगाह रखेगी।"[5] यह कहकर जज साहिबा मुस्कुराते उठी। और कोर्ट का एक अनोखा मुकदमा सुन रहा था उधर कानून की मूर्ति की पट्टी के आंखें निश्चिन्त थी और कान खुश थे।

गोविन्द शर्मा – इंसान

यह कहानी में हमें किन्नर समुदाय अपने अधिकारों के प्रति सामाजिक विरोध करते हुए दिखाई देती है तथा व्यवसाय के वजह से लोग उन्हें उनके वस्त्र के आधार पर निहारने लगते हैं। जैसे जब एक युवती ट्रैन के डिब्बे में चढ़ती है। उसे उस डिब्बे में बैठे युवक को उनका तमाशा बनाने का बहाना मिल जाता है। वे उससे संवाद करते हैं कि वह कौन है? फिर वह उनसे पूछती हैं की वह उन्हें क्या लगती हैं। वे उसे कहते हैं की वह उनको एक सुंदर लड़की लगती है, पर शरीर की बनावट कह रही है कि किसी लड़के ने लड़कियों के कपड़े पहन रखे हैं और मेकअप कर रखा है या फिर वह भी हो सकती है यह कहकर उस युवक ने ताली बजाई। यह देखकर उसे कहती हैं की ताली तो आप भी हमारे जैसी ही बजा लेते हैं पर इन तीन के साथ ही एक और भी होता है, उधर आप का ध्यान नहीं गया, क्योंकि आप मेरी ड्रेस पर ही अटक गए, जिसे लोग अपने –अपने व्यवसाय जैसी भी पहनती है। तो वे कहते हैं की नहीं, सृष्टि के प्रारंभ से स्त्री, पुरूष और किन्नर तीन ही होते हैं। और एक युवक कहता है की चौथे का अविष्कार आपने किया है क्या? वह यह

सुनकर कहती हैं की मैंने नहीं किया परन्तु वह भी सृष्टि से प्रारंभ से होता आया है, वही मैं हूं इंसान यह कहकर वह चुप हो गई। इस कहानी के माध्यम से यह भी पता चलता है कि हम सभी इस समाज में रहते हुए भी एक दूसरे को किस दृष्टि से परखते हैं यह दिखाई देते हैं।

चंद्रेश छतलानी – हिजड़ा चरित्र

इस कहानी में नेताएँ किन्नरों के नाम से वोट को कैसे खरीदते हैं यह दर्शाया है। वह उम्मीद जता रहा है कि वह सब करेगा जैसे कि वह दो वर्ष पूर्व लोगों ने अपने वोट देकर जनता के शासन की रक्षा की थी, उसी तरह अब भी उसे ही वोट देने के लिए मिन्नते कर रहा था। नेताजी मंच से कह रहे थे कि किन्नर विकास सम्मेलन के आयोजन का उद्देश भी यही है कि उनके प्रमुख नेता सभी को संबोधित करें और इस विकास कार्यक्रमों की रूपरेखा बतायें। तो सम्मेलन से स्वर उभरता है कि " लेकिन दो वर्ष पूर्व के सम्मेलन में जो वादे किए गए थे, उनको पूरा कौन करेगा? सामाजिक और आर्थिक स्तर की बात तब भी की गई थी, उसे क्रियान्वित ही नहीं किया गया। हम तो आज भी.."[1] थोड़ी देर बाद फिर किन्नर की गुरु नेताजी को अपने दल में शामिल हो जाने के लिए कहती हैं ताकि वह भी कम से कम सत्य को विकसित हो पाएंगे। इस कहानी में उनके नामों का कैसे फ़ायदा उठाकर भ्रष्टाचार, दलाली करते हैं यह बताया गया है।

सांझा दुःख– डॉ० लता अग्रवाल

सुचित्रा के घर में तीसरा जेंडर शिशु का जन्म होने पर किन्नर समाज के लोग उसे देखने के लिए उसके घर पहुंचे। सुचित्रा तैश में उनसे मिली, और उन्होंने पूछा कि कौन है। किन्नरों ने बताया कि वह उनकी बिरादरी के हैं और उनका अधिकार है कि वे बच्चे को देखें। सुचित्रा ने उनसे पूछा

कि उन्हें उस अधिकार कैसे मिला। किन्नरों ने बताया कि उन्हें बरसों से ऐसा अधिकार मिला है। सुचित्रा ने उनसे पूछा कि उनकी बच्चे की सुरक्षा के लिए उनकी क्या योजना है। किन्नरों ने उत्तर दिया कि वे बच्चे को सुरक्षित रखेंगे और उसे सम्पूर्ण संबल देंगे। इसके बाद, किन्नरों ने बच्चे को देखने के लिए एक सौ रुपये का नोट उसार किया और वहाँ से चले गए। इसके बाद, सुचित्रा ने अपने बच्चे को सुरक्षित और स्वतंत्र जीवन देने का निर्णय लिया। यह कहानी अधिकारों के पक्ष में समाजिक विरोध को दिखाती है। किन्नर समुदाय के लोगों को समाज में अपने अधिकारों की मांग करना पड़ता है, और इसके लिए वे संघर्ष करते हैं। वे अपने अधिकारों की समर्थन की मांग करते हैं, जैसा कि वे बच्चे को देखने के लिए अधिकार का उपयोग करने के लिए किया। इससे सामाजिक विरोध और असमानता का प्रतिबिम्ब प्रकट होता है, जो उन्हें अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करने पर मजबूर करता है

गृहप्रवेश – मिथिलेश दीक्षित

इस कहानी में, चाँदनी एक नए घर के निर्माण के अवसर पर अपने पड़ोसियों और रिश्तेदारों को नाचने और गाने के लिए आमंत्रित करती है। इसके साथ ही, उसे हवन की प्रक्रिया भी सम्पन्न करनी होती है। इस उत्सव में उसके ज्यादातर साथी महिलाएँ उसके साथ होती हैं। चाँदनी ने धार्मिक आयोजन के दौरान शालिनी से पैसे, साड़ियाँ और फल-मिठाई की मांग की, जो कि उसके अपेक्षाओं से अधिक थी। इस पर शालिनी की चिंता और आशंका बढ़ गई क्योंकि वह ऐसी धनादेश को पूरा नहीं कर सकती थीं। कहानी में एक बुजुर्ग महिला उसे समझाती है कि शालिनी की स्थिति के बारे में ध्यान रखना चाहिए, जो कि दोनों छोटे भाइयों की जिम्मेदारी और

पिता के ना रहने के बाद अधिक विकट हो गई है। इसके बावजूद, चाँदनी इस सलाह को नजरअंदाज करती है और अपने कर्ज और संघर्षों की ध्यान में नहीं रखती। अंत में, चाँदनी शालिनी को अपने हाथों की मेहनत को एक शुभ योग्यता के रूप में देखती है "बहन, तुम मेरे हाथ पर शगुन के ग्यारह रुपये रख दो। एक रुमाल, दो फल और हवन वाला थोड़ा-सा प्रसाद भी, भगवान तुम्हारे सभी काम पूरे करें"[1] और उसे आशीर्वाद देती है। शालिनी, जो उसके आशीर्वाद को स्वीकार करती है, अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए आशा करती है। इस कहानी में, समाजिक समर्थन, धर्म, और सहानुभूति की भावना साझा की गई है। यह भी दिखाता है कि अक्सर हमारी मदद और सहानुभूति के भावनात्मक महत्व हमारे जीवन में कैसे महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

इस कहानी में, समाज में अधिकारों की असमान वितरण की समस्या है। चाँदनी ने अपने घर के नए उत्सव में धन, आशीर्वाद, और सामाजिक स्थान के लिए अधिकारों की अपेक्षा की, जिससे उसकी पड़ोसियों और रिश्तेदारों को समस्याएं उत्पन्न हुईं। यह समस्या समाज में सामाजिक समर्थन की कमी और समाज में अधिकारों की अधिकता के प्रति लोगों की अधिक चाह की एक प्रतिक्रिया है।

मुक्ति – विभा रश्मि

किन्नर सम्मेलन में हिना, मौना, और लक्ष्मी की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। इन तीनों ने एक महत्वपूर्ण और साहसिक कदम उठाया है जिससे समाज में जातिवाद और अत्याचार के खिलाफ लड़ाई में महत्वपूर्ण योगदान दिया गया है।इन समस्याओं का समाधान किन्नरों द्वारा किया गया है, जिन्होंने समाज में संजीवनी बूटी का काम किया है, गरीबों की मदद की है, और

उन्हें उनके अधिकारों की सुरक्षा दिलाई है। इस कहानी में एक समाजिक संदेश है कि हर व्यक्ति को समाज में उसकी अहमियत और समानता के साथ स्वीकार किया जाना चाहिए। उन्होंने बच्चों की तस्करी को रोकने के लिए नेक काम किया है जिससे बच्चों को अधिकार, स्वतंत्रता, और सम्मान का अधिकार मिला है। उन्होंने गरीबी के खिलाफ लड़ाई में अपना योगदान दिया और उन्हें समाज में शामिल करने के लिए उनका एकमात्र विकल्प नहीं रहा। उनका काम समाज के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने सिर्फ खुद के हित की सोचने की बजाय समाज के हित में अपना सबकुछ बलिदान किया। उनका कार्य न केवल गरीबी और उत्पीड़न के खिलाफ है बल्कि भ्रष्टाचार के खिलाफ भी जो एक समाज को अधिक विकसित और संवृद्ध बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, उनके कार्य ने जातिवाद और सामाजिक असमानता के खिलाफ एक महत्वपूर्ण संदेश भी दिया है कि हर व्यक्ति के पास समाज में अपने अधिकारों की सुरक्षा और समानता होनी चाहिए।

इस कहानी में समाज में अधिकारों के विरोध का विस्तृत चित्रण किया गया है। किन्नर समुदाय के सदस्यों को समाज में उनके अधिकारों की सुरक्षा और समानता की मांग करना पड़ता है, लेकिन उन्हें यह प्राप्त नहीं होती है। उन्हें अक्सर समाज द्वारा अधिकारों से वंचित किया जाता है, जो उन्हें सामाजिक और आर्थिक रूप से पीछे धकेलता है। इसके अलावा, वहाँ दिखाई गई अत्याचार, असमानता, और जातिवाद भी अधिकारों के विरोध का उदाहरण है।

सन्नाटा – सुषमा भंडारी

यह अंश एक सोसायटी के गेट पर हुए घटनाक्रम को दर्शाता है, जहां एक व्यक्ति से उसके आगंतुकों की पहचान के लिए सवाल किए जाते हैं यह अंश एक संयमित और भेदभावपूर्ण समाज में स्थिति को प्रकट करता है। गार्ड द्वारा किन्नरों को सोसायटी में प्रवेश के लिए मना कर दिया जाता है, जिससे स्पष्ट होता है कि समाज में उनका समावेश अस्वीकृत है। इस बात से एक किन्नर व्यक्ति आत्मसमर्थन और समाज में समानता के लिए उठ खड़ता है, जब उन्होंने पूछा कि अगर उनका अस्तित्व स्वीकार किया जाता है, तो उन्हें समाज के अंदर क्यों नहीं आने दिया जाता। यह प्रश्न समाज के भेदभाव और सामाजिक असमानता को उजागर करता है और सोसायटी में विशेष रूप से मानवाधिकारों और उत्पीड़न के खिलाफ लड़ाई की आवश्यकता को संजीवित करता है। इस प्रसंग में, विचार करने के लिए अवसर प्रस्तुत किया जाता है कि समाज को उपेक्षा और अवसाद से बाहर निकालकर समानता और न्याय के मानकों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

रुदन –जगदीश राय कुलरिया

यह किस्सा एक युवक की कठिनाईयों और सामाजिक दुर्भाग्य को दर्शाता है, जो अपने जीवन में सामाजिक और मानसिक प्रतिबंधों का सामना कर रहा है। उसकी आवाज द्वारा वह अपने भ्रष्ट समाजिक परिस्थितियों के विषय में अपनी चिंताओं को व्यक्त करता है। वह अपने अज्ञात और अधोगतित स्थिति में समाज की भावनाओं और धार्मिक आदर्शों के प्रति आपत्ति दिखाता है। युवा व्यक्ति के अनुभव समाज में लिंग, सामाजिक स्थिति, और रूप के आधार पर भेदभाव की चुनौतियों को जानने की आवश्यकता को दर्शाते हैं। यह कहानी सामाजिक असमानता, मानसिक

चुनौतियों, और आत्म-सम्मान की महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। युवक के विचार और अनुभवों के माध्यम से, हमें समाज के अन्यायों और उसके बाध्यताओं का अनुभव होता है। वह अपने दर्द को साझा करके अपने साथियों को और उनके साथ जुड़ता है, जो उनकी स्थिति को समझते हैं। यह कहानी हमें यह बताती है कि समाज में न्याय और समानता की कमी से कैसे किसी व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है। युवक के विचार और अनुभव हमें समझाते हैं कि कैसे एक व्यक्ति को समाजिक दबाव और विवादों से निकलने के लिए अपने आप को मजबूर कर दिया जाता है।

इस कहानी के माध्यम से हमें यह भी याद दिलाया जाता है कि हर व्यक्ति को समाज के अन्यायों के खिलाफ आवाज उठाने और अपने हक की रक्षा करने का साहस दिखाना चाहिए। युवक ने अपनी आवाज को सुनाने के लिए साहस और साहस दिखाया, जिससे हमें यह सिखने को मिलता है कि हमें अपने मूल्यों और धार्मिकता के लिए खड़े होना चाहिए।

संदर्भ –सूची

1. घोटड़ डॉ॰ रामकुमार, अग्रवाल डॉ॰ लता, किन्नर समाज की लघुकथाएं, साहित्य चंद्रिका, जयपुर, 2019, पृ॰128
2. वही, पृ॰128
3. वही, पृ॰128
4. वही, पृ॰ 51
5. वही, पृ॰ 51
6. वही, पृ॰ 43
7. वही, पृ॰ 43
8. वही, पृ॰ 115
9. वही, पृ॰ 115

चतुर्थ अध्याय – भाषा शैली

चतुर्थ अध्याय : भाषा शैली

4.1भाषा शैली

भाषा-शैली एक व्यक्ति या लेखक के वाणी के विशेष ढंग को वर्णित करती है। यह व्यक्ति के भाषा के रूप, विशेषताएं, और अंदाज को परिभाषित करता है, जो उसकी सोच और व्यक्तित्व को दर्शाता है। भाषा-शैली के अंतर्गत, व्यक्ति अपनी भाषा को उपयोग करने का ढंग, शब्दों का चयन, वाक्य संरचना, अवधारणाओं का प्रस्तुतिकरण, और भाषा के अन्य संज्ञान को प्रदर्शित करता है। भाषा-शैली का विकास व्यक्ति के शैली, शिक्षा, सामाजिक परिस्थितियाँ, और सांस्कृतिक प्रभावों पर निर्भर करता है। यह उनकी विशेष व्यक्तित्व और भाषा के माध्यम से संदेश को प्रस्तुत करने का एक माध्यम होता है। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति विनोदी और विवेकपूर्ण भाषा का उपयोग कर सकता है, जबकि दूसरे व्यक्ति को गंभीर और शास्त्रीय भाषा का उपयोग करना पसंद हो सकता है। भाषा-शैली विवेकी और प्रभावी भाषा प्रयोग को प्रोत्साहित करती है, जो समाज में विचारों और विचारों को प्रभावी रूप से साझा करने का माध्यम बनता है।

जैसे – **इंसानियत** इस लगुकथा की भाषा शैली उत्कृष्ट है और सामान्य लोगों को समझने में आसानी प्रदान करती है। वाक्यांशों में सरलता और संक्षेप है, जिससे पाठकों को बात समझने में कोई कठिनाई नहीं होती। भाषा में संवेदनशीलता को बनाए रखने के लिए सम्मानजनक शब्दों का उपयोग किया गया है। वहाँ कई सारे साधारण उदाहरण उपयोग किए गए हैं जो विशेष रूप से सामाजिक संदेश को समझाने में मदद करते हैं।

नयी मां – यह लघुकथा में एक आधुनिक और संवेदनशील भाषा शैली में लिखी गई है, जो सामाजिक और मानवीय मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करती है। इस लघुकथा में सीधी और साफ़ भाषा का प्रयोग किया गया है, जिससे पाठकों को कहानी के मूख्य संदेश को समझने में सहायता मिलती है। व्यक्तिगत संवेदना और अभिव्यक्ति के लिए वाक्य विन्यास और उपयुक्त शब्दों का चयन किया गया है। इस भाषा शैली में, बच्ची की भावनाओं और सोच को विविधता से प्रकट किया गया है, जिससे पाठकों को उसकी दुःखद परिस्थिति को समझने में सहायता मिलती है।

बरगद की छाँव– इस कहानी में पत्र शैली का उपयोग किया गया है। इस पत्र में एक संवेदनशील और भावुक भाषा-शैली का उपयोग किया गया है। बेटी ने अपने पिता के प्रति अपनी भावनाओं को साझा करने के लिए उदाहरणों के माध्यम से उसके साथ उसके जीवन की यात्रा की प्रारंभिक यादें साझा की हैं। उसने अपने पिता को अपने भविष्य की योजनाओं के बारे में बताया है और उन्हें अपने साथ रहने की भी अपील की है। इस भावनात्मक और प्रेरणादायक पत्र के माध्यम से, बेटी ने अपने पिता के प्रति अपनी गहरी प्रेम और संवेदनशीलता का प्रदर्शन किया है। यह भाषा-शैली बेटी की भावनाओं को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करने में मदद करती है और पाठक को बेटी के संदेश को समझने में मदद करती है।

उपहास – शांता किन्नर की कहानी की भाषा एक प्रेरणादायक और संवेदनशील दृष्टिकोण से है। कहानी में समाजिक समस्याओं, असमानता के मुद्दों, और साहसिकता के विषयों को विवरण में उठाया गया है। भाषा में गहराई और भावनाओं का समावेश है, जो पाठक को कहानी में संबंधित और जुड़ा हुआ महसूस कराता है। साथ ही, कहानी की भाषा में सरलता और सहजता

है, जो पाठक को कहानी के मुख्य संदेश को समझने में मदद करती है। व्यक्तिगत अनुभवों और भावनाओं को साझा करते हुए, कहानी उसके साथ जुड़ने का एक माध्यम बनती है। इस रूप में, कहानी की भाषा में सामाजिक संदेशों को प्रस्तुत करने के लिए साहसिक और संवेदनशील भाषा का उपयोग किया गया है।

नरपिशाच– इस कहानी में उजागर होने वाले संवादों का भाषाई और भावनात्मक रूप से प्रभावी उपयोग किया गया है। प्रमुख पात्रों के बीच व्यक्तिगत और सामाजिक संवादों के माध्यम से, लेखक ने उनकी भावनाओं, संघर्षों, और प्रतिबद्धताओं को विवरणशीलता से प्रस्तुत किया है। संगीता के चरित्र के भाषा में गहराई और संवेदनशीलता का प्रतिनिधित्व किया गया है, जो उसके संघर्षों और उसके भावनात्मक स्थिति को समझने में पाठकों को मदद करता है। उसके बच्चे की रक्षा के लिए उसकी जीवन की चुनौतियों का विवरण भाषा में उजागर किया गया है, जो पाठकों को उसके अंदर के जज्बाती दृश्य को समझने में मदद करता है। साथ ही, इस कहानी में समाजिक मुद्दों को भी व्यक्त करने के लिए भाषा का उपयोग किया गया है। महिलाओं के सामाजिक स्थान और उनके अधिकारों की विविधता, समाज के परंपरागत धार्मिक मान्यताओं के साथ, इस कहानी में विचार किए गए मुद्दों में भाषा का उपयोग किया गया है। इस प्रकार, इस कहानी में भाषा का उपयोग पाठकों को कहानी के मूल विचारों और भावनाओं को समझने में मदद करता है।

हॉट हॉट –जितेन्द्र कुमार गुप्ता – यह कहानी उर्दू और हिंदी की शैली में लिखी गई है। भाषा का उपयोग बहुत ही संवेदनशील और साहित्यिक है, जो पाठक को कहानी में गहराई और संवाद का अनुभव कराता है। वाक्य रचना में भाषा के साथ विविधता और गहराई का उपयोग किया गया है, जो पाठक को किसी घटना के अनुभव का महसूस कराता है। विविध साहित्यिक उपकरणों का प्रयोग किया गया है, जैसे कि अलंकार, अनुप्रास और अन्य शैलीय उपकरण, जो कहानी को रूचिकर बनाते हैं। इसके अलावा, उदाहरणों का प्रयोग किया गया है ताकि पाठकों को विभिन्न संदर्भों में सामाजिक और मानवीय परिदृश्यों को समझने में मदद मिल सके। इस भाषा शैली में, विभिन्न चरित्रों के भावनात्मक संवादों को विवरण किया गया है, जो कहानी के माध्यम से पढ़ने वालों को उनके साथ जोड़ता है। इस भाषा शैली के माध्यम से, लेखक ने साहित्यिक उत्कृष्टता को बढ़ावा दिया है और पाठकों को एक साथ वास्तविकता के साथ जोड़ा है।

फजीहत – यह कहानी विशेषकर भाषा और शैली के प्रयोग के माध्यम से समाज में उपस्थित भेदभाव और अन्याय को प्रकट करती है। व्यक्तियों के भाषाई के माध्यम से कथा की गहराई और उसका संदेश प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। वाक्यांशों में भाषा का उपयोग, व्याकरण, और संज्ञानात्मक रूप से भविष्य की घटनाओं को समझाने में मदद करता है। इसके साथ ही, उपकथाओं और पात्रों के विविध भावों को रूप से प्रस्तुत किया गया है, जो पाठकों को कहानी की गहराई में ले जाता है।

असली हिजड़े – कथा में बातचीत और कार्यवाही की भाषा काफी सामान्य दर्शाया गया है। व्यक्तियों के भाषाई अभिव्यक्ति में सरलता और उत्साह है। सुरेश और उनके परिवार के बीच वार्ता

और संबंध उदार और समझदारी से होते हैं। सुरेश ने उनके परिवार को समर्थन दिया और उनके साथ समझदारी और सम्मान से व्यवहार किया। इसके विपरीत, वे जो उन्हें हिजड़े के रूप में निर्धारित करते हैं, उनकी भाषा उग्र और असंवेदनशील है, जो सामाजिक असमानता और असहमति को प्रकट करती है। और पाठक को कहानी में संबंधितता और सामाजिक परिवेश का अनुभव कराता है।

मर्दानगी –सुधीर कुशवाह – इस कहानी की भाषा उचित और सादगी से भरी हुई है। पाठ में प्रयुक्त शब्दों और वाक्यों का चयन सामान्य भाषा से किया गया है, जिससे पाठकों को कहानी की सामग्री को समझने में सुविधा होती है। व्यक्तिगत और सामाजिक संघर्ष को व्यक्त करने के लिए समान्य और साधारण शब्दों का उपयोग किया गया है जो पाठकों के दिलों तक सीधे पहुंचता है। वाक्य संरचना सरल और सहज है, जो पाठकों को कहानी के प्रत्येक पल का मनोवैज्ञानिक अनुभव करने में मदद करती है। इस तरह, भाषा शैली का उपयोग कहानी की प्रभावी रचना में सहायक होता है और पाठकों को समय के साथ संघर्ष के साथ संबंधित गहराई में समझाने में सहायक होता है।

बड़ी बहन – शोभना श्याम – इस कहानी की भाषा शैली गली मुहल्ले की सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण को प्रतिबिंबित करती है। यहाँ परिवार के सदस्यों के बीच तुलना, परंपराओं की महत्वता और व्यक्तिगत संबंधों की महत्वपूर्णता को समझाने के लिए साधारण भाषा का प्रयोग किया गया है। वाक्यांशों में स्थानीय उत्साहपूर्ण व्यक्तिगत विवरणों, और संवादों की सामान्यता दिखाई गई है। इससे पढ़ने वाले को कथा में सहजता और आसानी महसूस होती है।

नया प्रयोग – यह कहानी एक साहसिक और समाज सुधारक किन्नर नामक चरित्र के जीवन का वर्णन करती है। निशा, जो किन्नरों के समुदाय से है, नौकरी पाने के लिए लम्बे संघर्ष के बावजूद अपने लक्ष्य को हासिल करती है। उसकी साहसिकता और आत्मविश्वास को देखते हुए, उसे किसी भी समस्या का सामना करने की क्षमता होती है। कहानी में किन्नर समाज के जीवन की वास्तविकता को समझाने के लिए संवेदनशीलता से भरी भाषा का उपयोग किया गया है। पाठकों को किन्नर समाज की समस्याओं और उनके संघर्षों की समझ में मदद मिलती है। इस उपन्यास में चरित्रों के भावनात्मक अनुभवों को विस्तार से व्यक्त किया गया है, जो पाठकों को उनकी जीवनी में संबद्ध करता है।

वृहनलाल – कहानी की भाषा शैली में सामान्य और भावुक अभिव्यक्तियों का मिश्रण है, जो रोजमर्रा की बोलचाल की भाषा को दर्शाता है और पात्रों की भावनाओं को व्यक्त करता है। यह कहानी की समाजिक और सांस्कृतिक वातावरण की महत्वपूर्णता को दर्शाते हैं। कुल मिलाकर, कहानी की भाषा शैली संवेदनशीलता और सामाजिक परिस्थितियों के साथ मेल खाती है, जिससे पाठकों को यह जोड़ती है और प्रभावी बनाती है।

हिजड़ों की बस्ती – इस कहानी की भाषा शैली बोलचाल की भाषा का प्रयोग करती है, जिससे पाठकों को पात्रों के भावों और वातावरण की महसूसी होती है। भाषा में साधारण शब्दों का प्रयोग किया गया है, जिससे पाठकों को अधिकतर सामाजिक और सांस्कृतिक संदेशों को समझने में आसानी हो।

रक्षा कवच –यह कहानी उत्तर भारतीय भाषा और भाषा शैली का प्रयोग करती है। वार्तालापीय भाषा और संवाद के माध्यम से कहानी के पात्रों के विचार और भावों को प्रकट किया जाता है। भाषा में गाली गलौज और संवादों के माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्यों का विवरण किया गया है, जिससे पाठकों को उन समस्याओं का समझावा मिलता है जिनसे समाज का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा, पात्रों के भाषाई रूप और विशेषताओं के माध्यम से उनके व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया गया है।

किन्नर डॉट कॉम –यह कहानी सामान्य बोलचाल की भाषा में लिखी गई है, जिसमें संवादों का प्रयोग किया गया है। वाक्यांशों में साधारण व्यक्तित्वों के भाव और भाषा का प्रयोग किया गया है, जिससे पाठकों को कहानी को समझने में आसानी होती है।

4.2 फ़ारसी शब्द

याद, शादी, दुकान, बदन, खुश, बदनाम, मकान, जिंदगी, मेहनत, साल, लेकिन, कागज़, बच्चा, ईमानदार, रंग, पजामा, चेहरा, निगाह, मर्द, आबरू, आईना, आवाज, आबल, किताब, बदनाम, चश्मा, खूब, दरवाजा, कद, सिक्का, गंदा, बेहद, खामोश, दिल, खुद, आदमी, उम्मीद, गरम, जिंदगी, रोगन, दीवार, मुर्दा गल्ला आदि।

4.3 अरबी शब्द

दुआ, बेअसर, जिद, फैसला, हिम्मत, मुसलमान, तजुर्बा, वारिस, अजीब, तरफ़, किस्सा, कुर्सी, ईनाम, कसूर, कसम, औरत, तारीख, माहौल, अजब, जवाब, फ़ायदा, हिम्मत, कुसूर,

मजबूर, मुकदमा , मालूम, मुसाफ़िर, फर्ज, ख़राब, तमाशा, खयाल, मशहूर, मदद, इलाज, कसर, कत्ल, अल्लाह, कसम, साफ़, शराब, हरामी, गरीब, मालिक, जिस्म।

4.3 अंग्रेज़ी शब्द

फ़ोन, अस्पताल, टीप–टॉप, हिरोईन, आंटी, केक, क्यूट, क्रीम, पाउडर, एनजीओ, आई – कैम्प, ट्रॉली, हॉर्न, ऑपरेशन, थिएटर, हैवी लहंगा, ऑटो, ड्रेसिंग, थर्ड जेंडर, स्टाइल, लाइन, फ्रेक्चर, ब्लाउज, कार, आई ए.एस, बोतल, सील, फ़जर शॉर्ट सर्किट, टिकट, प्रॉब्लम, कंपनी, बिजनेस, कोर्ट, गॉड फादर, टैक्सी, सीट, सी. वी, मिस, पी. एच. डी.इन केमेस्ट्री, गोल्ड , मडिलिस्ट, नो एक्सपीरियंस, जेंडर, ऑफिस, मे ई कम इन सर, यस प्लीज, वैक्सिंग, केबिन,वैक्सिंग, केबिन, नेलपॉलिश, क्वालिफिकेशन, न्यूट्रल, असिस्टेंट, मैनेजर, पोस्ट, हार्डवर्क, नर्स, लेबर रूम, सेक्स, वेटर, ऑप्शन, टेबल, केस, जज, टाइप, शैल्फ, डॉक्टर, प्रोफ़ेसर, साइबेरिया, उफ गॉड गॉयनोकॉलाजिस्ट, चेम्बर, डिलीवरी, फॉर्म, प्लेटफार्म, हॉल, लेडी, स्टाफ रूम, ड्रेस , एंट्रेंस, हाईएस्ट, मार्क्स, चेकअप, कॉलेज, सर्कस, क्लास, प्रोफेसर, प्रिंसिपल, फोटो, फ़ोन, स्कूल, कर्फ्यू, बैण्ड, हॉट –हॉट, गेट , ड्राइंग, कॉफी, इंटरकॉम, मैसेस ,चैनल, लेपटॉप, वीडियो , आई. ए. एस, मेरिट लिस्ट , स्टेशन , बैंच, हैलो , पीजीआई , हॉस्पिटल , मेयर, मीडिया, मैडम जी, इंस्पेक्टर, बेबी, डेट , मेडिकल टेस्ट, अनफिट, कंपार्टमेंट , टिकट, प्लीज, चेकिंग, एक्स्ट्रा, हॉस्टल, विजिटिंग कार्ड, स्टैंड, टेक्सी, राउंड, कॉलोनी, एण्ड, स्कूटी, फर्स्ट क्लास, बाथरूम , एडॉप्ट , एन.जी.ओ, बायपास, रोड।

4.4 रावड़ी भाषा

" हाय–हाय दे देना नखरे मत दिखा, और चिकने सोने का नाटक मत कर, जोड़ी सलामत रहे, बच्चे जिये।"[1]

" जोंक है साले खून चूसकर ही मानेंगे "[2]

"बेईमान साली मेरा रेट गिराती है अभी S–3,4,,5,6 में जाएगी नहीं क्या…?[3]

" ऐ… कर दे थोड़ी जेब ढीली…दाता तेरी झोली भरी रखेगा।.. दे.. बाबू जरा दस रुपए दे..।[4]

"ए चिकने… कुछ जेब खाली कर न… [5]

" चिकने…एक अकेली औरत के साथ जबरदस्ती करने पर तू अपने आपको मर्द समझता है…अरे मर्द तो वो होता है जो उसकी हिफ़ाज़त करे… बहुत मर्दानगी है न तुझमें.. आ लड़ मेरे से…"[6]

"क्या बे, लड़की छेड़ेगा? चल छेड़ न!!"[7]

" हाय रे, दय्या ! जीजी, इस हिजड़ी को तो देखो! जे तो मरदों के भी कान काटे हैं!"[8]

" दे…अरे ओ चिकने…सुगन दे…।"[9]

"ऊपर आऊँगी तो तुम्हारी बीबी क्या करेगी भेरुए।….तब तू मुझे रखेगा क्या?"[10]

" अबे! मुझे रण्डी समझता है क्या…अपनी बीबी को कोठे पर बैठा दे। मैं भी मुजरा सुनने आ जाऊंगी…और सुन तेरी बीबी को इसका वीडियो क्लिप भेज दूंगी।"[11]

“आंख किसको दिखाता है चिकने!”[12]

4.5 भोजपुरी भाषा

“ हे प्रभु ये दिन दिखाने से पहिले हमें आपन तीर बुलाये लेत त नीक रहत।”[1]

“ ई पुरब जनम का पाप होई हैं जो इ जनम मा विधना या मेर दुख दिखाये।” [2]

“ या हमर संग रही त हम टोला पड़ोस मा का मुंह दिखाउब।”[3]

“अरे ताई! आइसन काहे जइहो ……. लेओ म्हों मीठो करौ?”[4]

“कल कौ हम न हाठ जएन और तुम सबन का लाने लड्डू लइहैं…सच्ची।”[5]

“ हम का पहने.. का करै.. कहाँ जइहें … सब कुछ तुम्हारी मर्जी से हुईये.. बच्चा भी.. मोढ़ी न, मोढ़ा होय यहाँ तक तो हम सहेन किये रहे.. अब हम किन्नर कौ जन्म देकर ऐसे मरबा न सकत…. मां हैं हम मां….!”[6]

“अरी ससुरी! इस तमाशे को जनम देते है और जुबान लड़ात है रुक जा अबैहै…”[7]

मुहावरे

“आय! हाय! बेटा बन गया दूल्हा, ले आया दुल्हन, दूधो नहाओ, पूतों फलों…”[8]

निष्कर्ष

भाषाशैली के बारे में अधिक विस्तार करते हुए, हम देख सकते हैं कि यह एक विशेष रूप से व्यक्तिगतता, साहित्यिक और सांस्कृतिक परिचय, समाजिक और सांस्कृतिक परिवेश, और लेखक की उद्दीपना पर आधारित होती है।

भाषाशैली के माध्यम से, लेखक अपने पाठकों को अपनी सोच, विचार और भावनाओं को समझने में मदद करता है। एक श्रेष्ठ भाषाशैली न केवल लेखक की पहचान बनती है, बल्कि उसकी कल्पना और संवाद क्षमता को भी प्रभावित करती है। अच्छी भाषाशैली का प्रयोग न केवल साहित्यिक कामों में होता है, बल्कि इसका महत्व व्यापक रूप से संचार के हर क्षेत्र में होता है। संवाद, व्याख्या, विवरण, और विचारों को प्रस्तुत करने का तरीका सभी के बीच संचार को समझने में मदद करता है। अंत में, भाषाशैली का महत्व उसकी सामाजिक, सांस्कृतिक, और साहित्यिक मूल्य की प्रकट करता है, और इसके माध्यम से हम लेखक के दर्शन और दृष्टिकोण को समझ पाते हैं। इसलिए, एक अच्छी भाषाशैली हमारे संचार को अधिक प्रभावशाली और सहज बनाती है, जिससे हमारी सोच और विचारधारा को समृद्धि मिलती है।

संदर्भ –सूची

1.घोटड़ डॉ॰ रामकुमार, अग्रवाल डॉ॰ लता, किन्नर समाज की लघुकथाएं, साहित्य चंद्रिका,जयपुर, 2019, पृ 48

2. वही पृ॰78

3. वही पृ॰69

4. वही पृ॰74

5. वही पृ॰78

6. वही पृ॰78

7. वही पृ॰78

8. वही पृ॰78

9 . वही पृ॰78

10 . वही पृ॰79

11. वही पृ॰92

12. वही पृ॰92

13. वही पृ॰92

14.वही पृ०87

15 .वही पृ०84

16. वही पृ०84

17 .वही पृ०95

18. वही पृ०95

19 .वही पृ०93

20 .वही पृ०93

21 .वही पृ०87

22. वही पृ०87

23 .वही पृ०92

24. वही पृ०100

25. वही पृ०100

26. वही पृ०100

27. वही पृ०100

27. वही पृ०103

28. वही पृ०108

29. वही पृ०108

30. वही पृ०84

31. वही पृ०84

32. वही पृ०84

33. वही पृ०103

34.वही पृ०118

35.वही पृ०119

36.वही पृ०114

37. वही पृ०120

38.वही पृ०116

39.वही पृ०120

40.वही पृ०120

उपसंहार

तृतीय लिंग एक महत्वपूर्ण और विवादास्पद विषय है जो समाज में व्यापक चर्चा का विषय बनता रहा है। इस विषय पर चर्चा करते समय, हमें सामाजिक, धार्मिक, और कानूनी प्रणालियों के विभिन्न पहलुओं को समझने की आवश्यकता होती है। तीसरे लिंग के व्यक्तियों को समाज में सम्मान, समर्थन, और समानता का अधिकार होना चाहिए। वे भी अपने जीवन में स्वतंत्रता, अधिकार, और सुरक्षा का अधिकार रखते हैं। इस विषय पर विचार करते समय, हमें तीसरे लिंग के व्यक्तियों के साथ समझौता करने, समरसता बढ़ाने, और उनके अधिकारों को समर्थन करने के लिए कदम उठाने की आवश्यकता होती है। इसके लिए, सामाजिक संरचना में बदलाव, जागरूकता, और शिक्षा के माध्यम से जनता को जागरूक करने की आवश्यकता है। इसके अलावा, सार्वजनिक स्तर पर कड़ी कानूनी प्रणालियों और नीतियों का अनुपालन करने की भी आवश्यकता है ताकि समाज में समानता और समरसता की भावना स्थापित हो सके।

समाज में तीसरे लिंग के व्यक्तियों के साथ उनके अधिकारों की समझ और समर्थन की गई तो उन्हें अपनी ज़िंदगी को बेहतर बनाने का मौका मिल सकता है, और समाज में सामरिकता और सहिष्णुता का माहौल बढ़ सकता है।

किन्नर समाज की लघुकथाएँ लघुकथा संग्रह तथाकथित समुदाय पर लिखी गई 151 लघु कथाओं का संग्रह है। संपादक राजकुमार घोटड़ प्रसिद्ध लघु कथाकार है। अब तक इनके संग्रह में 15 एकल लघुकथा संग्रह तथा 18 संपादित ग्रंथ जुड़े हैं। प्रस्तुत संग्रह में भी इनकी 'यह भारत है', 'कुदरत का तोहफा', 'तिलस्मी शरीर', 'फिर से मत आना' तथा 'अपनी-अपनी

जिंदगी' नाम से पाँच लघुकथाएँ संकलित है, जो समुदाय विशेष को लेकर नाक मुँह सिकोड़ने वाले लोगों पर व्यंग करती है।

लता अग्रवाल संग्रह की सहायक संपादक होने के साथ ही साथ महिला साहित्यकारों में अग्रणी स्थान भी रखती है। संग्रह में इनकी दस लघुकथाएँ 'दहलीज का दर्द', 'बिखरा दर्पण', 'वसूली', 'नजराना', 'सांझा दुःख', 'लैंगिक विकलांगता', 'पेट की आग', 'बृहन्नला', 'हिजड़ों की बस्ती', 'रक्षा कवच', 'देवीय अवतार', 'औलाद का सुख' तथा 'अनाथ' शीर्षक से संगृहीत है। लघु कथाओं में किन्नरों की व्यवस्था तथा सामान्य बच्चों की तरह पैदा ना हो पाने का मलाल है। अपने किन्नर रूप के स्थान पर यदि यह भी सामान्य बालकों की तरह पैदा होते तो इन्हें भी समाज से अलग माता-पिता द्वारा त्याज्य जीवन जीने को विवश नहीं होना पड़ता। 'अगले जन्म मोहि...', 'बदलती सोच', 'क्योंकि', 'माँ का धर्म', 'बधाई', 'एहसास-ए-निदामत', 'दुआएँ, 'कृति-प्रकृति' आदि लघुकथाएँ पुरानी परंपरा की लीक से हटकर किन्नरों हेतु श्रम उपलब्ध कराने तथा इनके लिए नवीन संभावनाओं के द्वार खोलने के विषय को आधार बनाकर लिखी गई हैं। समय के साथ परिवर्तन लोगों की मानसिकता में भी हो रहा है। अतः किन्नर समुदाय भी मुख्यधारा में शामिल हो पा रहा है। किन्नर बालक को यदि माता-पिता अपनी सामान्य संतान के समान ही समझ कर उनकी शिक्षा-दीक्षा पर पूरी तरह से ध्यान दें, प्यार एवं सहयोग से उन्हें प्रेरित करें तो किन्नर भी देश एवं समाज के विकास में अपना योगदान दे सकते हैं। समाज और राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन कर अपनी नागरिकता का फर्ज निभा सकते हैं। इसी कथ्य को लेकर

संग्रह की 'त्याग और मानवता', 'टीस', 'बधाइयों', 'बरगद की छांव', 'भ्रांतियों', 'अधिवेशन' आदि लघु कहानियाँ रची गई हैं।

'नपुंसकता', 'बुलंद तालियाँ', 'अंत-सा प्रारंभ', 'अनोखा मीरापन', 'बस अब और नहीं', 'अधूरी माँ', 'पहचान', 'किरदार', 'नयना', 'इंसानियत की पीड़ा', 'सिर्फ माँ', किन्नर', 'उपहास', हॉट... हॉट', 'किन्नर डॉट कॉम', 'हिजड़ापन', 'प्रथा', 'धारा विरुद्ध' आदि कथाएँ अपने अधिकारों के लिए, चाहे वह घर परिवार से हो, चाहे समाज और राष्ट्र से। आगे आकर लड़ने एवं समाज की नकारात्मक सोच को बदल अपना एक मुकाम बनाने के लिए प्रयासरत संघर्षशील किन्नर पात्रों के संघर्ष की कहानियाँ है।

'वह देवता', 'रोशनी का सफर', 'लाखों में एक', 'खाने लायक', 'बड़ी बहन', 'कितने नर हैं', 'नासूर', 'नेग एवं कर्जदार', 'सक्षम', 'मर्दानगी', 'सर्कस का जोकर', 'नवजात किन्नर', 'निःस्वार्थ', 'किन्नर', 'बेटे-बेटी उधार के', 'भेद', 'एक नौकरी किन्नर को आदि लघुकथाएँ किन्नर समुदाय के परंपरागत रूप को प्रस्तुत करती हैं। इसके साथ ही साथ किन्नरों में पल रहे प्रेम एवं मातृत्व भाव को दर्शाया है। अपनी संतान के लिए माँ, माँ ही होती है। चाहे वह किन्नरी ही क्यों ना हो। संतान की सुरक्षा एवं जीवन के लिए किन्नर भी सामान्य माँओं की तरह ही संघर्षरत रहते हैं। एक किन्नर यदि संकल्प ले ले तो वह भी सामाजिक हित में अपने जीवन को लगा सकता है। फिर चाहे सामान्य जन उसके पथ में कितने ही रोडे अटकाएँ। वह इन सबको हटाता हुआ अपने कर्म पथ पर आगे बढ़ता जाता है। इसी को लेकर संग्रह में 'कहाँ हो माँ', 'हिजड़े नैना', 'हिजड़ा', 'मर्द', 'रुदन', 'सहयात्री', 'नेकी सबका अधिकार', 'चंदन', 'डरपोक हिजड़ा', 'नर

पिशाच', 'स्वावलंबी', 'वारिस', 'आधा अधूरा', 'संस्कार', 'नवोदित अंकुर' आदि कथाएँ हैं। किन्नरों को समाज की मुख्यधारा में शामिल करने के लिए मुख्यधारा के समाज में से लोगों को भी आगे बढ़कर इनका हाथ थामना आवश्यक है। किन्नरता के दर्द एवं तकलीफ को बिना समझे तथाकथित समुदाय के प्रति भावनात्मक जुड़ाव संभव नहीं है। इसी सत्य पर आधारित संग्रह की लघुकथाएँ 'गाली', 'फजीहत', 'इसी दुनिया', 'इंसान', 'बदलते समय में', 'अधिकार', 'तुमको नमन', 'औरों से बेहतर', 'नया प्रयोग', 'इसी दुनिया के' आदि लिखी है।

संदर्भ –सूची

आधार ग्रंथ

घोटड़ डॉ॰ रामकुमार, अग्रवाल डॉ॰ लता, किन्नर समाज की लघुकथाएं, साहित्य चंद्रिका,जयपुर, 2019।

सहायक ग्रंथ

2) शरद सिंह, थर्ड जेंडर विमर्श सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020 ।

3) भीष्म महेंद्र , किन्नर कथा,2014, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

4) शर्मा डॉ० बंशी राम –किन्नर लोक साहित्य

5)सरकार डी० सी० , cultural history from the Vayu Purana, 1946।

6)नेगी छेरिंग टाशी, किन्नरी सभ्यता और साहित्य (संकलन तथा हिंदी अनुवाद), दिल्ली २००५

7)भीष्म महेंद्र, किन्नर कथा, नई दिल्ली –२०११

8)https://abhivyakti.life/2019/01/12/kinnaro-ka-itihas-vartmaan-bhavishya/

9)https://youtu.be/XeLN7ccq2To?si=aHLCYJimWhSxHzoj

10)https://en.m.wikipedia.org/wiki/Hijra_(South_Asia)

11) किन्नर विमर्श –शिक्षा, समाज और साहित्य –संगीत कुमारी पासी, जैनेंद्र चौहान, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

12) अग्रवाल बलराम हिन्दी लघुकथा का मनोविज्ञान

13)संस्कृत्यायन राहुल , किन्नर देश में, किताब महल, १ जनवरी २०१३।

14) अमीन डॉ. खन्नाप्रसाद , किन्नर समाज और साहित्य, श्री. नटराज प्रकाशन –दिल्ली २०२२।

15) द्विवेदी शरद, किन्नर अबूझ रहस्यमय जीवन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,27 जुलाई 2022।

16) Teich Nicholas M., Forwarded by Green Jamison, Transgender, Columbia University press, New York, 2012.

17) नारायण प्रियंका, किन्नर सेक्स और सामाजिक स्वीकार्यता, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली 2021।

18) जैन बिमलचंद्र (1993) मानव अंक 4, अक्टूबर दिसम्बर, एथनोग्राफी एण्ड फोक कल्चर सोसाइटी, लखनऊ।

19) त्रिपाठी, न०, ल0, (2015) मै हिजड़ा मैं लक्ष्मी पब्लिकेशन वाणी प्रकाशन।

20) त्रिपाठी, न०, ल०, (2015) मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी, पब्लिकेशन वाणी प्रकाशन।

21) परमहंस, स्व०ज०स०, (1984) महाभारत पब्लिकेशन नई दिल्ली।

22) शास्त्रीय श्री, देवदत्त (2007) 'कामसूत्र' पब्लिकेशन नई दिल्ली।

23 वात्सायन कामसूत्र माग 2, अघाय 1.http://www.vatsayankamsutr.blogspot.com

24 ब्रत्तेल्ल, बी० कारोलिने (2011) "जेंडर इन कॉस कल्वरल प्रेसपेक्टीव नई दिल्ली।

25)चटर्जी, गीतांजली (2010) 'तीसरे लोग" पब्लिकेशन सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली।

26) भुराडिया, निर्मला (2014) गुलाम मंडी पब्लिकेशन सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली।

27)

28) माधव, नीरज (2017) "यमदीप" पब्लिकेशन सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली।

29) मुद्गल चित्र (2017) 'पोस्ट बॉक्स नं0203 नाला सोपारा पृ०न पब्लिकेशन सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली।

30)पी०वी०वैष्णव,(2017)जनकृति अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका वर्ष 3,अंक 30 । http://www.jankritipatrika.in

31) शर्मा सीमा (2016) 'थर्ड जेंडरः बढ़ते कदम 13 मई, अमर उजाला देहरादून।

32) 30 इंडियन 2018 ट्रांसजेंडर पीपल हु वेयर दी फर्स्ट इन दियर फील्ड एजुकेशन टुडे, www.indiantoday.in

33) ट्रांसजेंडर पीपल हू आर ब्रेकिंग बैरियर्स अकॉस फील्डस, www.shethepeople.tv

34) त्रिवेदी मीना (2018) अक्काई पद्मा़ाली ट्रांसजेंडर कार्यकर्ता, 09 सितंबर 2018 हिंदुस्तान देहरादून

35) जेतियता मंडला (2007) "जिस जगाह कभी भीख मांगी की जज हूं 9 अगस्त 2017 अमर उजाला।

36) रेवती, (2010) "ए०, टूथ अबाउट मीः ए हिजा लाइफ स्टोरी पब्लिकेशन पेंगुइन। 35 ट्रांसजेंडर इंडियन वी अब्सोल्यूटली नीड टू क्नोव अबाउट बुज्जफीड, www.buzzfeed.com

37) मिश्रा सुधा (2016-2017) "भारत में किन्नरों का सामाजिक बहिष्करणः एक समकालीन अध्ययन, पब्लिकेशन आगरा।

38) टी०जी० इशूज ब्रिफ, (2010) यू०एन०डी०, वी० सी० पी०, इंडिया।

39) सतपथ्य महेश्वर 2016 लिवेस एण्ड स्टोरिज ऑफ ट्रांसजेंडर पोपुलेशन इन इडिया, रिसोरस, डाक्यूमें ऑन सेनसिटाइजिंग हाई लेवल गर्वनमेंट स्टॉक होल ऑन टी०जी० हयूमन राइट इशूज।

40) http://www.streekal.com/2014

41) दोषी एल०एस० (2007) 'आधुनिकता उत्तर आधुनिकता एवं नव समाजशास्त्रीसिद्धांत' पृ०न0263,270, रावत पब्लिकेशन जयपुर नई दिल्ली।

42) लोबिया (2014) "बाइनरीइ जेंडर व्यवस्था को तोड़ते हुए पब्लिकेशन वाणी सुब्रामणियन।

43) बॉरा ऋतुपर्णा (2011) खुलती परते यौनिकता और हम, पब्लिकेशन वाणी निरन्तर नई दिल्ली।

44)111-पाण्डेय, गणेश, पाण्डेय अरूणा, (2011) 'राजनीतिक समाजशासत्र पब्लिकेशन राधा, नई दिल्ली।

45) मुकर्जी, नाथ, रवीन्द्र, (2011) सामाजिक विचारधारा पब्लिकेशन विवेक नई दिल्ल।

46) रेड्डी गायत्री (2005) "विथ रेस्पवेट टू सेक्स निगोटीनिंग हिजडा आइडेंटिटी इन साउथ इंडिया ऑफ हैदराबाद एण्ड सिकदंरवाद पब्लिकेशन यूनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरीका।

47) नन्दा सरेना (1999) "नाइदर मेन नॉर वूमन द हिजड़ा ऑफ इंडिया द स्टेडी ऑफ एरिया बॉम्बे, पब्लिकेशन एन इंटरनेशनल थॉमस पब्लिकेशन कम्पनी।

48) आनन्द हुसैन (2017) दी पैराडॉक्स ऑफ रिकोग्निाइजेशन हिजडा, थर्ड जेंडर एण्ड सेक्सुअल राइटस इन बंगलादेश, वॉल्यूम न० 19, अंक 12, कल्चरल हेल्थ एण्ड सेक्सुअल्टी अन इंटरनेशनल जर्नल फॉर रिसर्च, इंटर वेशन एण्ड केयर।

49) जेसिका, हेंचि (2014) ओब्सेंटी मोरल कॉटजिशन एण्ड मासकुलिनिटीः हिजड़ा इन पब्लिक स्पेस इन कोलोनियल नॉर्थ इंडिया, वॉल्यूम 38, अंक 2, पब्लिकेशन एशिई।

50) गुरविंदर कलारा एण्ड नीलेश (2014) 'दी कल्बरल साइकाइट्रिक एण्ड सेक्सुअल्टी ऑफ हिजड़ा इन इंडियां इन वॉल्यूम 14, अंक 4, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ट्रांसजेंडर पब्लिकेशन।

51) हर्लम्बोस एम० (2012) " सोशियोलोजी थीम्स एण्ड पर्सपेक्टीवस"पब्लिकेशन ऑक्सफोर्ड।

52) रिटर्ज जार्ज (2011) 120 दीपक सिहं (2015) 121 शर्मा सीमा (2016) सोशियोलोजिकल थेयोरी पब्लिकेशन नई दिल्ली। हमारे मौलिक अधिकार पब्लिकेशन वंदना नई दिल्ली। अब शैक्षणिक संस्थाओं के फार्म में होगा थर्ड जेंडर का कॉलम मई अमर उजाला देहरादून।

53) सुबोध घिल्डियल (2016) 'ट्रांसजेंडरस विल शून बी केटागरिज एस थड जेंडर "22 जुलाई टाइम नेशन।

54) स्वरूप जगदीश, (1975) हयूमन राइट्स एण्ड फण्डामेंटल फीडम , पब्लिकेशन

नई दिल्ली।

55) अग्रवाल, एच० ओ०, (1999) "हयूमन राइटस सेंट्रल लॉ पबिलीकेशन इलाहाबाद ।

56) मिश्रा कृष्ण श्याम (2016) "ट्रांसजेंडर राष्ट्रीय परिष्द पब्लिकेशन सम सामयिक घटना चक प्रकाशन।

57)मैकाइवर, आर.एम० एण्ड पेज०एच० चार्ल्स (1961) 'एन इन्ट्रोडक्टरीय सोसाइटी अनलायसीस' पब्लीकेशन रतन प्रकाशन, नई दिल्ली।

58) डेविस, किंग्सले 1981 ह्यूमन सोसाइटी, पब्लिकेशन कमला नगर दिल्ली।

59) अटल, योगेश (2015) समाजशास्त्र पृ० 98, पब्लिकेशन नई दिल्ली।

60) शर्मा, सतीश कुमार (2009) "हिजास दी लिबेल्लेड डिवियंस" पब्लिकेशन नई दिल्ली।

61) भारद्वाज, प्रवेश, (2002) किन्नर समुदाय की प्रगतिः एक समाजवैज्ञानिक अध्ययन पब्लिकेशन भार्गव भूषण प्रेस वाराणसी।

62) लौरा, इ०स०, बिम्नं, जेन्नय, (2007) "ट्रांसजेंडर हिस्ट्री इन दी यूनाइटेड स्टेटस आ स्पिसल अन ब्राईस्ड वर्णन ऑफ अ बुक चेपटर फॉम ट्रांस बॉडीज, ट्रांस सेल्वेस पब्लिकेशन यूनाइटेड स्प्रेटस।

63) पटनायक, देवदत्त, (प्र०सं०2015, द्वि०सं० 2016) " शिखण्डी और कुछ अनसुनी कहानियों पब्लिकेशन।

शब्दकोश

1– वृहद संस्कृत हिंदी शब्दकोश (सं.) वामन शिवराम आप्टे,

2– संस्कृत-हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश (सं.) उमा प्रसाद पाण्डे,

3– उर्दू हिंदी शब्दकोश (सं.) मोहम्मद मुस्तफा खा 'मददाह,

4– एडवांस लर्नर्स डिक्शनरी (स.) दिलबाग राय,